# १

यह कहानी है एक भिखारी की काली जिंदगी के बारे मे...जिसका नाम है जग्गा.. पर लोग इसे लंगड़ा जग्गा कहते हैं, क्योंकि वो अपने दाँये पैर से लंगड़ा कर चलता है, मैले -कुचेले कपड़े, घनी दाढ़ी, लंबे और उलझे हुए बाल, चेहरा बिल्कुल काला , जिसे उसने ना जाने कितने समय से धोया ही नही है..

शहर के बीचो बीच बने रेलवे स्टेशन की पटरी से लगी हुई झुग्गी झोपड़ी की कॉलोनी मे वो रहता था, महीने के १२०० देकर..दिन भर मे जो भी वो भीख माँगकर कमाता, उसकी दारू पीता , जुआ खेलता, कभी कभी वेश्याओ के पास भी जाता ....

वो पूरे दिन चिलचिलाती धूप मे, सड़कों पर, रेड लाइट पर, ऑफिसों के बाहर भीख माँगता रहता था, कोई उसको खाने के लिए देता और कोई उसको पैसे देकर उसकी मदद करता..ऐसे ही चल रही थी उसकी जिंदगी..

पर एक दिन एक हादसे ने जग्गा की जिंदगी ही बदल दी..

रात का समय था, लगभग २ बजे थे, जग्गा अपनी भीख से इकट्ठे हुए पैसों को शराब और चिकन मे उड़ा कर अपनी झोपड़ी की तरफ जा रहा था की अचानक उसने देखा की एक तेज रफ़्तार से आती हुई कार सड़क के बीचो बीच बने डिवाइडर से जा टकराई और बीच की रेलिंग तोड़ती हुई एक जगह पर जाकर रुक गयी ..

जग्गा का सारा नशा हवा हो गया..

वो कार की तरफ भागने लगा की अचानक उसे एक लड़की के चीखने की आवाज़ आई, कार का अगला दरवाजा खुला और उसमे से एक लड़की, जो बुरी तरहा से लहू लुहान थी , वो निकली और उसके पीछे पीछे एक मोटा सा आदमी भी निकला, जिसके सिर से भी हल्का खून निकल रहा था

उस मोटे आदमी ने लड़की की टाँग पकड़ी और उसकी सलवार पकड़ कर फाड़ डाली..उसकी गोरी गोरी टांगे नग्न हो गयी, खून निकलने की वजह से वो कमजोर सी लग रही थी और सही ढंग से अपना बचाव भी नही कर पा रही थी..

जग्गा समझ गया की वो मोटा आदमी उसका रेप करना चाहता है, और रेप शब्द उसके जहन मे आते ही उसका खून खोलने लगा और वो पागलो की तरह भागता हुआ उस तरफ आ गया, उसने एक्सीडेंट की वजह से टूटे हुए डिवाईडर के लोहे का सरिया उठा लिया और खींचकर

उसने एक जोरदार प्रहार उस मोटे आदमी की पीठ पर कर दिया..

वो पहले से ही ज़ख्मी था, इस वार से वो तिलमिला उठा..

लड़की अपने ही खून मे लिपटी पड़ी थी, उसने एक नज़र भिखारी को देखा और फिर वो बेहोशी के आगोश मे डूबती चली गयी..

मोटे आदमी ने जब देखा की भिखारी उसे मारने के लिए फिर से अपना हाथ उठा रहा है तो वो अपनी कार मे बैठा और भाग खड़ा हुआ...

पीछे रह गयी वो लड़की..जिसके सिर से काफ़ी खून निकल रहा था.

उसने आस पास देखा, सड़क किनारे एक रिक्शे वाला सो रहा था, उसने जल्दी से जाकर उसे उठाया, पहले तो उसने एक्सीडेंट वाला केस समझ कर मना किया, पर जग्गा ने जब अपना रुद्र रूप दिखाकर उसे डराया तो वो मान गया, और जग्गा ने उस लड़की को उठा कर रिक्शे पर लादा और हॉस्पिटल ले गया

सरकारी अस्पताल था, इसलिए ज़्यादा पूछताछ नही हुई..लड़की को फर्स्ट ऐड देकर एक कमरे मे पहुँचा दिया गया, जग्गा भी उसके साथ ही था..

अगली सुबह जब उसको होश आया तो डॉक्टर्स ने उसकी जाँच की, उसके बारे मे पूछा, पर वो चुपचाप लेटी रही, किसी भी बात का जवाब नही दिया उसने..बस अपनी आँखे शून्य मे घुमाती रही..

डॉक्टर ने जग्गा को अपने केबिन मे बुलाया

डॉक्टर : "तुम कौन लगते हो इस लड़की के ..."

जग्गा इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नही था...उसके मुँह से अचानक निकल गया : "जी ...मेरी रिश्तेदार है .."

डॉक्टर ने उसे उपर से नीचे तक देखा, डॉक्टर को विश्वास तो नहीं हुआ पर कुछ बोला भी नही..

कुछ देर बाद उसने एक एक्सरे स्क्रीन पर लगा कर दिखाया और बोला : "देखो, इसके सिर पर अंदर तक चोट आई है...वैसे तो घबराने की कोई बात नही है, पर मुझे लगता है की ये अपनी यादश्त खो बैठी है...इसको अपने बारे मे कुछ भी याद नही है ..."

जग्गा की समझ मे कुछ भी नही आ रहा था...वो डॉक्टर की बातें सुनता रहा..

डॉक्टर : "अभी तो आप इसको घर ले जा सकते हैं, पर इसकी पट्टियां करवाने के लिए और चेकअप के लिए इसको हर दो दिन के बाद लेकर आना.."

वो चुपचाप उठा और वापिस उस लड़की के पास आ गया.

वो उसे देखकर कुछ याद करने की कोशिश कर रही थी ...पर सब बेकार..

आख़िर जग्गा ने उससे पूछा : "तुम कौन हो ...क्या नाम है तुम्हारा ..."

लड़की ने पहली बार अपने मुँह से वो शब्द निकाले : "मुझे कुछ याद नही है ....मेरा नाम क्या है ...मुझे याद नही आ रहा ..."

और इतना कहकर वो अपना सिर पकड़कर रोने लगी...शायद उसे दर्द हो रहा था वहाँ..

जग्गा उठकर उसके पास गया और उसे चुप कराया, उसे पानी का गिलास दिया.

शाम तक नर्स ने उसे देने की दवाइयाँ एक लिफाफे मे डाल कर दी और बोली की अब तुम लोग घर जा सकते हो.

जग्गा उस लड़की को लेकर बाहर आ गया.

एक बार तो उसने सोचा की इसको लेकर पुलिस स्टेशन चले जाना चाहिए..पर फिर उसके दिमाग़ मे छुपे शैतान ने कहा की ऐसे माल को तू ऐसे ही अपने हाथ से क्यो जाने देना चाहता है ...ले चल इसको अपने घर..और मज़े ले इसके साथ..

और फिर जग्गा ने मन ही मन निश्चय कर लिया और उसको लेकर अपने साथ चल पड़ा..

वो जहाँ रहता था, उसकी झोपड़ी के आस पास ज़्यादातर दूसरे भिखारियों की झोपडिया थी, जो अपने सिर और पैरों पर नकली चोट और पट्टियाँ लगाकर सहानभूति बटोरते और भीख माँगते थे..

उस लड़की की हालत भी कुछ ऐसी ही हो रही थी अभी..

सिर पर पट्टी बँधी थी..कपड़े मैले कुचेले से हो गये थे...सलवार की जगह एक पुराना सा पायज़ामा पहना हुआ था उसने जो हॉस्पिटल से ही मिला था ..कुल मिलाकर वो भी अब उनकी तरह ही लग रही थी..

फ़र्क था तो बस उसके गोरे रंग का..जो उसे अलग ही दर्शा रहा था .

जग्गा उसको लेकर अपनी कॉलोनी मे पहुँच गया..

अंदर जाते हुए हर कोई उसको और उस लड़की को घूर रहा था..एक-दो ने तो पूछ भी लिया "कहा से लाया है ये महंगी शराब जग्गा.."

पर उसने किसी की बात का जवाब नही दिया..और उसे लेकर अपने झोपडे पर पहुँच गया..

दरवाजा बंद करके उसने लड़की को चारपाई पर बिठाया और झोपड़ी मे कुछ खाने पीने का समान ढूंढने लगा...पर वहाँ कुछ होता तभी मिलता ना, वो ढूँढने की एक्टिंग कर ही रहा था की अचानक बाहर का दरवाजा खड़का, उसने जैसे ही दरवाजा खोला, बाहर लगी भीड़ को देखकर घबरा गया.

बाहर कॉलोनी का ठेकेदार यानी मालिक खड़ा था और साथ मे आस पड़ोस के काफ़ी लोग भी थे..

जग्गा : "अरे, शेरा भाई , आप...कहिए..."

शेरा : "मैने सुना है की तेरे साथ एक लड़की आई है...देखने मे सुंदर भी है...और इन लोगो को लगता है की तू उसको कहीं से उठा कर लाया है..बोल, क्या बात है...मुझे अपनी जगह पर कोई पंगा नही चाहिए....."

जग्गा : "अरे नही शेरा भाई, ऐसा कुछ भी नही है...ये लड़की तो मेरी जोरू है...कल ही गाँव से आई है..रास्ते मे एक्सीडेंट हो गया था, इसलिए अस्पताल ले गया था, आज ही छुट्टी हुई है..ये देखो..अस्पताल का पर्चा.."

उसने अपनी जेब से हॉस्पिटल का पर्चा दिखा दिया..

तभी वो लड़की अचानक बाहर निकल आई...उसके चेहरे पर कोई भी भाव नही था..वो सब लोगो को टकटकी लगाकर देख रही थी ..

शेरा ने उस लड़की से पूछा : "ये तेरा मर्द है ना...बोल"

कुछ देर तक उसे देखते रहने के बाद उस लड़की ने अपना सिर हाँ मे हिला दिया..

उन सभी लोगो के साथ साथ जग्गा भी हैरान रह गया..की आख़िर उस लड़की ने हाँ क्यो

कहा..

सब लोग उसकी तरफ हैरानी से देखने लगे, की ऐसे बदसूरत भिखारी की इतनी सुंदर बीबी कैसे हो सकती है..

पर अब शक करने का कोई प्रश्न ही नही रह गया था...उसकी बात मानकर सभी लोग अपने अपने घर की तरफ चल दिए..

शेरा ने जाते जाते कहा : "अब तू अपनी बीबी के साथ रहेगा यहाँ तो मेरी झोपड़ी का किराया १५०० होगा..समझा.."

जग्गा ने हाँ मे सिर हिला दिया..

और उसके बाद शेरा भी वहाँ से चला गया..

जग्गा ने दरवाजा फिर से बंद किया और उस लड़की के सामने जाकर खड़ा हो गया..

और अपने प्रश्नो की बोछार कर दी उसके उसपर ....

जग्गा : "बता मुझे, कौन है तू, कहा की रहने वाली है...वो आदमी कौन था तेरे साथ कार मे जो तेरे साथ ज़बरदस्ती कर रहा था..बोल...और तूने इन सबके सामने मेरे झूट का साथ क्यो दिया..."

लड़की हैरानी से उसकी तरफ देखे जा रही थी..मानो कुछ समझ ही नही पा रही की हो क्या रहा है उसके साथ..

उसने थोड़ी देर बाद सुबकना शुरू कर दिया...और बोली : "मुझे नही पता ...मुझे कुछ याद नही है...मेरा नाम क्या है...मुझे नही पता...वो तुमने हॉस्पिटल मे मेरा इतना ध्यान रखा ...मुझे घर ले आए...इसलिए मुझे लगा की तुम ही मेरे पति हो ...इसलिए सबके सामने मैने ऐसे कहा ..."

कुछ देर बाद वो बोली : "तुम ऐसे क्यो बोल रहे हो ....क्या मैं तुम्हारी पत्नी नही हू ...बोलो ..."

जग्गा की समझ मे आ गया की उसे कुछ भी याद नही है..वो बेकार ही उसपर गुस्सा हो रहा था..

वो बाहर निकल गया और कुछ देर मे ही खाने पीने का समान लेकर आया और दोनो ने

मिलकर खाना खाया.

खाना खाते हुए जग्गा उसके शरीर को घूर घूर कर देख रहा था..उसका मासूम सा चेहरा, गोरा बदन..मोटे मोटे स्तन और बाहर निकली हुई नितंब ...उसकी उम्र लगभग २३ के आस पास थी ...बिल्कुल फिल्मी हीरोइन जैसा चेहरा और फिगर था उसका..शादी शुदा तो नही लगती थी ...

खाना खाने के बाद जग्गा बीड़ी पीने के लिए बाहर निकल गया..शाम का समय था,..इसलिए कॉलोनी मे काफ़ी रोनक थी ...

तभी जग्गा को ध्यान आया की घर पर सोने का तो कोई इंतज़ाम भी नही है...वो तो टूटी-फूटी सी चारपाई पर सो जाता था ...पर इस लड़की को उसपर नींद कैसे आएगी ..

और उसके लिए कपड़ो का भी इंतज़ाम करना होगा ..वो पिछले दो दीनो से उन्ही कपड़ो मे थी ..

वो कॉलोनी के बाहर पटरी पर लगने वाली मार्केट की तरफ चल दिया..वहाँ कॉलोनी के ही कई लोग सस्ते कपड़े बेचते थे ..

वो वहाँ पहुँचा और औरतों के कपड़े देखने लगा ...एक घाघरा चोली का सेट उसे पसंद आ गया ..और उसके साथ ही उसने एक ब्रा और पैंटी भी ले ली ...साथ मे एक मोटी चादर और चप्पल भी ले ली उस लड़की के लिए ..ये सारा सामान उसे ५०० रुपए मे मिल गया..

वो अपने झोपडे की तरफ चल दिया..और वहां पहुँचकर उसने वो सब समान उस लड़की को दे दिया..तब तक वो अपना मुँह हाथ धो चुकी थी और पहले से काफ़ी साफ़ सुथरी दिख रही थी..

वो उन कपड़ों को गोल गोल आँखों से देखने लगी..जग्गा ने चारपाई की चादर बदल दी ..और उस लड़की को कपड़े बदलने के लिए बोला ..

अब थी कठिन घड़ी उस लड़की के लिए...क्योंकि जग्गा की ८x८ की झोपड़ी मे कोई अलग से कपड़े बदलने की जगह नही बनी हुई थी ...और जग्गा तो चारपाई पर चादर बिछा कर ऐसे लेट गया जैसे वो कोई शो देखने के लिए आया हो ..

लड़की सकुचाती हुई सी उठी और उसने दूसरी तरफ मुंह कर लिया ..उसने वही हॉस्पिटल वाला पायज़ामा और अपने सूट का कुर्ता पहना हुआ था.. पहले उसने अपना पायज़ामा उतारा ..उसकी गोरी गोरी पिंडलियाँ देखकर जग्गा का लिंग खड़ा हो गया ...वो उसे अपनी पैंट के उपर से ही मसलने लगा ...

फिर उस लड़की ने अपनी पैंटी को उतारा ...जो एक ब्लेक कलर की महंगी पैंटी थी ..चूँकि उस लड़की और जग्गा की चारपाई के बीच ज़्यादा गेप नही था, जग्गा ने अपना पैर लंबा करते हुए नीचे पड़ी हुई पैंटी को अपने पैर के अंगूठे मे फँसाया और उपर लाकर अपने हाथों मे पकड़ लिया ...

अहह ....इतनी गर्म पैंटी थी उसकी ...और योनी वाली जगह से गीली भी थी ...वो उसे सूंघने लगा...एक मादकता से भरी खुशबू निकल रही थी ...उसे सूंघते ही वो समझ गया की उसकी योनी कुँवारी है ..इतना तो तजुर्बा हो ही चुका था उसे ...

फिर उस लड़की ने नयी पैंटी उठाई और अपने पैरों मे चड़ा ली, और फिर घाघरा भी पहन लिया ...फिर उसने अपना उपर का कुर्ता उतरा ..अब तो जग्गा की हालत खराब होने लगी उसे ऊपर से लगभग नग्न देखकर ,उसकी पतली कमर और ब्लेक ब्रा देखकर जग्गा से सहन नही हुआ और उसने अपना लिंग बाहर निकाल लिया और उसपर लड़की की पैंटी लपेट कर ज़ोर ज़ोर से हिलाने लगा ..

लड़की ने धीरे से अपनी ब्रा के क्लेप्स खोले और उसे भी उतार कर नीचे गिरा दिया ...अब वो उपर से पूरी नग्न थी ...जैसे ही वो ब्रा उठाने के लिए नीचे झुकी उसकी एक स्तन किसी लटके हुए आम की तरह  जग्गा को दिख गयी ...इतनी रसीली और मोटी स्तन देखकर उसकी उत्तेजना की सीमा नही रही और उसने भरभरा कर झड़ना शुरू कर दिया ...बड़ी मुश्किल से उसने अपने मुँह से निकलने वाली आहों को बाहर निकलने से बचाया ..पर अपने लिंग के पानी को उस लड़की की पैंटी मे भरने से नही बचा सका ..उसने जल्दी से अपने लिंग का सारा पानी उस पैंटी से साफ किया और उसे वापिस नीचे कपड़ों मे फेंक दिया ..

जग्गा ने लाख कोशिश की पर उसकी मोटी स्तन को और नही देख पाया ...इतनी देर मे उसने जल्दी से नयी ब्रा पहन ली और उसके उपर से वो चोली भी ...

और जब सारे कपड़े पहन कर वो उसकी तरफ घूमी तो जग्गा उसे देखता ही रह गया ...वो बहुत सुंदर लग रही थी इन नये कपड़ों मे ..लबोलब भरे किसी महंगी शराब की तरह।

जग्गा : "ये कपड़े वहाँ कोने मे रख दे...कल इन्हे धोने के लिए चलेंगे नदी किनारे ..."

उसने उन्हे उठाया और कोने मे रख दिया ....रखते हुए उसके हाथ में जैसे ही अपनी पैंटी आई और उसपर लगा हुआ ढेर सारा गीलापन उसने महसूस किया, उसने झट से जग्गा की तरफ देखा...पर वो अंजान सा बनता हुआ दूसरी तरफ देखने लगा ..वो कुछ नही बोली और सारे कपड़े उठा कर कोने मे रख दिए ..

अब समय था सोने का...

वो तो खुद ही अपने आप को जग्गा की पत्नी समझ रही थी..इसलिए जग्गा ने सोचा की आज की रात वो उसकी योनी मारकर ही रहेगा..

जग्गा ने चारपाई पर बिछा हुआ बिस्तर नीचे ज़मीन पर बिछा दिया और उसपर नयी चादर भी बिछा दी..और चारपाई को किनारे पर खड़ा कर दिया..

बिस्तर पर लेटते हुए जग्गा बोला : "चल .. आ जा यहाँ ...सोते हैं ..."

अपने लिंग को मसलता हुआ वो बड़े ही भद्दे ढंग से बोला ...

उस लड़की की आँखों मे एक अजीब सा भय उतर आया ... पता नही उसके मन मे क्या चल रहा था..पर साफ़ था की वो समझ चुकी है की जग्गा क्या चाहता है ..

वो जग्गा की तरफ पीठ करके साईड में लेट गयी, जग्गा ने उसकी पतली कमर को पीछे से दबोच लिया और अपना लिंग वाला हिस्सा उसकी उभरी हुई नितंब पर लगा कर ज़ोर से दबा दिया..

अह्ह्ह्ह्ह्हह ..... उस लड़की के मुँह से एक आह्ह्ह सी निकल गयी...

जग्गा को ऐसा लगा की उसने किसी रुई के गद्दे पर अपना लिंग टीका दिया है ..

इतनी मुलायम और गद्देदार नितंब उसने आज तक महसूस नही की थी ..

अपने हाथों को उसने लड़की के पेट से लपेट रखा था ...लड़की के दिल की धड़कन उसे साफ सुनाई दे रही थी ..

अपनी निचली कमर को धीरे धीरे चलाते हुए वो उसकी नितंब पर अपने खड़े हुए लिंग से ठोकरे मार रहा था ..

वो लड़की अपनी जगह पर लेटी हुई कसमसा रही थी ...साफ था की जग्गा जो भी कर रहा था वो उसमे असहज महसूस कर रही थी ...पर जग्गा को इससे कोई फ़र्क नही पड़ा, वो अपने काम मे लगा रहा ..

अपने हाथ को उसने धीरे धीरे उपर करना शुरू किया ...और जैसे ही उसके मोटे स्तन से जग्गा का हाथ टकराया, वो लड़की एक जोरदार चीख मारती हुई उससे छिटककर दूर जाकर खड़ी हो गयी ...और जोर जोर से रोने लगी ..

जग्गा को उसपर बहुत गुस्सा आया पर उसे डर से कांपता हुआ देखकर और उसके आँसुओं

को देखकर उसे एकदम से ये एहसास हुआ की वो उसके साथ ज़बरदस्ती करने की कोशिश कर रहा था ...ज़बरदस्ती यानी रेप .. और अचानक उसने अपने चेहरे पर जोर जोर से दो थप्पड़ मारे और मन ही मन अपने आपको गालियाँ देने लगा की क्यो वो उस लड़की की मजबूरी का फायदा उठा रहा है ..वो ऐसा कैसे कर सकता है ..बिना उस लड़की की रज़ामंदी के वो उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित करना चाह रहा था ..वो तो ऐसा बिल्कुल नही था, उसे तो नफ़रत थी ऐसे काम से और आज वो खुद वो काम कर रहा था ..ऐसा सोचते सोचते उसने फिर से एक जोरदार चांटा मारा अपने ही मुँह पर. ..

वो लड़की रोते रोते चुप हो चुकी थी और हैरानी से जग्गा की तरफ देखे जा रही थी ...जो अपने ही मुँह पर बुरी तरह से थप्पड़ मार रहा था ..

थोड़ी देर बाद जग्गा ने उसकी तरफ देखा और बोला : "मुझे माफ़ कर दो...मैं बहक गया था ..."

और उसने वो बिस्तर फिर से चारपाई पर लगाया और उस लड़की को वहाँ सोने के लिए कहा ...और खुद एक कोने पर ऐसे ही नग्न ज़मीन पर सो गया ...

वो लड़की कुछ देर तक तो खड़ी रही फिर धीरे धीरे चलती हुई चारपाई तक आई और वहाँ सो गयी ..

दोनो के मन मे ना जाने क्या क्या चलता रहा पर उसके बाद उन्होने आपस मे कोई बात नही की ..

# २

सुबह जब जग्गा ८ बजे उठा तो उसकी नज़र चारपाई की तरफ गयी, वो लड़की बेसूध सी होकर सो रही थी .. शायद उन दवाइयों का असर था, जो उसने रात को ली थी, या फिर देर रात तक जागने की वजह से वो ऐसी नींद सो रही थी।

वो नाश्ते का इंतज़ाम करने के लिए बाहर निकल गया ..और जब वापिस आया तो वो उठ चुकी थी और बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी ..

जैसे ही वो अंदर आया वो बोली : "कहाँ चले गये थे, मुझे उठा तो दिया होता ..."

जग्गा : "नाश्ते का इंतज़ाम करने गया था...ये लो .."

उसने अपने साथ लाया हुआ नाश्ता उसे दिया और दोनो ने मिलकर खाया.

अचानक वो लड़की धीरे से बोली : "सुनो ...वो रात वाली बात, दरअसल ...मुझे ....वो सब ....थोड़ा अजीब सा ... "

जग्गा बीच मे ही बोला : "मैं समझ सकता हू, तुम चिंता मत करो, आज के बाद ऐसा नही होगा ...तुम्हे घबराने की कोई ज़रूरत नही है ..."

उसने राहत की साँस ली ...और फिर बोली : "तुम्हारा नाम तो जग्गा है ...पर मेरा नाम क्या है ..."

जग्गा कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला : "रूपा .... रूपा नाम है तुम्हारा ..."

वो लड़की भी बुदबुदाई : "रूपा ..... ह्म्*म्म "

नाश्ता करने के बाद जग्गा ने उससे कहा : "चलो, नदी किनारे चलते हैं, वो कपड़े भी धोने हैं, तुम चाहो तो नहा भी लेना वहां , उसके बाद हॉस्पिटल चलेंगे ...डॉक्टर साब ने कहा था की आज दिखा देना एक बार ..."

उसने हाँ मे सिर हिलाया और अपने कपड़ों की पोटली उठा कर उसके साथ नदी किनारे चल दी ..

वो बहती हुई नदी, उनकी कॉलोनी के पीछे की तरफ थी, जहाँ झोपड़पट्टी के लोग नहाते-धोते और अपने कपड़े साफ करते थे ...

सुबह का समय था, इसलिए वहाँ काफ़ी भीड़ थी ..

जग्गा के साथ उस लड़की को आता देखकर सभी की नज़रें उसी तरफ थी ...वो रूपा को ऐसे देख रहे थे जैसे उसे आँखों ही आँखों मे पेल देंगे ...

जग्गा को अपनी तरफ मिल रही अटेंशन से काफी मजा आ रहा था, वो उसकी बीबी तो नही थी, इसलिए उसे कोई फ़र्क नही पड़ रहा था की कोई उसे किस नज़र से देख रहा है...और रूपा भी अपनी तरफ उठने वाली हर नज़र को देखकर उतनी ही खुश हो रही थी, जितनी आजकल की नौजवान लड़कियाँ अपनी तरफ मिल रही अटेंशन से होती है ..

पर उसे नहीं मालुम था की ऐसी अटेंशन ही उसकी मुसीबत बन जायेगी ...

वहां हर कोई खुले मे नहा रहा था..औरतें और लड़कियाँ भी लगभग नग्न होकर नहा रही थी ..१५ साल के आस पास की लड़कियाँ तो सिर्फ़ एक कच्छी पहन कर एक झुंड मे नहा रही थी ..उनकी अर्धविकसित स्तन ठंडे पानी मे भीगकर तनी हुई थी ..जिनकी स्तन ज़्यादा मोटी हो चुकी थी उन्होने टी शर्ट या कोई महीन सा कपड़ा पहना हुआ था, जिसमे से उनके स्तन साफ़ दिख रहे थे ..औरतों ने अपना पेटीकोट उपर तक बाँधकर अपनी छातियों को ढका हुआ था ..जिसकी वजह से उनकी मोटी मोटी जांघे साफ़ दिख रही थी सभी को ... और भीगने के बाद उनके पेटीकोट के नीचे छुपा खजाना भी ....ये नज़ारा देखना जग्गा का रोज का काम था ...उसने तो कई बार पानी के अंदर ही अंदर उन लड़कियों और औरतों को देखकर मूठ मारी थी ..और कई बार तो कई औरतों के साथ मज़े भी लिए थे ..झोपड़पट्टियों मे रहने वाले खुलकर मज़े लेते थे एक दूसरे से ..

रूपा बड़ी उत्सुकता से सभी को देख रही थी ..तब तक जग्गा उसका हाथ पकड़कर एक कोने की तरफ ले गया जहाँ ज़्यादा भीड़ नही थी और अपने कपड़े उतार कर नहाने लगा ...

रूपा ने पायजामा और टी शर्ट पहनी हुई थी ..वो ऐसे ही पानी मे उतर गयी ..हालाँकि उसने अंदर ब्रा भी पहनी थी ..पर उसके स्तनाग्र शायद कुछ ज़्यादा ही सेंसेटिव और लंबे थे, वो दोनो कपड़ो को झाँककर बाहर उजागर होने लगे ...वो जब पहली डुबकी लगाकर बाहर निकली तो उसके संगमरमरी बदन को देखकर जग्गा के जंगली लिंग की हालत बेकाबू सी हो गयी ...वो धोती मे ही फड़फड़ाने लगा ...अब उसने ये वादा तो कर दिया था की वो रूपा के साथ कोई ज़बरदस्ती नही करेगा..पर अपने अंदर की बढ़ती हुई हवस को वो कैसे समझाए ...उसके अंदर का जानवर बुरी तरहा से गुर्रा रहा था रूपा का सेक्सी शरीर देखकर ..

वैसे देखा जाए तो हर भले इंसान के अंदर एक जानवर होता है ..जो हर वक़्त सक्रिए रहता है...ये तो इंसान की इच्छाशक्ति के उपर है की वो उसपर कब तक कंट्रोल रख पता है ...जग्गा की भी यही हालत थी ..

रूपा दिन-दुनिया से बेख़बर अपने बदन पर साबुन लगा-लगाकर नहा रही थी ..और वहाँ नहा

रहे दूसरे मर्दों की भूखी नज़रें उसके बदन को छेद कर उसका रसपान कर रही थी ..

जग्गा भी सब देख रहा था...उसकी नज़रें उन सभी पर भी थी जो रूपा की तरफ गंदी नज़रों से देख रहे थे ...

तभी जग्गा के पीछे से एक सुरीली आवाज़ आई ...

"अब तो जग्गा हमे भूल ही जाएगा ..."

उसने तुरंत घूम कर देखा...वहाँ लतिका खड़ी थी ..जिसे प्यार से सभी लोग सेक्सी मछवारण कहते थे ..

वो उसकी कॉलोनी की सबसे हसीन औरतों मे से एक थी ...वो बिना ब्लाउस के साड़ी पहन कर नहा रही थी , और साड़ी भीगने की वजह से उसके मोटे स्तन और उनपर लगे स्तनाग्र अलग ही चमक रहे थे.

उसका अपाहिज पति भी जग्गा की तरहा ही सड़कों पर भीख माँगता था ...उसका एक हाथ नही था..और लतिका बाजार मे मछली बेचती थी ..उसका मछली बेचने का तरीका भी सेक्सी था ...वो खुले गले का ब्लाउस और पेटीकोट पहन कर बैठती थी बाजार मे ..और सामने खड़े ग्राहक को उसके मोटे दूध और चिकनी जांघे साफ दिख जाते थे ...इसलिए उसकी मछलियाँ बाजार मे सबसे पहले बिक जाती थी ..

जग्गा के साथ उसका चक्कर भी चल रहा था ...रात के समय जग्गा कई बार उसकी झोपड़ी मे जाकर ही उसे पेल चुका था ...उसका बेवड़ा पति जब शराब के नशे मे सो रहा होता था तो जग्गा उसकी बगल मे लेटकर ही उसकी बीबी को पेल रहा होता था ..

और ये चक्कर सिर्फ़ लतिका के साथ ही नही था उसका..कॉलोनी की कई लड़कियाँ और औरतें जग्गा के जंगली लिंग की दीवानी थी ..कारण था उसका नौजवान शरीर और लंबा लिंग...साथ ही उसका जंगलिपना भी ...क्योंकि वो पेलते हुए किसी जानवर की तरहा व्यवहार करता था..गालियां निकालता था और बड़ी ही बेदर्दी से ठुकाई करता था वो सबकी...चाहे इसमे दर्द भी होता था उन्हे, पर मज़ा भी भरपूर मिलता था ..उसके जैसा लिंग पूरी कॉलोनी मे और किसी के पास नही था ..इसलिए जो उसके लिंग का स्वाद एक बार चख लेता था, वो दोबारा ठुके बिना नही रह सकता था ..

जग्गा भी लतिका की तरफ पलटा और बोला : "तुझे कैसे भूल जाऊंगा मेरी जान ...घर की दाल के आगे तेरी फिश करी तो कमाल की लगेगी ..."

लतिका ने आँखे नचाकर रूपा की तरफ देखा और बोली : "घर की दाल तो नही लगती ये ...बहुत मिर्च मसाला भरा हुआ है इसके अंदर ...देख ज़रा, सारे कॉलोनी के कुत्ते कैसे उसको

घूर कर देख रहे हैं ..."

जग्गा हंसते हुए बोला : "अब कुत्तों को घूरने से कौन रोक सकता है ..."

रूपा का ध्यान अभी तक उनकी तरफ नही था ...ये देखकर लतिका ने एकदम से अपनी साड़ी को अपनी छातियों से हटा दिया, जिसकी वजह से उसके नंगे स्तन एक पल के लिए जग्गा की नज़रों के सामने चमक गये ..और अगले ही पल उसने फिर से साड़ी अपनी छातियों पर बाँध ली ..और पास ही पड़ी हुई एक बड़ी सी चट्टान के पीछे की तरफ चल दी ..

जग्गा उसका इशारा समझ गया ....वो पहले भी कई बार उस चट्टान के पीछे उसकी ठुकाई कर चुका था ..पर उसे आज रूपा की भी चिंता थी ..उसने एक नज़र उसकी तरफ देखा और फिर अपने लिंग की बात सुनकर वो भी चट्टान के पीछे की तरफ चल दिया ..

और जग्गा को वहाँ ना पाकर अचानक ही ३-४ आदमी रूपा के आस पास मंडराने लगे ...

उनमे से एक था कॉलोनी का गुंडे किस्म का आदमी जावेद ..जो शायद अंडरवर्ल्ड के लिए काम करता था ..इसलिए सभी उससे डर कर रहते थे ..उसके पास एक पिस्टल भी थी, जो वो अपनी शर्ट के नीचे छुपा कर रखता था ..

दूसरी तरफ जग्गा जैसे ही चट्टान के पीछे पहुँचा, लतिका उससे किसी बेल की तरह से लिपट गयी और उसे चूमने लगी ...जग्गा ने उसकी साड़ी उसकी छातियों से हटा दी और उसके मोटे मोटे स्तनों को चूसने लगा ...वहाँ उन्हे ठुकाई के लिए ज़्यादा वक़्त नही मिल पाता था, इसलिए सब कुछ जल्दी जल्दी करना पड़ता था ..

लतिका ने उसके लिंग को बाहर निकाला और अपनी साड़ी उपर करते हुए वो एक चिकने पत्थर पर लेट गयी ...जग्गा ने अपना लिंग सीधा उसकी रसीली योनी के अंदर पेल दिया और ठोकने लगा उस गदर माल को वहीं नदी किनारे ...उसके हिलते हुए स्तन वो अपने मुँह से पकड़ने की कोशिश करता और जैसे ही वो पकड़ मे आता वो उनपर काट लेता ...लतिका मछली की तरहा मचल जाती ..

और सिर्फ़ पाँच मिनट के अंदर ही जग्गा का तेल उसकी योनी के अंदर भरा पड़ा था ..

वो उसकी मुलायम छातियों के उपर मुँह रखकर हाँफने लगा..

दूसरी तरफ जावेद बिल्कुल पास पहुँच गया था रूपा के ..और उसके गोरे शरीर को देखकर उसकी आँखे लाल सुर्ख हो चुकी थी ...वो नहाने के बहाने इधर उधर डुबकी लगाता और रूपा के आस पास जाकर निकलता, इस तरह से वो उसके गुदाज जिस्म को छूने मे कामयाब हो रहा था ..

रूपा भी थोड़ा विचलित लग रही थी ..उसने शायद ऐसी परिस्थितियों के बारे मे सोचा नही था...या शायद जानती नही थी की इनसे कैसे निपटा जाता है ...

अचानक जावेद  पानी के अंदर गया और अंदर ही अंदर उसने रूपा की भरंवा नितंब को अपने हाथों मे लेकर ज़ोर से दबा दिया ...

रूपा के अंदर एक चिंगारी सी सुलग उठी ... उसकी यादश्त चाहे चली गयी थी पर उसके अंदर की औरत ऐसे टच पाकर उत्तेजित होने लगी थी ...वो चाहकर भी अपनी उत्तेजित भावनाओ को नियंत्रित करने मे कामयाब नही हो पा रही थी ...

तक जावेद अपना सर पानी से बाहर निकाल कर रूपा के पीछे खड़ा हुआ था , रूपा उसे देख तो नहीं पा रही थी पर महसूस जरूर कर रही थी

जावेद ने जब देखा की रूपा अब ज़्यादा विरोध नही कर रही है तो उसने अपने हाथ की उंगलियों को थोड़ा नीचे करते हुए उसकी दोनो टाँगो के बीच फँसा दिया और उसकी योनी के उपर रखकर अपने हाथ से उसे जोरों से भींच लिया ...पानी के अंदर खड़ी हुई रूपा अपने पंजों पर खड़ी हो गयी ....उसका मुँह खुला का खुला रह गया ...आँखों मे गुलाबीपन उतर आया ...और साँसे तेज़ी से चलने लगी ...

जावेद समझ गया की लोंडिया को मज़ा आने लगा है ...उसने अपनी उंगलियों की थिरकन तेज कर दी ..उसे उसकी योनी पानी के अंदर भी किसी भट्टी की तरह सुलगती हुई महसूस हो रही थी ..

पर तभी जावेद के एक साथी ने उसे आगाह किया की जग्गा वापिस आ रहा है .. जावेद ने बेमन से अपना हाथ वहाँ से हटा लिया ..और पानी के अंदर एक डुबकी लगाकर दूर निकल गया ...ताकि जग्गा उसे रूपा के आस पास ना देख पाए ...बेचारी रूपा देख भी नहीं पायी की वो कौन इंसान था जो उसे इतने मजे दे रहा था

जग्गा और जावेद का एक दो बार झगड़ा हो चुका था पहले भी ..जावेद अपनी बदमाशी चलाता था पूरी कॉलोनी मे..सिर्फ़ जग्गा ही एक ऐसा शख्स था जो उससे डरता नही था ...इसलिए दोनो मे ठनी रहती थी हमेशा ..

जावेद वहाँ कोई फ़साद खड़ा नही करना चाहता था इसलिए अपने दोस्तों के साथ वहाँ से निकल गया ..

जग्गा जब रूपा के पास पहुँचा तो उसके लाल चेहरे को देखकर बोला : "क्या हुआ ...तुम ठीक तो हो ना ..."

वो अपनी सुर्ख आँखों से उसे देखती रही ..पर कुछ बोली नही ...

थोड़ी देर बाद दोनो घर की तरफ चल दिए ..

घर पहुँचकर उसने अपने कपड़े उतार दिए ..और सिर्फ़ पैंटी और ब्रा मे खड़ी होकर अपना बदन सूखाने लगी ..

जग्गा ने भी दूसरी तरफ मुँह किया और अपना बदन पोंछते हुए उसने अपनी धोती खोल कर साईड मे रख दी ..वो बिल्कुल नग्न था अब ..

उसने थोड़ी देर पहले ही ठुकाई की थी ..इसलिए उसका लिंग बैठा हुआ था ...पर बैठे हुए भी वो किसी मोटे पाईप की तरहा लटका हुआ काफ़ी ख़तरनाक लग रहा था ...

रूपा की नज़र एकदम से उस तरफ चली गयी ..जब जग्गा अपना अंडरवीयर उठा कर पहन रहा था ..

उसके लटके हुए हथियार को देखकर उसकी योनी मे एक टीस सी उभरने लगी ..उसने शायद पहली बार इतना बड़ा लिंग देखा था ...काला भसंड था जग्गा का लिंग ...देखने मे काफ़ी भयानक सा लग रहा था ...पर ना जाने उस भयानक लिंग को देखकर भी रूपा की योनी अपना रस निकाल रही थी ..ये कुदरती बात थी ..जो उसकी समझ से परे थी ..

जग्गा मन ही मन निश्चय कर चुका था की वो रूपा को ज़ोर ज़बरदस्ती से नही बल्कि वो खुद जब चाहेगी तब पेलेगा ...इसलिए वो अपने लिंग का प्रदर्शन कर रहा था उसके आगे ...क्योंकि उसका लिंग ही था जो उसे अपनी मंज़िल तक पहुँचाने मे मदद कर सकता था ...

जग्गा कुछ खाने का समान लेने के लिए बाहर निकल गया ..और पीछे से रूपा ने अपने अंगवस्त्र भी उतार कर बदल लिए और जग्गा का लाया हुआ घाघरा चोली पहन कर बैठ गयी ..

# ३

नाश्ता करने के बाद जग्गा जैसे ही बाहर जाने के लिए निकलने लगता है तो रूपा उससे बोली : "कहाँ जा रहे हो ..."

जग्गा : "मैने तुम्हे बताया था ना अपने काम के बारे मे ...बस वही जा रहा हू ..भीख माँगने ...अब इस अपाहिज को कोई काम तो देता नही है ..."

उसने अपनी लंगड़ी टांग की तरफ इशारा करते हुए कहा

रूपा बोली : "मैं भी चलूंगी तुम्हारे साथ ..."

जग्गा उसकी तरफ हैरानी से देखने लगा ....और बोला : "तुम क्या करोगी ...ये तुम्हारा काम नही है ...."

रूपा : "मैं घर पर क्या करूँगी ....ले चलो ना मुझे भी साथ ...शायद तुम्हारी कुछ मदद ही कर दू ..."

जग्गा को क्या परेशानी हो सकती थी ....उसके शातिर दिमाग़ मे अचानक ये ख़याल आया की उसके साथ इतनी सुंदर लड़की को देखकर शायद उसे ज़्यादा भीख मिलने लग जाए ...क्योंकि कॉलोनी मे जो दूसरे भिखारी थे, जिस जिसके साथ उनकी बीबी या या जवान बेटी जाती थी, वो ज़्यादा कमा कर ही आते थे वापिस ...

उसने हामी भर दी और दोनो भीख माँगेने लिए निकल पड़े.

दोनो झोपड़पट्टी से निकल कर मैन रोड पर आ गये . यही से जग्गा अक्सर भीख माँगने की शुरूवात करता था ..वहाँ एक चोराहा था, और रेड लाइट लगभग २ मिनट की होती थी...इसलिए काफ़ी वक़्त मिल जाता था हर गाड़ी के पास जाकर भीख माँगने का ..

जग्गा जब वहाँ पहुँचा तो पहले से ही ३-४ भिखारी उस जगह पर भीख माँग रहे थे ..जग्गा उन सभी को जानता था ..उन भिखारियों ने जैसे ही जग्गा को एक सुंदर सी लड़की के साथ आता हुआ देखा वो अपना काम छोड़कर उन्हे ही देखने लगे ...

रूपा किसी भी एंगल से भिखारी नही लग रही थी .. जग्गा ने उसे फूटपाथ पर खड़े होने के लिए कहा और उसे समझाया की पहले देख लो की मैं कैसे भीख माँगता हू ..फिर तुम भी ट्राइ करना ..

ऐसा कहते हुए जग्गा को मन ही मन हँसी भी आ रही थी ..वो सोच रहा था की ये इतने अमीर घराने की लड़की लगती है ..पर यादश्त खो जाने की वजह से कैसे काम करने पड़ रहे हैं इसको ..शायद ये भी नही जानती की भीख माँगना इस समाज का सबसे गिरा हुआ काम है जो वो करने जा रही है ..पर इस बात से जग्गा को कोई फ़र्क नही पड़ रहा था ..आख़िर वो उसकी मदद ही तो कर रहा था ..वो ना होता तो उसकी इज़्ज़त लुट गयी होती ..शायद वो आदमी उसको मार ही देता उसका रेप करने के बाद ...उसने रूपा की इज़्ज़त ही नही बचाई बल्कि उसे रहने के लिए अपनी झोपड़ी मे जगह भी दी है ..अब वो अगर उसकी मदद कर रही है तो इसमे बुरा ही क्या है ..

जग्गा उसको सब कुछ समझा कर एक गाड़ी की तरफ बढ़ गया ..

रूपा ने नोट किया की भीख माँगते हुए जग्गा के चेहरे के एक्शप्रेशन बदल गये हैं ..उसकी टाँग मे थोड़ा और लड़कपन आ गया है ..उसकी आवाज़ भी कमजोर सी हो गयी है ..और बोलते हुए वो अपने हाथों को भी धीरे धीरे उपर नीचे कर रहा था ..यानी कुल मिलकर वो अपनी बदहाल जिंदगी का वास्ता देकर भीख माँग रहा था ..

वो एक गाड़ी के पास गया ...उसने उसे भगा दिया...फिर दूसरी गाड़ी के पास गया ..उसने भी भगा दिया ...फिर जग्गा एक गाड़ी के पास गया जिसमे साथ वाली सीट पर एक बुढी औरत बैठी थी ...वो उसकी तरफ का शीशा खटकाने लगा ...उसने जग्गा की हालत देखी और शीशा नीचे करते हुए उसके हाथ मे पाँच का सिक्का रख दिया ..जग्गा ने झुक कर उसका आभार प्रकट किया ..और आगे चल दिया ..

रूपा ये सब काफ़ी गौर से देख रही थी ..उसने अपने कपड़ो की तरफ देखा जो बिल्कुल साफ सुथरे थे ..कही से फटे भी नही थे और उसका चेहरा भी दूसरे भिखारियों की तरहा गंदा नही था ..

पर एक चीज़ थी उसके पास....उसका हुस्न ..

जिसको देखकर सुबह से ना जाने कितने लोग लार टपका रहे थे ..उसे इस बात का अंदाज़ा तो हो ही चुका था की इंसान की गंदी नज़रें उसके गोरे जिस्म को पेलने मे लगी हुई है ...अब उसके पास भिखारियों की तरहा गंदा जिस्म या कोई टूटा फूटा अंग तो था नही जिसकी सहानभूति बटोर कर वो भीख माँग सके ...जो कुछ भी था वो उसका जिस्म ही था ...

उसने घाघरा चोली पहना हुआ था ..और उपर से क्रॉस करते हुए उसने अपनी छातियों पर दुपट्टा भी लपेटा हुआ था ..रूपा ने वो दुपट्टा हटा दिया ...जिसकी वजा से उसके मोटे मोटे स्तन कसी हुई चोली मे दिखने लगे ...चिलचिलाती हुई धूप मे उसका गोरा बदन चमक रहा था ..

जग्गा एक कार के पास पहुँचा ...जिसमे एक मोटा सा आदमी बैठे हुए सिगरेट पी रहा था

..उसका एसी चल रहा था और उसने अपनी होंडा सिटी का शीशा खोल रखा था ..

जग्गा उसके पास गया और और दोनो हाथ जोड़कर उससे भीख माँगने लगा ..मोटे आदमी ने उसको झिड़क दिया ..वो आगे जाने ही वाला था की तभी पीछे से रूपा की मीठी आवाज़ आई ..

"बाबूजी ....दे दो ना ...सुबह से कुछ नही खाया ..."

जग्गा ने झट से पलटकर पीछे देखा ...रूपा अपनी गोल गोल आँखे नचा कर उसको देखने लगी ..

जग्गा मन ही मन खुश हो गया और साईड हो गया ..

अब मोटे आदमी की नज़रें सीधी रूपा की फूली हुई छातियों पर गयी ..उसे तो यकीन ही नही हो रहा था की इतनी सुंदर लड़की भिखारन हो सकती है ...उसने एक लंबा सा कश लिया और अपनी उंगली से इशारा करके रूपा को अपने पास बुलाया ...वो झिझकति हुई सी आगे हो गयी ...फिर उस मोटे आदमी ने अपने मुँह मे भरा हुआ धुंवा उसके चेहरे पर फूँक मारकर निकाल दिया ..

रूपा ने फिर से कहा : "बाबूजी ....दे दो ना कुछ ..."

वो रूपा को घूरता रहा और फिर उसका हाथ अपनी उपर वाली जेब मे गया और उसने एक नोट निकाल कर रूपा के हाथ मे रख दिया ...और रखते हुए उसने अपनी उंगलियों से उसके हाथ को रगड़ भी दिया ...रूपा के लिए ये थोड़ा अजीब था पर फिर भी वो कुछ ना बोली ..तभी ग्रीन लाइट हो गयी और वो कार आगे चली गयी .

उसके जाने के बाद जग्गा ने जैसे ही उसके हाथ मे पकड़ा हुआ नोट देखा उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी ...वो १०० का नोट था ..इतने पैसे भीख मे मिलना हर किसी की किस्मत मे नही होता ...वो खुशी से फूला नही समा रहा था ..

रूपा की पहली भीख की कमाई के लिए उसने उसे शाबाशी दी ..और फिर दोनो मिलकर दूसरी तरफ के सिग्नल पर जाकर भीख माँगने लगे ...अगले दो घंटे मे ही उन दोनो ने मिलकर लगभग ८०० रुपय कमा लिए ...रूपा को देखकर हर कोई भीख दे रहा था ...कोई १० देता तो कोई बीस और कोई ५० भी देता ...

जग्गा के लिए आज का दिन काफ़ी अच्छा था .

दोनो ने अपने अपने पैसे समेटे और मैन रोड से निकलकर मार्केट की तरफ चल दिए ..

दोपहर का टाइम होने लगा था ...दोनो को भूख भी लग रही थी ..

मार्केट मे एक रेहडी वाला आलू पूरी बेच रहा था ..जग्गा और रूपा ने वहीं बेंच पर बैठकर आलू पूरी खाए ..जग्गा जब भी खुश होता था तो यही आकर खाना खाया करता था ..नही तो ज्यादातर दोपहर मे भूखा ही रह लेता था वो ..

जग्गा ने रूपा से पूछा : "तुम्हे कोई परेशानी तो नही हुई ना ....वो सब करते हुए ...मतलब भीख माँगते हुए .."

रूपा बोली : "तुम भी तो ये काम रोज करते हो ...जब तुम्हे कोई परेशानी नही है तो मुझे क्या होगी .."

उसकी भोली सूरत और प्यार भारी बात सुनकर वो भी मुस्कुरा दिया ..

जग्गा उसके चिकने शरीर को देखकर सोच रहा था की वो कब तक अपने आप पर कंट्रोल रख सकेगा ...ऐसी महंगी शराब उसके पास है पर वो उसको पी नही सकता था..और अब वो उसके झोपडे मे ही रहने लगी है इसलिए उसे अकेला छोड़कर कही जा भी नही सकता ..

उसने मन ही मन निश्चय कर लिया की वो उसे अब सहवास के बारे मे कुछ जानकारी देगा..शायद उसकी वजह से उसमे कोई बदलाव आ जाए ...

खाना खाने के बाद वो दोनो एक ऑफीस वाले एरिया मे पहुँच गये ..जहाँ काफ़ी ऊंची ऊंची बिल्डिंग्स थी और कोट और टाई पहने लोग काफ़ी पैसे भी देते थे ..

जग्गा और रूपा एक पार्किंग के बाहर जाकर खड़े हो गये ..

पार्किंग के अंदर जा रहा हर आदमी रूपा को घूर घूर कर देख रहा था ...फिर जैसे ही रूपा अपने हाथ आगे करती वो उसके हाथ मे नोट पकड़ा देते ...दस के नोट की तो गड्डी बन गयी थी जग्गा की जेब मे ...

शाम तक उन्होने काफ़ी पैसे इकट्ठे कर लिए और फिर जब अंधेरा होने लगा तो दोनो वापिस अपने झोपडे की तरफ चल दिए ..

जाते हुए जग्गा मार्केट से होता हुआ गया ..जहाँ लतिका रोज की तरह मच्छी बेच रही थी ..

जग्गा को अपनी तरफ आता देखकर वो खुश हो गयी ..

लतिका : "आओ जग्गा ....अब तो तुम्हारी बीबी आ गयी है ...घर पर बनाना शुरू कर दे अब

तो खाना ...बोल कितनी दू .."

उसने अपनी छातियों की नुमाइश उसके सामने लगाते हुए कहा ..

जग्गा ने एक नज़र रूपा की तरफ देखा और फिर झुककर लतिका के सामने बैठ गया और बोला : "मन तो कर रहा है की सब कुछ उठा कर ले जाऊ यहा से ....पर अभी के लिए तू ये तोल दे बस ..."

जग्गा ने एक बड़ी सी मच्छी उठा कर उसे दे दी ..जब लतिका तोल रही थी तो जग्गा फुसफुसाया : "आज रात आ जइयो मेरे झोपडे मे ..."

वो हैरत से उसे देखने लगी ...जग्गा कई बार उसके झोपडे मे जाकर उसकी ठुकाई कर चुका था और वो भी कई बार उसके पास आ चुकी थी ..और आज सुबह तो दोनो ने नदी के किनारे भी खुलकर ठुकाई की थी ..

लतिका हैरान थी की वो अपनी पत्नी के होते हुए क्यो उसे अपने झोपडे मे बुला रहा है ...क्या उसे डर नही लगता ..उसकी पत्नी को पता चल गया तो क्या होगा ...

फिर उसने सोचा 'पता चलता है तो चलने दे ...वो अगर खुद ही अपनी पत्नी के होते हुए उसे बुला रहा है तो ज़रूर उसने कुछ सोच कर ही ये कदम उठाया होगा ...'

और वैसे भी सुबह की आधी-अधूरी ठुकाई के बाद से उसकी योनी अब तक सुलग रही थी ..उसका बस चलता तो वो पूरी मच्छी अपनी योनी के अंदर घुसा लेती ...पर अब जग्गा के लिंग की आस मिल चुकी थी उसको ...इसलिए वो मन ही मन खुश होते हुए हाँ मे इशारा करके मछली तोलने लगी ..

उसके बाद जग्गा और रूपा घर की तरफ चल दिए ...आज काफ़ी पैसे इकट्ठे हो गये थे जग्गा के पास ....वो किचन मे इस्तेमाल होने वाली हर चीज़ को इकट्ठा करते हुए घर की तरफ चलने लगे ...रास्ते से उसने एक शराब की बोतल भी खरीद ली ...

जग्गा के पास एक पुराना स्टोव पड़ा था, जिसमे उसने तेल डालकर चालू कर दिया और फिर चावल और मछली बनाने लगा ...आज काफ़ी सालो के बाद वो किचन का काम कर रहा था ..पर फिर भी उसे कोई परेशानी नही हो रही थी ..रूपा उसके पास बैठी हुई देख रही थी .

खाना बनकर जब तैयार हुआ तो जग्गा ने अपने कपड़े बदलने की सोची..

अपने भीख माँगने वाले गंदे कपड़े वो अलग ही रखता था ...उसने वो सारे कपड़े उतार दिए ..

रूपा नज़रे चुराकर उसके कसरती बदन को देख रही थी ..

अचानक जग्गा ने अपना अंडरवीयर भी उतार दिया ...रूपा एकदम से सकपका गयी ..और उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ घुमा लिया ..पर फिर धीरे से पलटकर वो दोबारा वहीं देखने लगी ..

जग्गा का लिंग खड़ा हो चुका था ...वो रूपा की तरफ नही देख रहा था पर फिर भी जानता था की वो उसे ही देख रही है ...अपने खड़े हुए लिंग को वो अपने हाथ मे लेकर पूचकारने लगा ...

रूपा चारपाई पर बैठ गयी ...अब वो भी खुलकर जग्गा को देख रही थी ..जग्गा तो ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे उसे कोई फ़र्क ही नही पड़ता अपने नंगेपन से ...

जग्गा ने अपना पायजामा और एक पुरानी सी टी शर्ट पहन ली ...और बर्तन निकालने लगा ..और रूपा से बोला : "तुम भी अपने कपड़े बदल लो ...फिर खाना खाते हैं ..."

रूपा सकुचाती हुई सी उठी ..और झोपड़ी के दूसरे किनारे पर जाकर खड़ी हो गयी ...

अब जग्गा की नज़रें उसकी तरफ थी ..वो अपनी बोतल खोलकर आराम से उसको कपडे बदलते हुए देखने लगा, रूपा ने अपनी चोली उतार दी ..और जैसे ही उपर का टॉप पहनने लगी ..जग्गा बोला : "ये ब्रा भी उतार दे ...रात को सोते हुए तकलीफ़ होती है नही तो .."

रूपा ने उसकी तरफ देखा और फिर दूसरी तरफ घूम कर उसने अपनी ब्रा भी उतार दी ..इसी बीच जग्गा ने बड़ी चालाकी से उसके पीछे जाकर उसका टॉप उठा लिया और वापिस अपनी जगह पर आकर बैठ गया ..

रूपा ने जब अपना टॉप उठाना चाहा तो वहाँ वो नही था ...वो घूम घूम कर अपना टॉप देखने लगी ...उसने अपने हाथों से अपनी स्तन को ढक लिया था ..और कभी इधर जाकर और कभी उधर जाकर अपना टॉप देखने लगी ..

जग्गा उसके अर्धनग्न जिस्म को बड़े घूरकर देख रहा था ..फिर उसने जल्दी से वो टॉप चारपाई के नीचे फेंक दिया ..और बोला : "वहाँ देखो ...शायद उधकर चारपाई के नीचे चला गया है ..."

रूपा अपने स्तनों को अपने हाथों मे पकड़े पकड़े ही नीचे झुकी और उसे अपना टॉप दिखाई दे गया ...उसने एक हाथ को ज़मीन पर रखा और दूसरे को आगे करते हुए अपना टॉप उठा लिया ..

बस इतना समय ही बहुत था जग्गा के लिए...उसके मोटे मोटे थन लटके हुए देखने का ..

रूपा ने जल्दी से अपना टॉप उठाया और पहन लिया ...उसके बाद अपना घाघरा भी उतार दिया और वही पुराना पायजामा पहन लिया ..

दोनो ने मिलकर खाना खाया ....जग्गा ने सचमुच काफ़ी स्वादिष्ट खाना बनाया था ...रूपा ने उसकी तारीफ की और साथ ही साथ उसकी नज़रों ने उसके खड़े हुए लिंग को भी देखा, जो शायद उसके मोटे स्तन देखकर अभी तक बैठने का नाम नही ले रहा था .

रूपा खाना खाने के बाद जल्द ही सो गयी...और जग्गा इंतजार करने लगा लतिका का .

# ४

रूपा को सोते हुए देखकर जग्गा अपने लिंग को मसल रहा था ... उसके ख्यालो मे तो उस वक़्त लतिका ही नग्न होकर नाच रही थी..पर नग्न आँखो के सामने रूपा थी जो अपनी कीमती जवानी जो समेटे इत्मिनान से सो रही थी ..

उसके उपर नीचे होते सीने को वो बड़ी ही ललचाई हुई नज़रों से देख रहा था .. जग्गा खिसक कर चारपाई के पास आ गया .. उसके चेहरे से सिर्फ़ एक फुट की दूरी पर था रूपा का चेहरा .. उसकी क्लीवेज़ की लकीर को देखकर उसके मुँह मे पानी आ रहा था .. गोल गोल स्तनों के बीचो बीच उसने अपनी नज़रें गाड़ दी..वो उसके स्तनाग्र खोजने की कोशिश कर रहा था की वो इस वक़्त कौनसी जगह पर होंगे ..पर वहाँ का एरिया इतना सपाट सा था की उसे समझ ही नही आ रहा था की वो कहाँ पर है .. उसके मन मे एक विचार आया .. था तो तोड़ा ख़तरनाक पर फिर भी उसने चान्स लेने की सोची ..

वो अपनी उंगली धीरे से उसके स्तन के उपर लेकर आया और बीचो बीच लाकर सहलाने लगा .. रूपा नींद मे ही थोड़ी देर के लिए कुन्मुनाई ... जग्गा ने अपना हाथ फ़ौरन खींच लिया और नीचे होकर सो गया ..

थोड़ी देर मे जब कोई प्रतिक्रिया नही हुई तो वो फिर से उठा और दोबारा अपनी उंगली उसके स्तन के उपर रखकर रगड़नी शुरू कर दी ... और सिर्फ़ दस सेकेंड के अंदर ही उसके स्तनों पर लगे स्तनाग्र उभर कर सामने आ गये ... अब उसने अपनी उंगली हटा ली और बड़े ही प्यार से उसके स्तनों को देखने लगा ..

टी शर्ट के उपर उसके स्तनाग्र अब दूर से ही साफ़ चमक रहे थे ... ऐसा लग रहा था की उसने अपने सीने पर अंगूर के दाने पिरो रखे हैं ..

जग्गा की हिम्मत बढ़ गयी ...उसने उसके उभरे हुए स्तनाग्र अपने अंगूठे और उंगली के बीच फँसाए और उन्हें ज़ोर से भींच दिया और परिणामस्वरूप रूपा एकदम से उछल कर बैठ गयी ..

जग्गा फ़ौरन नीचे लेट गया .. जब तक रूपा की आँखे पूरी खुली वो सोने का नाटक कर रहा था ..गहरे खर्राटे भी मारने लगा ..

रूपा ने अपने सिर को झटका और सोचा की शायद उसने कोई सपना देखा होगा .. पर फिर उसका ध्यान अपने खड़े हुए स्तनाग्रो पर गया , वो खुद पर ही शर्मा गयी की कैसे सपना देखकर भी उसके स्तनाग्र खड़े हो गये हैं ...

वो पानी पीने के लिए उठी .. फिर उसे ज़ोर से पेशाब लगा ...उसने जग्गा को उठाना ठीक नही समझा और अकेली ही बाहर निकल आई ..

झुग्गी कॉलोनी मे किसी के घर पर भी टॉयलेट नही था .. उसके लिए उन्हे बाहर खड़ी लोहे के केबिन्स मे जाना होता था जो सरकार की तरफ से लगवाए गये थे ..

कॉलोनी मे घुप्प अंधेरा था ...वहाँ कोई स्ट्रीट लाइट तो थी नही, किसी किसी के घर से थोड़ी बहुत रोशनी निकल कर आ रही थी, बस रूपा उससे ही रास्ता देखते हुए आगे बड़ने लगी .

जग्गा ने जब देखा की रूपा अकेली ही बाहर निकल गयी है तो वो चिंतित हो उठा, वो भी जानता था की इतनी रात को उसका अकेले बाहर निकलना सही नही है ..वो समझ तो गया था की वो पेशाब करने के लिए ही गयी होगी .. पर वो वक़्त लतिका के आने का भी होने लगा था ..उसने ठीक साढ़े ग्यारह का टाइम दिया था जो लगभग होने ही वाला था .. वो गहरी दुविधा मे पड़ गया की अब क्या करे. .. रूपा के पीछे जाए या लतिका का इंतजार करे ...उसका दिल तो कह रहा था की रूपा को ऐसे अकेला नही जाने देना चाहिए, उसके पीछे जाना चाहिए पर उसका खड़ा हुआ लिंग कह रहा था की पेशाब करने ही तो जा रही है, करके वापिस आ जाएगी..पर एक बार लतिका वापिस गयी तो आज की रात उसे बिना योनी मारे ही सोना पड़ेगा.

आख़िर उसने अपने दिल की बात ना मानते हुए अपने खड़े हुए लिंग की बात मान ली और वहीं बैठकर लतिका का इंतजार करने लगा, उसे चिंता थी की कहीं पीछे से लतिका आए और उसे घर मे ना पाकर वापिस चली गयी तो उसके लिंग का क्या होगा, आगे के लिए भी लतिका नाराज़ हो जाएगी और उसके हिस्से कुछ भी नहीं आएगा.

उधर रूपा काफ़ी तेज़ी से चलती जा रही थी, उसे बड़ी ज़ोर से पेशाब लगा था उस वक़्त..आख़िर वो उस जगह पहुँच ही गयी जहा वो पोर्टेबल टॉयलेट्स बने हुए थे.

वो उपर चढ़ी तो देखा की उसके उपर ताला लगा हुआ है ..उसने सारे टॉयलेट चेक कर लिए पर सभी मे ताला लगा हुआ था .

वो परेशान हो उठी..उसे बड़ी ज़ोर से पेशाब लगा था, उससे रुका नही जा रहा था ..उसने अपनी नज़र इधर उधर घुमाई और जब वो निश्चिन्त हो गयी की कोई भी उसको नही देख रहा है तो वो एक कोने मे जाकर अपना पायजामा नीचे करते हुए ज़मीन पर ही बैठ गयी और उसकी योनी से गर्म पानी की तेज बौछार बाहर की और निकलने लगी.

वो पेशाब कर ही रही थी की अचानक उसकी आँखो के सामने एक आदमी आकर खड़ा हो गया और उसने एक ही झटके मे अपनी पैंट की जीप खोली और अंदर से काले नाग जैसी शक्ल का लिंग उसके चेहरे के सामने परोस दिया .

रूपा की तो गिघी बंध गयी...एक तो अंधेरे की वजह से पहले ही उसकी फटी हुई थी, अपनी आँखो के सामने अचानक आई मुसीबत को देखकर उसकी समझ मे नही आया की वो करे तो क्या करे .. वो जड़वत सी होकर वहीं बैठी रह गयी ..उसकी आँखे और मुँह भय के मारे खुले

के खुले रह गये ..

वो नज़ारा था भी काफ़ी भयानक सा, एक तो अंधेरा घुप्प और उपर से वो लिंग भी इतना लंबा और काला...और उसमे से आ रही गंदी दुर्गंध उसे नथुनों मे जाकर उसका साँस लेना भी दुर्भर कर रही थी .. वो जैसे ही खड़ी होने लगी, उस आदमी ने अपने कठोर हाथों का प्रयोग करते हुए उसे वहीं के वहीं बिठा दिया ...और वो कुछ समझ पाती इससे पहले ही उस आदमी ने अपना मोटा लिंग उसके चेहरे के पास लेजाकर उसके मुँह के अंदर घुसेड़ने की कोशिश की, रूपा ने अपना मुँह एकदम से भींच लिया, ताकि वो कुछ भी ना कर सके.

पर वो इंसान भी काफ़ी तेज तर्रार था , उसने अगले ही पल नीचे झुककर उसके स्तन पकड़े और ज़ोर से पीछे की तरफ खींच दिया, रूपा के मुँह से एक जोरदार चीख निकल गयी...पर अगले ही पल वो चीख दब कर रह गयी जब उस आदमी ने उसके खुले हुए मुँह के अंदर अपना लिंग ठूस कर उसे बंद कर दिया

रूपा बेचारी वहीं फड़फडा कर रह गयी, दुर्गंध से भरा हुआ लिंग उसके मुँह के अंदर था, वो साँस भी नही ले पा रही थी, अपने मुँह मे इकट्ठी हुई थूक को भी नही निगल पा रही थी क्योंकि वो लिंग था ही इतना मोटा जैसे कोई भुट्टा उसके मुँह के अंदर डाल कर उसे बंद कर दिया गया हो...

उसने बड़ी मुश्किल से साँस लेते हुए अपनी थूक निगली और उसके साथ ही उस आदमी को अपने लिंग पर पहली चुसाई नसीब हो गयी.

एक दो बार चूसने के बाद वो थोड़ा नॉर्मल हुई..पर जैसे ही वो उस लिंग को बाहर निकालने लगी, वो आदमी गुर्राया : "चुपचाप चूसती रह साली ....वरना यही मार दूँगा .."

और इसके साथ ही उसने अपने हाथ मे पकड़ी हुई रिवॉल्वर उसके सिर पर लगाई और उसे जान से मारने की धमकी दी.

वो इंसान और कोई नही, जावेद था, जो अक्सर रात के समय अपने दोस्तों के साथ मिलकर सरकारी टॉयलेट्स पर ताले लगा देता था, ताकि झुग्गी की औरतें बाहर पेशाब करें, और जब वो औरतें पेशाब कर रही होती थी तो उन आधी - नग्न औरतों की लाचारी का लाभ उठाकर वो उन्हें पेल सके ..और इस कार्य मे वो अक्सर सफल भी होते थे ...

आज जब जावेद ने देखा की रूपा जल्दबाज़ी मे पेशाब करने के लिए उसी तरफ आ रही है तो उसकी बाँछे खिल उठी...

उसने जल्दी से अपने चेले-चपाटों को वहाँ से भगा दिया, क्योंकि जब से उसने रूपा को नहाते हुए छेड़ा था, उसके अंदर उसे पेलने की खुरक मची हुई थी...वो आज किसी भी हालत मे उसकी जवानी का रसपान करना चाहता था ..

उसके चेले उसकी बात मानकर वहाँ से भाग गये, और जैसे ही रूपा पेशाब करने के लिए वहाँ बैठी, वो अपना लिंग झूलाता हुआ उसके सामने पहुँच गया.

रूपा को इन सबका कोई ज्ञान नही था...या ये कह लो कोई ज्ञान रह नही गया था उसकी यादाश्त गूमने के बाद ...

उसके मुँह के अंदर लिंग था , पर उसका करना क्या है वो नही जानती थी, साँस लेने की ज़रूरत मे वो कब उस लिंग को चूसने लगी, उसे भी नही पता चला, उसे बस इतना पता था की जब तक वो उस लिंग को चूस रही है वो आदमी सिसकारियाँ ले रहा है, यानी उसे मज़ा मिल रहा है ..जब भी वो बीच मे रुकती वो उसके बालों को ज़ोर से पकड़कर खींचता ..और फिर से उसकी कनपटी पर पिस्टल लगा देता.

जावेद तो स्वर्ग मे उड़ रहा था, रूपा के मुलायम होंठ और गर्म जीभ का एहसास उसके लिंग को ऐसा तडपा रहे थे की उससे सब्र नही हो रहा था ...वो अक्सर अपने शिकार से पहले अपना लिंग चुस्वाता और फिर बाद में उसकी योनी मारता ...

पर आज तो उसका मन ही नही कर रहा था की रूपा के मजेदार मुँह से अपना लिंग बाहर निकाले..वो झटके पर झटके दिए जा रहा था उसके मुँह के अंदर ...

अचानक उसे महसूस हुआ की वो अब और कंट्रोल नही रख पाएगा अपने उपर ...उसने सोचा की चलो पहले इसके मुँह के अंदर ही अपना माल निकाल लेते हैं, उसके बाद फिर से अपना लिंग चुस्वा कर खड़ा करवा लूँगा और फिर इसकी ठुकाई करूँगा जी भर कर ..

इतना सोचते सोचते उसके लिंग से गरमा गरम वीर्य की पिचकारियाँ निकलकर रूपा के मुँह मे जाने लगी ...रूपा को उल्टी सी आने को हो गयी जब उसके मुँह मे एकदम से इतना वीर्य इकट्ठा हो गया ...उसने खाँसते हुए जावेद का लिंग बाहर धकेल दिया ... पर जावेद भी कहाँ मानने वाला था, उसने बची हुई पिचकारियों से उसके चेहरे को पूरी तरह से रंग दिया .....

बेचारी रूपा कुछ भी ना कर पाई ..

उसके बाद जावेद ने उसके बाल पकड़कर उसे उठाया और उसे साथ की ही दीवार से सटा कर खड़ा कर दिया, वो कुछ सोच पाती इससे पहले ही जावेद ने अपना मुँह आगे किया और उसके नर्म मुलायम होंठों को अपने मुँह मे दबोच कर जोर जोर से चूसने लगा .... वो कसमसा कर रह गयी... पर अगले ही पल उसके मुँह से एक जोरदार सिसकारी निकल गयी क्योंकि जावेद का पंजा सीधा उसकी नग्न योनी पर आ चिपका था ..उसका पायजामा अभी तक उसके घुटनों के नीचे था, और पेशाब करने की वजह से उसकी योनी अभी तक गीली थी ...

जैसे ही जावेद ने अपना पंजा वहाँ रखा, उसने अपनी एक उंगली सीधी करते हुए उसकी योनी

के अंदर घुसेड दी जिसकी वजह से रूपा के मुंह से सिसकारी निकल गयी थी ...

अपने अंदर आए नये मेहमान को देखते ही रूपा की योनी की दीवारों ने रस बरसाना शुरू कर दिया और एक ही पल मे उसकी योनी मीठे शरबत से सराबोर होकर टपकने लगी ..

जब तक वो जावेद का लिंग चूस रही थी, उस वक़्त तक सिर्फ़ जावेद को भी मज़े मिल रहा थे ...पर जैसे ही जावेद ने रूपा की योनी के अंदर अपनी उंगली डाली,उसके अंदर छुपी हुई औरत को मज़े मिलने शुरू हो गये ...जहाँ पहले उसके मुँह से चीखे निकल रही थी अब वहीं उसके मुँह से सिसकारियाँ निकलने लगी थी .

जावेद तो पहले से ही जान चुका था की ये लड़की काफ़ी गर्म है, क्योंकि जब उसने नदी मे भी उसकी योनी के अंदर उंगलियाँ डाली थी तो उसके चेहरे और आँखों मे जो गुलाबीपन आया था, वो अभी तक भूला नही था, शायद इसलिए उसकी हिम्मत आज इतनी हो गयी थी की वो उसे ऐसी हालत मे पहुँचा कर मज़े ले रहा था.

जावेद ने उसके होंठों को चूसते हुए अपने लिंग से निकले पानी का भी स्वाद चख लिया ...उसके मीठे होंठों को चूसकर उसे जो तृप्ति मिली थी, वो आज तक किसी को पेलकर भी नही मिली थी ...उसने अपनी उंगलियों की थिरकन उसकी योनी के अंदर और तेज कर दी ..और परिणामस्वरूप रूपा ने उसके चेहरे को ज़ोर से दबोचा और भूखी शेरनी की तरह टूट पड़ी उसके होंठों पर ...

घनी दाढ़ी - मूँछ के होते हुए भी वो उसके होंठों को ऐसे चूस रही थी जैसे उनमे से अमृत निकल रहा हो...उसकी मूँछ के स्तन भी उसके मुँह मे जा रहे थे पर उसे कोई फ़र्क ही नही पड़ रहा था, उसपर तो जैसे कोई भूत सवार हो गया था ...वो सब कुछ भूलकर बड़ी बेदर्दी से जावेद को चूसने मे लगी हुई थी .

जावेद ने अपना लटका हुआ लिंग उसके हाथ मे दे दिया और उसे उपर नीचे करते हुए उसे इशारे से समझाया की ऐसे करती रहो ...और फिर उसके हाथ मे अपने लिंग को छोड़कर उसने अपने हाथ उपर किए और उसके स्तनों पर लगा कर उन्हे दबाने लगा .

ये सब करते हुए वो सोच रहा था की जग्गा की किस्मत भी क्या है, साले लंगड़े भिखारी को ऐसी गर्म औरत मिली है, उसके तो मज़े ही हो गये .

वो ये सोच ही रहा था की अचानक उसके कानों मे जग्गा की आवाज़ आई ..

वो झोपड़े के अंदर से ही ज़ोर जोर से चिल्लाता हुआ रुपा को आवाज दे रहा था ..

"रूपाआआआ आआआआ ..... कहाँ हो तुम ..... रूपाआआआआ "

जावेद का खड़ा होता हुआ लिंग अचानक फिर से बैठ गया....उसे तो इतना गुस्सा आया की मन तो करा की वहीं के वहीं जग्गा को ठोक डाले ...

पर वो कोई बखेड़ा नही चाहता था ...उसने जल्दी से अपने लिंग को अंदर ठूँसा और रूपा के चुंगल से अपने आप को बड़ी मुश्किल से छुड़वाया ...वो तो उसकी उंगली को अपनी योनी से निकालने को तैयार ही नही थी ..जग्गा की खुरदूरी और मोटी उंगली जब घस्से लगाती हुई बाहर आने लगी तो वो अपनी उत्तेजना की चरम सीमा पर पहुँच गयी....वो जावेद  के बदबूदार होंठों को आइस्क्रीम की तरह चाटने लगी..उन्हे चूसने लगी...पर जावेद अब वहाँ रूककर फँसना नही चाहता था, उसने रूपा को धक्का दिया और अंधेरे का लाभ उठाते हुए वहाँ से भाग निकला.

रूपा को मज़ा मिलते मिलते रह गया...जब जावेद ने नदी मे उसकी योनी की मालिश की थी, तब भी उसकी हालत बुरी हो गयी थी और आज भी जब उसने उसके जिस्म को ऐसे मज़े दिए ... पर वो झड़ नही पाई थी. अपने शरीर को मिले अधूरे मज़े की वजह से वो बेचारी वहाँ बुत सी बनकर खड़ी रह गयी ...

वो तो जानती भी नही थी की आज भी उसके शरीर के साथ खिलवाड़ करके मज़े देने वाला जावेद  ही था ..

# ५

रूपा वापस झोपड़े में पहुँच चुकी थी. लतिका और जग्गा उसवक्त झोपड़े में ही मौजूद थे.रूपा बाहर रुक गयी.वो छुप कर उन्हे देख रही थी ..पहले जब जग्गा और लतिका मिले थे तो उसकी समझ मे नही आया था की इतनी रात को लतिका घर क्यो आई है..पर जब दोनो यहाँ पहुँचे और अब एक दूसरे को ऐसे चूम रहे हैं तो उसकी समझ मे सब आ गया...

वो अगर जग्गा की असली पत्नी होती या उसकी यादश्त सही होती तो वो उसी वक़्त उनका भांडा फोड़ देती ...पर उसकी समझ से वो सब बाते परे थी ..इसलिए वही छुपकर उनका तमाशा देखने लगी ...

वैसे इस तरह के सहवास के किस्से उसे उत्तेजित ही करते थे ...पिछले दो दिनों मे जिस तरह से जग्गा के साथ रहते हुए और आज रात को उस अंजान आदमी से अपनी योनी मसलवा कर जो मज़े उसे मिले थे,वो उसे अंदर तक रोमांचित कर रहे थे..

इसलिए उन दोनो को प्यार करते देखकर वो फिर से उसी रोमांच से भर उठी और उसका हाथ अपने आप फिर से अपनी योनी की तरफ बढ़ गया.

जग्गा और लतिका से भी सब्र नही हो रहा था ...ख़ासकर लतिका से..उसकी योनी की आग आजकल इतनी भड़की हुई थी की दिन मे दो-चार बार जब तक वो इधर उधर से ठुकवा नहीं लेती थी उसको चैन ही नही पड़ता था...और जग्गा से ठुकाई तो उन सभी के आगे फीकी थी..इसलिए उसके लिंग को लेने का सोभाग्य वो नही छोड़ना चाहती थी ...उसने अपनी चोली और घाघरा एक ही झटके मे उतार फेंका ..नीचे से वो पूरी तरह से नग्न थी ..

हल्की रोशनी मे उसका संगमरमर का जिस्म सोने की तरहा चमक रहा था ..

जग्गा ने भी अपनी धोती और कुर्ता उतार फेंका और वो भी पूरी तरह से नग्न हो कर अपने लिंग को मसल कर उसके मखमली बदन को देखने लगा..

लतिका धीरे धीरे चलती हुई उसके सामने आकर किसी कुतिया की तरह बैठ गयी और अपनी नितंब हवा मे उठा कर , अपना सिर नीचे करते हुए उसने जग्गा के लिंग को अपने मुँह मे भरकर एक जोरदार चुप्पा मारा

जग्गा की सिसकारी पूरे झोपड़े मे गूँज गयी..

कोने मे छुपी हुई रूपा तो जैसे वो सब देखकर कुछ सीखने की कोशिश कर रही थी ..

जिस तरहा से लतिका लिंग चूस रही थी, रूपा के होंठ भी गोल मुद्रा मे आकर हवा मे ही उपर नीचे होने लगे...जैसे वो कोई अद्रिश्य लिंग को चूस कर उसका मज़ा ले रही हो ..पर साथ ही साथ उसके हाथ अपनी योनी की मालिश करना भी नही भूल रहे थे ..उनपर भी उसकी उंगलियों की थिरकन उसी अंदाज मे हो रही थी जिसमे उसके मुँह की हरकत..

जग्गा ने लतिका के स्तन पकड़ कर बड़ी ही बेदर्दी से उपर की तरफ खींचे और वो कराहती हुई सी उपर की तरफ चली आई...और दोनो वहशियों की तरह एक दूसरे को चूमने लगे..चूसने लगे

जग्गा का घनघनाता हुआ लिंग लतिका के पेट और फिर योनी को टच करने लगा .. लतिका की तो हालत ही खराब होने लगी जब उसका दहकता हुआ सरिया उसकी योनी की भट्टी के इतने करीब पहुँच गया ..वो अपनी योनी को उसके सरिये पर रगड़ने लगी ..ताकि उसके अंदर की आग थोड़ी शांत हो जाए..पर ऐसी रगडाई से तो उसके अंदर के अंगारे और भी ज़्यादा भड़क कर शोले बन गये ..और वो बावली बंदरिया की तरह उछल उछल कर उसके लिंग को अंदर लेने की असफल कोशिश करने लगी..

पर जब तक आदमी ना चाहे औरत उसका लिंग किसी भी तरह से अंदर नही ले सकती ..

उसने लाख कोशिश कर ली पर जग्गा अपने लिंग को इधर-उधर करके उसे अंदर जाने से रोक रहा था...वो उसे और भी ज़्यादा तडपा रहा था ..क्योंकि औरतें जितनी ज़्यादा तड़पति है वो ठुकाई मे उतना ही मज़ा देती है ..ये जग्गा अच्छी तरह से जानता था .

झोपड़े मे छाए हुए सन्नाटे मे सिर्फ़ उन दोनो की सिसकारियाँ ही गूँज रही थी ...पर एक हल्की सी सिसकारी दूसरे कोने से भी आनी शुरू हो गयी थी...रूपा की.

जो अपनी योनी को मसलते मसलते उसे नग्न कर चुकी थी ..और अब वो भी वहीं ज़मीन पर बैठकर अपनी योनी को खोलकर बुरी तरह से मूठ मार रही थी ..

जग्गा ने एक ही झटके मे लतिका को बिस्तर पर पटक दिया और उसकी दोनो टांगे पकड़कर उसकी योनी को चूसने लगा...

वो तो उसके लिंग के लिए तड़प रही थी...पर जैसे ही अपनी योनी पर उसके गीले होंठ आकर लगे, लतिका को ऐसा महसूस हुआ की उसकी सुलगती हुई योनी पर किसी ने पानी का छींटा मारकर उसे ठंडक पहुँचा दी है ..वो उसके सिर को अपनी मुनिया के अंदर घुसेड कर ज़ोर से चीत्कार उठी ...

"अहह .....जग्गा..... खा जाअ मेरे योनी ..... को ....अहह.....चूऊऊस ले इसको ....."

और जग्गा तो था ही इन मामलो मे उस्ताद .....उसने उसकी योनी की एक एक परत को अपनी जीभ और दांतो से कुरेद कुरेद उसके अंदर छुपा हुआ शरबत पीना शुरू कर दिया..

पर अक्सर देखा गया है की औरत की उत्तेजना जब अपने चरम पर पहुँच जाती है तो वो ये नही देखती की वो कैसे और किसके साथ मज़े ले रही है...बस मज़े मिलने चाहिए..

वैसे ये बात आदमी पर भी लागू होती है ...और शायद औरत से ज़्यादा..

जग्गा ने लतिका की योनी की सारी मलाई खाने के बाद उसे पलट कर घोड़ी बनाया और खुद उसके पीछे जाकर अपने लिंग को घुसेड़ने लगा..

योनी पूरी तरह से सूख चुकी थी ..इसलिए लिंग को जाने के लिए जगह नही मिल पा रही थी ..

लतिका : "जग्गा....मेरे राज्जा ....मुझे लिटा दे और आगे से पेल ले ...ऐसे नही जाएगा आसानी से...या फिर मुझे उपर आने दे ..."

जग्गा : "चुप कर साली .... तेरी ठुकाई घोड़ी की तरह से ना की तो मज़ा ही नही मिलेगा..."

इतना कहकर उसने अपने लिंग पर ढेर सारी थूक मली और फिर से उसकी नितंब को उचका कर उपर करते हुए उसकी योनी पर अपना लिंग रख दिया...और एक जोरदार झटके के साथ उसके अंदर दाखिल हो गया..

लतिका जैसी वेश्या भी चिल्ला उठी उसके इस प्रहार से...उसकी योनी की दीवारों की धज्जियाँ उड़ाता हुआ उसका लिंग अंदर तक जाकर धँस गया..और फिर उसने उसकी फैली हुई नितंब को पकड़ा और जोर जोर से धक्के मारकर उसकी ठुकाई करने लगा..

उधर जग्गा घोड़े ने भी काफ़ी दूरी तय कर ली थी अपनी घोड़ी लतिका पर बैठकर... और वो बस अपनी मंज़िल पर पहुँचने ही वाला था...उसने भी घोड़े की तरह से हिनहिनाते हुए अपना सारा रस उसकी योनी के लॉकर मे जमा कर दिया और ओंधा होकर उसपर गिर पड़ा..

बेचारी लतिका का तो बुरा हाल था...घोड़े जैसे जग्गा से ठुकाई करवाकर वो हमेशा २-३ बार तो झड़ ही जाती थी ...आज भी ठुकाई करवाते हुए वो ३ बार झड़ चुकी थी ..

रूपा तो कब की निकल चुकी थी . लतिका भी अपने कपड़े पहन कर  झोपड़े से निकल गयी..इस मेहनत भरी कसरत के बाद जग्गा भी वही बिस्तर पर ढेर हो गया .इस बात से अंजान की रूपा अबतक लौटके नही आई है.

पूरी कॉलोनी मे किसी को भी पता नही चला की वहाँ क्या हुआ था..

पर रूपा के जीवन मे एक अजीब सी उथल पुथल मच चुकी थी ...उसे अब पता चल चुका था की लिंग और योनी से मिलने वाले मज़े ही असली मज़े हैं....किस तरह से उस अंजान इंसान ने उसकी योनी को मलकर उसे उत्तेजित किया था...कैसे जग्गा और लतिका एक दूसरे के अंदर घुस कर मज़े ले रहे थे ...और किस तरह से उसने अपनी योनी मलकर मज़े लिए थे ...

कुल मिलाकर उसकी आँखे खुल चुकी थी अब...वो जान गयी थी की काम क्रिया से मिलने वाले मज़े ही असली मज़े हैं...और अब वो किसी भी हालत मे ऐसे मज़े लेने से पीछे नही हटेगी..

ये सोचते सोचते कब वो झोपड़े में आ गई और कब उसकी आँख लग गयी उसे भी पता नही चला.

# ६

अगले दिन सुबह के ९ बजे किसी ने जग्गा के झोपडे का दरवाजा जोर जोर से खड़काया... जग्गा अपनी देर रात की ठुकाई के बाद इतना थक चुका था की वो घोड़े बेचकर सो रहा था..रूपा भी देर से सोई थी , पर औरतों की नींद ज़्यादा कच्ची होती है, इसलिए वो अपनी आँखे मलते हुए उठ गयी और बाहर निकलकर दरवाजा खोला .

बाहर जावेद  खड़ा था..

उसको तो कल रात से ही चैन नही मिल रहा था, जब से उसने रूपा की योनी को मसला था वो अपनी उंगलियों को सूँघकर और चाटकर उसकी योनी की खुशबू को अपने जहन मे पूरी तरह से उतार चुका था...और उसने कसम खा ली थी की जब तक वो उसकी योनी के अंदर अपना रामपुरिया लिंग नही पेल देगा, चैन से नही बैठेगा..

उसने अपने दोस्तो के साथ मिलकर एक योजना बनाई और उसी के अंतर्गत वो इतनी सुबह जग्गा की झोपड़ी मे पहुँच गया था.

अपनी रानी को देखकर वो खुश हो उठा..रूपा ने जो टी शर्ट पहनी हुई थी, उसके अंदर ब्रा नही थी, सुबह का वक़्त था, जिस तरह से आदमी का लिंग खड़ा होता है , उसके स्तनाग्र खड़े हुए थे..जिन्हे देखकर जावेद की आँखों मे चमक बड़ गयी.

रूपा उसका नाम तो नही जानती थी पर दो दिन पहले जब वो नहाने गयी थी तो उसने जिस तरह के मज़े दिए थे वो उसे अच्छी तरह से याद थे ..वो मज़े याद आते ही उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गयी, आँखों मे गुलाबीपन उतर आया और स्तनाग्र थोड़ा और कड़क हो उठे.

अभी तो उस बेचारी को पता नही था की कल रात को उसकी योनी को मसलकर मज़े देने वाला अजनबी भी वही था, वरना उसकी उत्तेजना अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती ..और स्तनाग्र के साथ साथउ सकी योनी भी गीली हो जाती.

रूपा : "जी कहिए....क्या बात है ..."

जावेद : "नमस्ते भाभी ....मेरा नाम जावेद  है ...वो ....जग्गा से कुछ काम था ...."

रूपा : "वो तो अभी सो रहे हैं ....थोड़ी देर बाद मे आ जाना ..."

जावेद : "इतनी देर हो गयी, अभी तक सो रहा है ....आप ज़रा उठा दो ना, ज़रूरी काम है ..."

रूपा असमंजस की स्थिति मे आ गयी...और उसे वहीं खड़ा रहने को कहकर अंदर आ गयी..

उसने जग्गा की तरफ देखा, जो खर्राटे मारकर सो रहा था ..उसके पास कोई चारा भी नही था, उसने जग्गा को हिलाकर आवाज़ दी और उसे उठा दिया . और कहा की बाहर कोई मिलने आया है ..

जग्गा आँखे मलता हुआ बाहर निकला ...और जावेद को वहाँ खड़ा देखकर वो चोंक गया...दोनो की कभी बनती नही थी...कई बार दोनो के बीच लड़ाई की नौबत आ चुकी थी...इसलिए दोनो मे बोलचाल बंद थी .

जग्गा : "तू यहाँ क्या कर रहा है ...मुझसे क्या काम आ गया ..."

जावेद : "यार जग्गा, तू मुझे हमेशा ग़लत समझता है.... मैं वही ग़लतफहमी दूर करने आया हू..."

जग्गा : "एक दम से ऐसी महरबानी करने की क्या वजह है .."

जावेद : "मेरे पास तेरे लिए एक काम है, और उसको तेरे सिवा कोई और पूरा नही कर सकता ..."

जग्गा समझ गया की कोई ग़ैरक़ानूनी काम ही होगा, क्योंकि वो अंडरवर्ल्ड के लिए काम जो करता था ..

जग्गा : "क्या काम है .."

जावेद : "एक पैकेट लाना है ...सेंट्रल मार्केट से ...इसके लिए पूरे दस हज़ार मिलेंगे.."

जग्गा : "क्या है उस पैकेट में ..और ये काम तू मुझसे क्यो करवा रहा है...तेरे पास भी तो आदमी है .."

जावेद : " उस पोकेट मे क्या है, ये तो मैं नही बता सकता,तभी इतने पैसे दे रहा हू तुझे...और मेरे सारे आदमियों पर पुलिस की नज़र है, इसलिए मैं कोई रिस्क नही लेना चाहता ..तुझपर कोई शक भी नही करेगा..भिखारियों की तो तलाशी भी नही लेती पुलिस ..ये ले सारे पैसे एडवांस मे ..."

इतना कहकर उसने सौ के नोट की गड्डी लहरा दी उसके सामने..

इतने पैसे एक साथ देखकर वो इनकार कर भी नही सका...उसने पैसे पकड़ लिए और ज़रूरी

जानकारी लेकर वापिस अंदर आ गया..

जावेद काफ़ी खुश था अपनी इस चाल से...वो काम तो उसका कोई भी आदमी कर सकता था..और उसके लिए पैसे भी उतने ही खर्च होते..पर जग्गा से वो काम करवाने का उसका मकसद उसके साथ दोबारा दोस्ती करना था ताकि उसके घर आने-जाने का रास्ता उसके लिए खुल सके..

और साथ ही साथ उसके जाने के बाद अकेली रूपा से मज़े लेना का भी प्लान था उसका ...

क्योंकि कहीं ना कहीं वो समझने लगा था की जग्गा शायद रूपा जैसी गर्म बीबी को पूरी तरह से संतुष्ट करने मे कामयाब नही है...इसलिए तो उसके साथ हुई दो मुलाक़ातों मे रूपा ने जिस तरह बिना कोई विरोध के उसे अपने शरीर से खेलने दिया है, वो कोई वेश्या टाइप की औरत ही कर सकती है..

पर वो ये बात नही जानता था की जग्गा के लिंग मे इतनी ताक़त है की वो पूरी कॉलोनी की लड़कियों को एक साथ पेल डाले...फिर भी उसके लिंग का लोहा ना पिघले..

९ बज रहे थे और वहाँ से पॉकेट लेने का समय १२ बजे का था.. जाने में काफी समय लगना था इसलिए जग्गा बिना कुछ खाए-पिए और नहाए धोए उसी वक़्त निकल गया.

रूपा को उसने घर पर ही रहने के लिए बोला..और उसे कुछ पैसे देकर ये भी कहा की बाहर से खाने के लिए कुछ लेती आए..

जग्गा के जाने के बाद रूपा ने सारे बिस्तर समेट कर सही किए..और फिर अपने कपड़े लेकर वो वहीं नदी पर नहाने के लिए निकल पड़ी..उसने पैसे भी ले लिए थे ताकि वापिस आते हुए कुछ खाने को भी लेती आए.

जावेद तो उसी इंतजार मे था की कब जग्गा बाहर निकले और कब वो अपनी योजना के अनुसार फिर से वहाँ जाए..पर रूपा को हाथ मे कपड़े लेकर निकलता देखकर वो समझ गया की वो नहाने के लिए जा रही है ..

उसके दिमाग़ मे उसी वक़्त नयी योजना बन उठी और उसने अपने चेले चपाटो को फोन करके जल्द से जल्द नदी किनारे पहुँचने को कहा..

वो भी अपनी बाइक पर वहाँ पहुँच गया..९:३० बज रहे थे, ज़्यादातर लोग सुबह ही नहा लेते थे,इसलिए भीड़ वैसे भी कम थी .. उसने अपने चेलों के साथ मिलकर, रिवॉल्वर की धोंस दिखाते हुए वहाँ नहा रहे सभी लोगो को पाँच मिनट के अंदर ही अंदर वहाँ से भगा दिया...सभी उससे और उसके साथियों से डरते थे, इसलिए बिना किसी विरोध के सभी अपने अपने झोपड़ों मे भागते चले गये..

उसने अपने आदमियों को थोड़ा दूर खड़ा कर दिया, ताकि वहाँ किसी की भी एंट्री ना हो..और फिर जावेद अपने सारे कपड़े उतार कर जल्दी से पानी मे कूद गया.

तब तक रूपा वहाँ पहुँच गयी..वहाँ फैले सन्नाटे को देखकर वो भी हैरान हो गयी...क्योंकि उसने सोचा नही था की ऐसी वीरानी मिलेगी उसको नहाते हुए ..तभी उसे जावेद  नहाता हुआ दिख गया पानी मे..उसे देखकर उसके दिल की धड़कन फिर से तेज हो उठी ..वो सोचने लगी की ऐसी परिस्थिति मे वो नहाने जाए या वापिस चली जाए..

वो पलटकर जाने ही लगी थी की जावेद ने पीछे से आवाज़ दी : "अरे भाभी जी....बिना नहाए कहाँ चल दी ..मुझसे डर लग रहा है क्या ..."

उसकी बात सुनकर रूपा भी तैश मे आ गयी, और बोली : "मुझे क्यो डर लगने लगा तुमसे ..."

और फिर अपने कपड़ों को किनारे पर रखकर वो पानी मे उतर गई...उसने टी शर्ट और पायजामा पहना हुआ था ... टी शर्ट के नीचे उसकी ब्रा तो नही थी..इसलिए गीली होने के साथ ही उसके हीरे चमकने लगे उसकी टी शर्ट के उपर..जिन्हे देखकर जावेद की आँखों मे चमक आ गयी..

वो रूपा के आस पास ही तैरने लगा ...रूपा भी उस दिन के बारे मे सोचकर गर्म होने लगी थी की क्या ये आज फिर से उसके साथ वही हरकत करेगा जो उस दिन की थी ...

वैसे भी कल रात को झोपड़े मे हुई घटना ने उसके दिल मे औरत और मर्द के बीच के संबंधों को जिस तरह पूरी तरह से खोलकर पेश किया था, उसे समझ आने लगा था की दोनो का आपस मे क्या और कैसे संबंध होता है..

पर वो बेचारी ये बात नही जानती थी की इस दुनिया मे हर किसी के साथ वो संबंध कायम नही किए जाते...

जावेद भी उसकी यादश्त खो जाने वाली बात से अंजान था, वरना वो अब तक उसकी ठुकाई कर भी देता..वो तो सिर्फ़ जग्गा के डर से अपने सारे कदम सोच समझ कर उठा रहा था..और वो ये चाहता था की रूपा की तरफ से ही कोई पहल हो, ताकि उसके उपर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती का इल्ज़ाम ना लगा सके.

और वो इतने मस्त महंगी शराब को ज़ोर ज़बरदस्ती से नही , बल्कि धीरे धीरे मज़े लेकर उसका पीना चाहता था...इसलिए उसने जग्गा को पैसे देकर दिन भर के लिए दूर भेज दिया, ताकि पीछे से उसकी बीबी के साथ मज़े ले सके..

जावेद ने कोई भी कपड़ा नही पहना हुआ था,वो पूरा नग्न होकर नहा रहा था..उसने मन मे सोचा की शायद उसका लिंग देखकर रूपा के दिल मे उसके लिए कुछ और भावनाए पैदा हो जाए..इसलिए वो थोड़ा किनारे की तरफ आ गया, जहाँ पानी उसकी कमर से नीचे था..

अब उसका लिंग साफ़ दिख रहा था ...पूरा खड़ा हुआ था वो उस वक़्त...वो साबुन लेकर अपने लिंग पर मलने लगा..

पर रूपा की नज़र अभी तक वहाँ नही पड़ी थी ...वो अपनी ही मस्ती मे दूसरी तरफ देखती हुई नहा रही थी ..

जावेद ने थोड़ा आगे बढ़ने की सोची और बोला : "भाभी ...ज़रा यहाँ आकर मेरी पीठ पर साबुन लगा दोगी ..."

रूपा ने पलटकर उसकी तरफ देखा..और उसे ऐसी हालत मे बैठे देखकर उसकी आँखे फटी रह गयी..पर उसने कोई प्रतिक्रिया ना दिखाते हुए उस तरफ आना शुरू कर दिया..जावेद एक छोटी सी चट्टान पर बैठ गया..और पीछे मुड़कर उसने रूपा को साबुन दे दिया.

रूपा ने साबुन लिया और उसकी पीठ पर लगाने लगी.

जावेद की खुशी की कोई सीमा ही नही रही..वो समझ गया की ये चालू टाइप की शादीशुदा औरत है..जो दूसरे मर्दों के साथ मज़े लेती हैं..

रूपा बेचारी तो वो सब इसलिए कर रही थी की उसे इन बातों की कोई जानकारी नही थी...उसे तो पता भी नही था की ऐसे गैर मर्द की पीठ पर साबुन लगाना कितना बुरा समझा जाता है उस समाज मे..ख़ासकर जब सामने वाला मर्द नग्न हो.

वो तो अपने अबोधपन मे उसकी पीठ पर साबुन लगा रही थी..पर ऐसा करते हुए उसके अंदर की औरत बुरी तरह से उत्तेजित होती जा रही थी ..उसपर कैसे कंट्रोल किया जाए, ये रूपा को नही पता था.

जावेद तो पूरा नग्न बैठा था..उसने अपनी बेशर्मी का परिचय देते हुए बिना किसी चेतावनी के अपना चेहरा रूपा की तरफ कर दिया..और अब उसका गठीला शरीर उसके सामने था और साथ मे था उसका तगड़ा लिंग भी ..

जावेद की नज़रें उसकी गीली टी शर्ट पर चमक रहे हीरे जैसे स्तनाग्र पर थी..उसका मन तो कर रहा था की अपने हाथों मे लेकर उसके उरोजों को मसल डाले..उनपर लगे हुए स्तनाग्र को अपने दाँतों के बीच लेकर चूस ले..पर अपने उपर कंट्रोल करते हुए उसने काँपते हुए हाथों से रूपा के हाथ मे साबुन दिया..

रूपा की नज़रें उसके खड़े हुए लिंग से चिपकी हुई थी..उसके कठोर लिंग को देखकर उसके दिल मे अजीब सी बेचैनी हो रही थी..

अपने लिंग को ऐसे घूरते देखकर जावेद ने रूपा से कहा : "क्या देख रही हो भाभी जी .."

रूपा : "देख रही हू, तुम कुछ ज़्यादा ही बेशर्म होकर नहा रहे हो मेरे सामने...उस दिन तो ऐसे नही नहा रहे थे.."

जावेद : "भाभी जी, नहाने का मज़ा तो कपड़े उतारकर ही आता है...और उस दिन काफ़ी भीड़ थी ना इसलिए ऐसे नही नहा सके, पर आज देखिए, हमने ये नहाने की जगह आपके लिए पूरी तरह से खाली करवा दी है .."

उसने मुँह से अचानक अपनी बड़ाई करते हुए सच निकल गया.

रूपा : "अच्छा ...तो यहाँ नहा रहे लोगो को आपने भगा दिया है...तभी मैने सोचा की इतना सन्नाटा तो नही होना चाहिए यहाँ ..."

जावेद (हंसते हुए) : "अरे भाभी ....आपके लिए तो हम पूरा शहर खाली करवा दे ...ये नदी क्या चीज़ है .."

उसने दिल फेंक अंदाज मे रूपा से कहा, जिसे सुनकर वो भी हँसने लगी...और हंसते हुए अचानक उसके हाथ साबुन लगाते लगाते उसके लिंग पर पहुँच गये ..

जावेद ने तो सोचा भी नही था की वो ऐसे खुलकर उसके लिंग को पकड़ लेगी..

पर रूपा अपनी ही धुन मे, उसके लिंग को किसी खिलोने की तरहा हाथ मे लेकर मसल रही थी ..उसकी लंबाई को नाप रही थी ...उसपर साबुन लगाकर उसे साफ कर रही थी ..उसके भरे हुए टिन्डे जैसी स्तन्स का वजन तोल रही थी .

जावेद ने अपनी आँखे बंद कर ली ...और अपनी लिंग रगड़ाई का मज़ा लेना लगा..

रूपा ने पहली बार किसी का लिंग पकड़ा था..और जावेद के चेहरे पर आ रहे भाव को देखकर उसे पता चल गया की उसे भी मज़ा आ रहा है .. वो अंजान सी बनकर उसके लिंग को मसलती रही ..

अचानक जावेद ने अपने हाथ उठाकर उसके स्तनों पर रख दिए ...एक पल के लिए तो रूपा भी घबरा गयी ..पर वो कुछ ना बोली, उसे तो ऐसे संबंधों के बारे मे कोई जानकारी तक नही थी..अगर थी भी तो वो भूल चुकी थी ..उसने तो कल झोपड़े मे जग्गा को लतिका के बदन को

मसल - मसलकर मज़े लेते हुए देखा था, और जिस तरह से जग्गा उसके स्तन चूस रहा था, और लतिका मज़े मे दोहरी होकर चिल्ला रही थी, वो बात उसकी आँखों के सामने एकदम से उतर आई ...

और उसने उसी बात को याद करते करते जावेद के सिर को पकड़ा और अपने स्तन की तरफ खींचने लगी..

जावेद को तो विश्वास ही नही हुआ की रूपा उसे अपनी छाती चूसने के लिए कह रही है ...वो तो पहले से ही उसके हाथों लिंग की मालिश करवाकर सांतवे आसमान पर था, और अब रूपा उसके चेहरे को पकड़कर अपनी छातियों की तरफ खींच रही थी ..उसने भी बिना किसी विरोध के अपना मुँह आगे किया और अपनी लपलपाटी हुई सी जीभ उसके स्तन पर रख दी ..और टी शर्ट के उपर से ही उसके स्तनाग्र को मुँह मे लेकर चूसने लगा..

रूपा का एक हाथ उसके लिंग पर चल रहा था ..और उसका दूसरा हाथ जावेद के सिर को अपनी छातियों पर दबाकर उसे किसी शिशु की तरह अपना स्तनपान करा रहा था..

जावेद ने धीरे धीरे उसकी टी शर्ट को उपर खिसकाना शुरू कर दिया...वो थोड़ा सा कसमसाई , पर उसके अंदर की आग ने उसे किसी भी तरह का विरोध करने से रोक दिया...और जावेद ने अपने हाथ की सफाई दिखाते हुए उसके सफेद कलश अपनी आँखों के सामने नंगे कर दिए..

उपर से पड़ रही सूरज की रोशनी मे नहाकर उसके मोटे और सफेद स्तन सोने की तरह चमक रहे थे...और उनपर लगे हुए स्तनाग्र किसी हीरे की तरह...और स्तनाग्र के चारों तरफ महीन से दाने पूरी तरह से निकलकर बाहर आ चुके थे...

जावेद को अपनी किस्मत पर विश्वास ही नही हो रहा था की रूपा इतनी आसानी से उसके चुंगल मे फँस जाएगी...और अपने शरीर से खेलने देगी..

उसने बिना कोई देरी करते हुए अपने मुँह आगे किया और उसके स्तनाग्र को मुँह मे लेकर ज़ोर से काट लिया ..

"अहह ..... उफफफफफफफ़ .... दर्द होता है ..... "

रूपा ने शिकायत की ....पर उसे रोका नही...बल्कि उसके सिर को पकड़कर दूसरी तश्तरी मे रखे , बाँये स्तन की तरफ कर दिया और उसके उपर लाकर उसके मुँह को फिट किया और ज़ोर से दबा लिया अपनी छातियों पर ...

और एक बार फिर से उसकी चीख गूँज उठी ..

"अहह ..... उम्म्म्मममममममम ..... हाआअन्न्न्न्न ..... ऐसे ..... ही. ..... शाबाश ..... ....."

अब रूपा भी रंगने लगी थी उसके रंग मे ...

जावेद ने उसकी टी शर्ट को घुमा कर उसके सिर से निकाल फेंका और अब वो टॉपलेस होकर अपने गोरे गोरे स्तन खुले मे उससे चुसवा रही थी ..

जावेद : "अहह ..... भाभी ..... ...कितने मस्त है आपके स्तन ..... ऐसा लगता है की जग्गा ने आज तक इन्हे हाथ भी नही लगाया ...."

रूपा : "हाँ , सही कहते हो ....उसने आज तक हाथ नही लगाया ..."

जावेद एक पल के लिए रुक सा गया, उसे तो विश्वास ही नही हुआ की रूपा जैसी बीबी को जग्गा ने आज तक हाथ भी नही लगाया .... पर उसे क्या पता था की असल मे किस्सा क्या है ...

जावेद ने समझा की सच मे जग्गा के बस का कुछ नही है ...लगता है एक टाँग के साथ साथ उसका लिंग भी खराब है ...इसलिए अपनी गर्म बीबी की आग को वो ठंडा नही कर पाता है ..

उसने सोचा, मुझे क्या करना इनके घरेलू मुद्दों से, उसके तो मज़े हैं,ऐसी औरतें ही, जिनके मर्द किसी काम के नही होते हैं, बाहर निकलकर मुँह मारती हैं और उसके जैसे हरामियों के हाथों अपनी योनी की आग को ठंडा करती है ..

उसने उसके स्तन चूसने जारी रखे ..और उसके हाथ फिसलकर उसके कुल्हों पर आ गये ...और उन्हे उसने अपनी तरफ ज़ोर से दबा लिया..और ऐसा करते ही रूपा की धधक रही योनी उसके खड़े हुए लिंग से आ टकराई ....

उसने एक पल मे ही उसके पायजामे को भी नीचे खिसका दिया और उसकी योनी को देखते ही उसके अंदर का जानवर जाग उठा ...

और उसने अपने लिंग को उसकी चिकनी योनी पर रगड़ना शुरू कर दिया ....अपनी योनी पर मिल रही गर्म डंडे की रगड़ाई से रूपा की रही सही शरम भी जाती रही...अब उसको किसी भी हालत मे उसका लिंग अपनी योनी के अंदर चाहिए था ..

उसकी आँखें के सामने फिर से कल रात का वाक़या आने लगा, जिसमे जग्गा ने लतिका की घोड़ी बनाकर ठुकाई की थी..और लतिका ने चीख चीखकर पूरे झोपड़े को सिर पर उठा लिया था ...वो समझ गयी थी की वही असली मज़ा देने वाली क्रिया है ...उसके खड़े हुए लिंग को अपनी योनी मे डालना होगा...

जावेद ने पलक झपकते ही उसके पायजामे को उतार फेंका और उसे नग्न कर दिया ... ठंडे पानी के अंदर दोनो नंगे थे अब ...जावेद ने उसका हाथ पकड़ा और उसे चट्टानों की तरफ ले जाने लगा ..उसी जगह जहाँ पर जग्गा ने लतिका की ठुकाई की थी, वहाँ एक सपाट सा पत्थर था, जिसपर लेटकर वो उसकी ठुकाई करने वाला था..

जावेद ने रूपा को उसी पत्थर पर लेजाकर लिटा दिया....और उसकी टांगे खोलकर उसकी योनी को निहारा ...वो किसी कच्ची कली की तरह थी, ऐसा लगता था की उसके अंदर आज तक कुछ गया ही नही है ...जावेद समझ गया की जग्गा ने उसकी योनी का उदघाटन अभी तक नही किया है....इसलिए तो रूपा इतनी आसानी से उसकी हर बात को मानकर ठुकाई के इस मुकाम तक पहुँच चुकी है ..

उसने अपने लिंग पर ढेर सारी थूक लगाकर उसे चिकना किया और झुककर जैसे ही उसके अंदर अपना लिंग डालने लगा..उसके एक चेले की घबराई हुई सी आवाज़ आई..

"भाई ..... भाई ...कहाँ हो आप ....जल्दी आओ ..."

जावेद की तो झांटे सुलग उठी...उसने मना भी किया था की उस तरफ कोई भी नही आएगा...फिर एन मौके पर ये कल्लन उसको क्यो आवाज़ें दे रहा है ..

वो झल्लाता हुआ सा चट्टान की औट से बाहर निकला , और बोला : "मादर## ....तुझे मना किया था ना की यहाँ कोई नही आएगा, तो फिर क्यो आ गया अपनी मा ठुकवाने ..."

कल्लन : "भाई ....सॉरी ...भाई ...वो ...दरअसल ....शेट्टी भाई का फोन आया है ..."

शेट्टी का नाम सुनते ही उसका दिमाग़ सुन्न सा हो गया ...शेट्टी भाई उसके बॉस का भी बॉस था ...यानी पूरे शहर का दादा ....उसका ही काम था जिसके लिए उसने जग्गा को आज पॉकेट लाने के लिए भेजा था ..

वो नग्न ही उछलता हुआ सा बाहर निकल आया और कल्लन के हाथ से फोन लेकर घबराई हुई सी आवाज़ मे बोला : "सलाम शेट्टी भाई ...कहिए, कैसे याद किया मुझे ..."

दूसरी तरफ से शेट्टी की गुस्से से भरी आवाज़ आई : "साले ...किसे भेजा है तूने आज अपना माल उठवाने के लिए ..."

जावेद की तो सिट्टी पिटी गुम हो गयी, वो हकलाते हुए बोला : "एक नया बंदा है भाई ...क्यों क्या हुआ ..."

शेट्टी : "अभी के अभी उसको वापिस बुला ले...पुलिस को किसी ने इनफॉर्म कर दिया है ..जहाँ से माल लेना है,उस जगह पर पूरी फील्डिंग है पुलिस की ...अगर पकड़ा गया तो पूरे

एक करोड़ के पाउडर का नुकसान होगा "

उसकी बात सुनकर जावेद भी घबरा गया...पर वो आगे क्या बोलता, जग्गा के पास तो कोई फोन भी नही था ..

उसे चुप देखकर शेट्टी फिर से दहाड़ा : "अब बोल ना साले , तेरी ज़ुबान पर ताला क्यो लग गया है ..."

जावेद : "भाई ...वो दरअसल ....उसके पास कोई फोन नही है .."

ये सुनते ही शेट्टी ने उसको एक से बढ़कर एक गंदी गालियों से नहला दिया और उसे उसी वक़्त जग्गा के पीछे जाने को कहा, ताकि उसे दूर ही रोककर इस मुसीबत से बचा जा सके ..

उसकी बात सुनते ही उसने कल्लन को गाड़ी निकालने के लिए कहा ...और अपने कपड़े पहन कर वो अपने साथियों के साथ चल दिया.

और दूसरी तरफ बेचारी रूपा चट्टान की औट मे नग्न लेटी हुई उसके वापिस आने की प्रतीक्षा कर रही थी ...और उसे एकदम से अपने कपड़े पहन कर जाता हुआ देखकर उसे भी कुछ समझ मे नही आया...उनके जाने के बाद उसने भी बेमन से अपने कपड़े पहने और वापिस अपने घर की तरफ चल दी ..

दूसरी तरफ जग्गा को भी पता नही था की आज उसके साथ क्या होने वाला है ..

वो तो अपनी ही धुन मे, अपनी जेब मे पड़े पैसों की गर्मी को महसूस करता हुआ, गुनगुनाता हुआ , अपनी मंज़िल की तरफ तेज़ी से बड़ा जा रहा था.

दूसरी तरफ, जहाँ से जग्गा को वो पॉकेट लेना था, उस जगह को चारों तरफ से पुलिस ने घैर रखा था...सारे पुलिस वाले सादी वर्दी मे थे ... उनके इनफॉर्मर ने बताया था की उसी बिल्डिंग से पॉकेट लेने के लिए कोई आएगा...

ये एक १५ मंज़िला बिल्डिंग थी ... जिसमे शहर के काफ़ी रईस लोग रहते थे ... अंदर जाने की किसी भी पुलिस वाले मे हिम्मत नही थी, इसलिए उन्होने बिल्डिंग के गेट के बाहर ही अपनी चोकसी लगा रखी थी ..

पुलिस वाले अब किसी ऐसे संधिग्ध व्यक्ति की तलाश कर रहे थे जो ऐसी तस्करी का काम कर सकता हो...यानी गुंडे टाइप का ..

जग्गा आज ऑटो मे वहाँ गया था और थोड़ी दूर पर ही उतर गया ताकि कोई उसे देखकर ये ना कहे की भिखारी क्यो ऑटो मे आ रहा है ..और किसी को शक ना हो जाए उसपर ..

जग्गा तो भिखारी था... वो अपनी एक टाँग से लंगड़ाता हुआ सा बिल्डिंग के अन्दर दाखिल हो गया...और किसी भी पुलिस वाले को उसपर शक भी नही हुआ..वो तो सपने मे भी सोच नही सकते थे की एक भिखारी इतना कीमती पॉकेट लेने के लिए आएगा..

जग्गा सीधा लिफ्ट के पास पहुँचा...और जैसे ही अंदर जाने लगा, उसको वहाँ बैठे चोकीदार ने रोका : "ओये .... तू कहाँ घुसा चला जा रहा है ...चल निकल यहाँ से ...तुझे अंदर किसने आने दिया ..साले भिखारी ..."

जग्गा ने अपनी जेब से एक विज़िटिंग कार्ड निकाला और उसके सामने लहरा दिया...चोकीदार भी उस कार्ड को देखकर एकदम से सहम गया...उसने बिना कुछ बोले जग्गा को लिफ्ट से उपर जाने दिया..

दरअसल वो विज़िटिंग कार्ड जावेद ने ही दिया था ,वो कार्ड उसी बिल्डिंग मे रहने वाले अंसारी का था, जिसका अफ़ग़ानिस्तान मे काफ़ी बड़ा बिजनेस था..और उसी बिजनेस की आड़ मे वो शेट्टी के लिए ड्रग्स की तस्करी करता था...

जावेद ने वो कार्ड देते हुए कहा था की बिल्डिंग मे कोई भी रोके तो ये कार्ड दिखा देना, और

अंसारी के घर पहुँच कर भी ये कार्ड दिखना, तुम्हे पॉकेट मिल जाएगा...

लिफ्ट मे बैठे अटेंडर को जग्गा ने वो कार्ड दिखाया और अटेंडर ने उसे टॉप फ्लोर मे बने पैंट हाउस के बाहर उतार दिया..

उस फ्लोर पर सिर्फ़ वही एक फ्लॅट था...पुर ७ कमरो वाला आलीशान फ्लॅट...साथ मे स्वीमिंग पूल भी था.

जग्गा ने फ्लॅट की बेल बजाई तो एक नौकरानी जैसी दिखने वाली लड़की निकल कर आई..जग्गा ने उसको वही कार्ड दिखा दिया, वो उसको अंदर लेकर आ गयी और उसे वही खड़े रहने के लिए कहा..

थोड़ी ही देर मे वहाँ एक खूबसूरत सी औरत आई...उसकी उम्र करीब ३० के आस पास थी ..उसने एक ग्रीन कलर का ब्लाउस और स्कर्ट पहनी हुई थी ..और उस ब्लाउस मे से उसके शानदार और मोटे मोटे स्तन बाहर निकलने को तैयार थे ..उसके कपड़े देखकर लगता था की वो किसी पार्टी मे जा रही है ..

जग्गा तो उसकी सुंदरता देखता ही रह गया...बेशक देखने मे वो थोड़ी साँवली थी..पर उसके नैन नक्श काफ़ी तेज थे....उसकी कमर के पास और पेट पर बड़े बड़े टैटू बने हुए थे ..वो किसी फिल्मी हेरोयिन जैसी लग रही थी ..और उसका चेहरा भी देखा हुआ सा लग रहा था जग्गा को..

उस औरत ने जग्गा को उपर से नीचे तक देखा और मुस्कुरा दी... फिर वो चलकर उसके पास आई और उसके हाथ से वो विज़िटिंग कार्ड ले लिया.

"मेरा नाम शबाना ख़ान है ...लोग प्यार से मुझे शबाना कहते हैं ..तुम्हारा नाम क्या है .." वो लड़की ने अपनी सुरीली आवाज़ मे कहा..

जग्गा : "जी ...मेरा नाम जग्गा है ..."

शबाना : "अच्छा मेकअप किया है तुमने ...पुलिस वालो को चकमा देने के लिए...."

जग्गा समझ गया की वो उसको कोई पेशेवर तस्कर समझ रही है जो भेष बदल कर डिलीवरी लेने के लिए आया है ... उसने भी मुस्कुरा कर उसकी हाँ मे हाँ मिला दी..

भला उसको क्या ज़रूरत थी उस जैसी हसीन लड़की को ये बताने की , की वो एक पेशेवर तस्कर नही बल्कि पेशेवर भिखारी है ..

जग्गा ने अपनी बड़ाई करने के लिए कहा : "वो तो मुझे बचपन से ही एक्टिंग का और तरह तरह के किरदार निभाने का शोंक है, इसलिए मैने सोचा की आज भिखारी बनकर चला जाए.."

शबाना : "अच्छा ....मतलब तुम्हे भी एक्टिंग का शोंक है ...वाव ...हमारी तो खूब पटेगी फिर ..."

जग्गा उसकी बात सुनकर थोड़ा असमंजस मे पड़ गया ..

शबाना : "लगता है तुमने मुझे पहचाना नही ....इधर आओ मेरे साथ ..."

और वो जग्गा का हाथ पकड़कर अपने साथ अंदर ले गयी ...जहाँ एक बड़े से कमरे की हर दीवार पर उसकी पिक्चर्स लगी थी...कई फिल्मों के पोस्टर भी थे ..ज़्यादातर तमिल और तेलगु भाषा की मूवीज थी ...कुछ हिन्दी मूवीज भी थी ..और उन फ़िल्मो के पोस्टर मे उसे देखकर उसे याद आ गया की ये तो फ़िल्मो मे काम करती है...उसने एक - दो मूवीज देखी भी थी उसकी ...ज़्यादातर पिक्चर्स मे उसने आइटम सॉंग ही किये थे...उसने जब एक मूवी सुलतान भाई का पोस्टर देखा तो उसे भी याद आ गया की ये वही लड़की है जिसने हॉस्पिटल मे रात के समय गाना गया था..

उसे एकदम से याद आ गया की उसके सेक्सी गाने "आजा लेटकर मजा करे .." को देखकर आगे की लाइन मे बैठकर उसने कितनी सीटियाँ मारी थी ...वो सोच रहा था की काश उस बीमार लड़के की जगह अगर वो होता तो कितना मज़ा आता...

और रात मे उसके भरे हुए शरीर के बारे मे सोचकर उसने कितनी बुरी तरह से पेला था एक घस्ती को...

जग्गा को ऐसे खोए हुए देखकर शबाना बोली : "कहाँ खो गये जग्गा ... हेलो ...."

जग्गा जैसे नींद से जगा : "वो दरअसल ...मैने पहले आपको पहचाना नही था ... मैने आपकी कई पिक्चर्स देखी है ...आप तो बड़ी सेक्सी .... लगती है उनमे ..."

शबाना : "उनमे क्या मतलब ...सामने देखने मे नही लग रही ..."

जग्गा उसकी बात सुनकर एकदम से सकपका गया : "जी नही ..मेरा मतलब ...आप अभी भी ... सेक्सी लग रे हो ..."

वो गँवार सा बेचारा, ये भी नही जानता था की वो उससे मज़े ले रही है ..

वो हंसने लगी उसकी घबराहट देखकर , जग्गा थोड़ा सहज हुआ

जग्गा : "पर आप...यहाँ कैसे ..."

शबाना : "मैं यहीं रहती हू ...अंसारी के साथ ...उन्होने ही ये पैंट हाउस मुझे लेकर दिया है ..वो अक्सर बाहर ही रहते हैं ...जब भी इंडिया आते हैं तो मेरे साथ ही रहते हैं ...."

जग्गा समझ गया की अपने पैसों के ज़ोर पर उसने उस एक्टर को अपनी रखैल बना कर रखा हुआ है ..

शबाना : "तुम्हारा पॉकेट तो मैं दे ही दूँगी तुम्हे ....अगर तुम्हे जल्दी नही है तो थोड़ी देर यही रुक जाओ ...काफ़ी दिनों के बाद कोई अपनी बिरादरी का बंदा मिला है ..."

जग्गा (हैरान होते हुए) : "अपनी बिरादरी का ...मतलब ?"

शबाना : "मतलब, एक्टिंग लाइन का ...अभी तो तुमने बताया ..."

जग्गा : "ओहो ...हाँ ...पर अब कहाँ एक्टिंग ....अब तो बस अपने काम मे ही लगे रहना पड़ता है ..."

मुननू : "मैं समझ सकती हू ....चलो ना ..अंदर आओ ..."

वो उसके हाथ को पकड़कर अंदर ले आई...बड़ा ही अपनापन दिखा रही थी वो ...जैसे कोई बचपन का साथी मिल गया हो ..

वैसे वो भी अपनी जगह सही थी ... उसने अपने फिल्मी करियर मे ना जाने कितने हीरोस के साथ मज़े लिए थे ..और ना जाने कितने डाइरेक्टर्स और प्रोड्यूसर्स को खुश किया था ...वो चमक धमक की दुनिया अलग ही थी ..और जब से वो अंसारी की रखैल बनकर यहा रहने लगी थी..वो सब उसे बहुत याद आता था ...अंसारी के बारे मे हर कोई जानता था...इसलिए उसकी रखैल के उपर हाथ रखने की हिम्मत किसी की भी नही थी...इसलिए वो बेचारी अपनी सुलग रही जवानी के साथ इतने बड़े घर मे अकेली रहकर अपनी बोर सी लाइफ जी रही थी ..

जग्गा था तो भिखारी पर एक नंबर का हरामी भी था ...औरतों को देखते ही उसकी लार टपकने लगती थी ..पिछले कुछ दिनों से जिस तरह से रूपा ने उसे अपनी जवानी दिखाकर तड़पाया था, उसकी हवस और भी भड़क चुकी थी ..सिर्फ़ लतिका की ठुकाई करके उसका पेट भरता नही था...और अब ऐसी गर्म माल और वो भी फ़िल्मो मे काम करने वाली का इतना अपनापन देखकर उसके अंदर का हरामी इंसान फिर से जाग उठा ...

वैसे और कोई अपराधी होता तो ऐसा कुछ सोचता भी नही...एक तो वहाँ रुककर पुलिस से पकड़े जाने का ख़तरा..और उपर से अंसारी की रखैल के साथ ऐसा कुछ करने की कोई सोच भी नही सकता था...सभी को पता था की उसपर उठने वाली हर नज़र को अंसारी फोड़ देता है ..

पर जग्गा तो नया था और उसे अंसारी के बारे मे कुछ पता भी नही था, इसलिए वो बिना किसी सोच विचार के, सिर्फ़ अपने लिंग की बात सुनकर, मज़े लेने के मूड मे आ चुका था.

शबाना को भी ये पहला इंसान मिला था जो बिना किसी डर के उसके साथ बाते भी कर रहा था और थोड़ी देर रुकने के लिए भी तैयार हो गया था..वरना अंसारी के दिए पॉकेट लेने के लिए जो भी आता था, डरा हुआ सा, सहमा हुआ सा, और खड़े खड़े निकल जाता था ..कोई बात भी नही करता था वो ..

शबाना भी जानती थी की अंसारी का असली काम क्या है, पर जब तक उसको ऐशोआराम और बेशुमार पैसे मिल रहे हैं, उसे भला क्या प्राब्लम हो सकती थी..इसलिए वो भी उस धंधे मे उसका साथ देने लगी थी..

जग्गा को देखकर उसके अंदर भी खुजली सी होने लगी थी ...उसका हुलिया तो बड़ा ही गंदा सा था, पर उसके गठीले शरीर को वो भाँप चुकी थी ...और उसकी पैंट मे क़ैद लिंग की लंबाई का भी अंदाज़ा हो चुका था उसको.. पिछले १५ दिन से नही ठुकी थी वो ..और अब एक भिखारी जैसे दिखने वाले आदमी को देखकर उसके अंदर कुछ कुछ होने लगा था..उसने मन ही मन सोच लिया की कुछ भी हो जाए, आज वो उसका लिंग लेकर ही रहेगी..

उसको अंदर बिठा कर वो बाहर आई और अपनी नौकरानी को घर जाने के लिए कह दिया..ताकि वो खुलकर जग्गा के साथ मज़े ले सके.

शबाना ने अपने आप को आईने मे देखा...वो बड़ी ही सेक्सी लग रही थी..उसका शोंक था घर पर भी सज संवर कर बैठना, तभी तो उसने पार्टी मे जाने वाले कपड़े पहन रखे थे...और वो भी इतने सेक्सी की उसके अंदर से उसके स्तन आधे से ज़्यादा बाहर दिखाई दे रहा थे ..उसने अपने स्तनों को थोड़ा और बाहर की तरफ निकाला, इतना की उसका हल्का सा ब्राऊन भाग दिखाई देने लगा.

वो अपने आप को देखकर सोच रही थी की उसने आज तक एक से बढ़कर एक सुंदर हीरो का लिंग लिया है...और अमीर से अमीर इंसान से अपनी योनी मरवाई है ...ये पहला मौका है जो वो इतने निचले तबके के आदमी के साथ मज़े लेने की सोच रही है ...जो दिखने मे भिखारी जैसा लग रहा है ...फटे हुए से कपड़े..बड़ी हुई दाढ़ी ..पैर से लंगड़ा ..शरीर से दुर्गंध भी आ रही थी उसके ..

पर ऐसा करना हमेशा से उसकी फेंटसी रहा था... उसने कई बार सोचा था की इस तरह के

आदमी के साथ भी सहवास का मज़ा लेना चाहिए ...क्योंकि उसने सुना हुआ था की ऐसे मर्दों के पास ठुकाई के लिए तगड़े लिंग होते हैं...और उस जैसी वेश्या के लिए ऐसे लिंग से ठुकाई करवाना तो बहुत बड़ी बात थी ..

वो फ्रिज से कोल्ड ड्रिंक लेकर अंदर आ गयी..उसे देखकर जग्गा अपनी जगह से उठ गया और उसके खुले गले की तरफ देखकर चोंक सा गया...उसे अच्छी तरह से याद था की पहले उसका गला इतना नीचे तक नही था...क्योंकि वो जब से आया था उसकी नज़रें उसके क्लिवेज से हट ही नही रही थी ..और अब तो उसके क्लिवेज के साथ साथ उसके स्तनाग्र का एरोहोल भी दिख रहा था उसे ...वो समझ गया की वो भी अपनी ठुकाई करवाने के लिए तैयार है ..

उसे अपनी तरफ यूँ मुस्कुराता हुआ देखकर शबाना बोली : "क्या देख रहे हो जग्गा .."

जग्गा ने कोल्ड ड्रिंक का सिप भरा और बोला : "कुछ नही ...बस आपकी मूवी का एक सीन याद आ गया ..."

"कौनसा ..." वो बोली

जग्गा : "मेरी फ़ेवरेट मूवी थी एक ...सुल्तान भाई ..उसमे जो गाना था ...वैसी ही सेक्सी लग रही हो तुम इस वक़्त .."

जग्गा कहना तो ये चाहता था की उसके स्तन उसी तरह से लटक कर बाहर दिख रहे हैं, जैसा उस गाने मे वो दिखा रही थी, पर वो ऐसा खुलकर बोल नही पाया ..

उसकी बात सुनकर वो खिलखिलाकर हंस पड़ी...और बोली : "ऐसे इधर उधर घुमा कर क्यो बोल रहे हो...सीधा सीधा बोलो ...क्या कहना चाहते हो .."

"क्या तुम वही गाने पर मेरे लिए डाँस कर सकती हो ..." जग्गा ने एक ही साँस मे बोल दिया..

और वो जानता था की वो मना भी नही करेगी..

शबाना : "कर तो दूँगी..पर इस बात का किसी को पता नही चलना चाहिए...वरना तुम्हारा तो जो होना है वो होगा , मेरी भी छुट्टी हो जाएगी यहाँ से ...समझे "

उसने हंसते हुए हाँ मे सिर हिला दिया..

इसी बीच, नीचे जावेद अपने साथियों के साथ नीचे पहुँच गया, उसने अपनी कार थोड़ी दूर ही

खड़ी कर ली..उसने देख लिया की सादे कपड़ों मे पुलिस वाले खड़े हैं वहाँ ...वो वहीं खड़ा होकर जग्गा का इंतजार करने लगा..

वो सोच रहा था की जग्गा पैदल ही चलकर आ रहा होगा वहाँ...जैसा वो अक्सर करता है..पर उसने ये नही सोचा था की वो तो कब का आ चुका है ऑटो पर ..

और उपर फ्लॅट मे पहुँच कर शबाना के साथ किस तरह के मज़े ले रहा है ये तो वो सोच भी नही सकता था ..

शबाना जग्गा को अपने साथ लेकर अपने बेडरूम मे आ गयी...बड़ा ही आलीशान बेडरूम था उसका, सफेद रंग के पलंग के चारों तरफ कीमती कार्पेट बिछा था, दीवारों पर हल्का नीला रंग था और हर जगह शबाना की पिक्चर्स लगी थी..उसने एक बटन दबाया जिससे सारे कमरे की रोशनी धीमी सी हो गयी..

जग्गा का हाथ पकड़कर उसने पलंग पर बिठा दिया..

और फिर उसने सी डी प्लेयर पर वही गाना चला दिया.."आजा लेटकर मजा करे ....आजा लेटकर मजा करे "

और उसी गाने की धुन पर धीरे धीरे उसकी कमर मटकने लगी..

हर झटके से उसके मोटे स्तन बिखर से जाते और फिर से सिमट कर वापिस आ जाते..

जग्गा ने मन ही मन सोचा की उसके स्तन इतने मोटे है तभी शायद इसका नाम शबाना है..

उसके पेट पर बने हुए टेटु को देखकर उसे एक अजीब सी उत्तेजना हो रही थी..उसका मन कर रहा था की अपनी खुरदुरी जीभ से उसका वो हिस्सा चाट जाए..इतना चाटे की उसका टेटु मिट जाए..

शबाना के चेहरे पर एक अजीब तरह का लालच दिख रहा था...आज उसके पास बिन माँगे एक मर्द जो आ गया था..इसलिए वो हर कीमत पर,अपने हर जलवे दिखाकर, उसे पाना चाहती थी.

शबाना अपने मोटे मोटे स्तन हिला कर उसके इर्द गिर्द नाच रही थी..उसने अपनी टांगे उठा उठा कर जब जग्गा के चेहरे के पास रखी तो वो उसकी जाँघो की मोटाई और मखमलीपन देखकर हैरान रह गया..उसने तो सोचा भी नही था की औरतें इतनी चिकनी भी हो सकती है...उसने तो आजतक झुग्गी मे रहने वाली या वेश्याओ की योनी ही मारी थी..जो ढंग से

अपने बाल तक साफ़ नही करवाती.

और ना चाहते हुए भी उसके हाथ उसकी जांघों पर आ गये..जग्गा का खुरदुरा हाथ अपनी जाँघ पर महसूस करते ही वो सिहर उठी..इतना रफ़ सा था वो..जब ठुकाई करेगा तो क्या हाल होगा उसका...ये ख्याल आते ही उसने जग्गा के हाथ के उपर अपना हाथ रखा और उसे अपनी जांघों पर घिसने लगी..

जग्गा के इतना करीब आने की वजह से उसके शरीर से आ रही दुर्गंध भी उसे महसूस हो रही थी..पर कामोत्तेजना के आवेश मे वो दुर्गंध भी उसे किसी चुंबक की तरह अपनी तरफ खींच रही थी.

जग्गा भी अब समझ चुका था की वो ठुकने के लिए पूरी तरह तैयार है,क्योंकि वो खुद उसके हाथ को पकड़कर अपनी जांघों पर ऐसे घिस रही थी मानो उसमे से जिन्न निकलवाना हो..

पर जिन्न तो उसकी खुद की टाँगो के बीच खड़ा हो चुका था..उसके आठ इंच के लिंग ने अपना विकराल रूप धारण कर लिया था और वो उसकी पैंट को फाड़कर बाहर आने को तैयार था.

शबाना की जाँघो की रगड़ाई करते करते जग्गा का हाथ उसकी योनी की तरफ खिसकने लगा..और उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वो धीरे धीरे किसी आग की भट्टी के पास जा रहा है..उसकी योनी से निकल रही आँच की तपन उसे दूर से ही महसूस हो रही थी.

पर शबाना पूरे मज़े लेने के मूड मे थी..उसने जग्गा का हाथ हटाया और फिर से गाने की धुन पर थिरकने लगी..उसके लटके-झटके देखकर वो उसके डांस का कायल हो गया..उसकी मोटी कमर, चौड़े कूल्हे और भरंवा नितंब को देखकर वो बेकरार सा हो उठा...और उपर से उसके मोटे मोटे स्तन , जो हिलकर अपने वजन का एहसास करवा रहे थे उसको..

जग्गा का मन तो कर रहा था की वो उसके स्तन पकड़ कर निचोड़ डाले..पर वो भी जानता था की आख़िर मे वो सब तो होना ही है..पहले उसके डांस के मज़े तो ले ले ,बाद मे उसके शरीर के साथ जी भरकर खेलेगा.

नीचे खड़ा हुआ जावेद परेशान हो रहा था...उसके हिसाब से अब तक जग्गा को वहाँ पहुँच जाना चाहिए था..पर वो दूर दूर तक नही दिख रहा था..दिखता भी कैसे, वो तो उपर शबाना के स्तन देखकर अपने लिंग को रगड़ रहा था..

शबाना ने जब देखा की जग्गा अपने हाथों से अपने लिंग को रगड़ रहा है तो वो पलंग पर चड़कर बिल्ली की तरह चलती हुई उसके पास तक आई...उसे धक्का देकर बेड के बीचो-बीच लिटा दिया...और खुद उसकी टाँगो से लेकर उपर तक सूंघने लगी...ऐसी कामुकता का एहसास उसे आज तक नही हुआ था ...वो धीरे धीरे उसके हर अंग को सूंघति हुई उपर तक

आई..और जब उसका चेहरा ठीक उसके सामने आया तो जग्गा को वो सीन याद आ गया जब वो गाने मे लड़के के उपर अपने शरीर को हवा मे लटका कर उसे अपने जलवे दिखा रही थी..

बस यही वो पल था जब शबाना ने अपने हाथ पीछे किए और अपने ब्लाउस की डोरी खोल दी...उसका ब्लाउस आगे की तरफ गिरता हुआ नीचे लटक गया...और नीचे उसकी गोल्डन कलर की ब्रा जग्गा की आँखों के सामने उजागर हो गयी...इतनी सेक्सी ब्रा तो जग्गा ने आज तक नही देखी थी...और उनमे शबाना के मोटे स्तन समां नही पा रहे थे..

अचानक शबाना ने जग्गा का चेहरा पकड़ा और उसे अपने स्तनों के बीच भींच दिया...जग्गा को तो ऐसा लगा की उसका चेहरा किसी नर्म रज़ाई के बीच जा घुसा है...और दूसरी तरफ शबाना के सीने मे जब उसके चेहरे के बाल चुभे तो वो दर्द से तड़प उठी पर उसने उसके चेहरे को छोड़ा नही..वो उसे अपने स्तनों पर जोर जोर से रगड़ती रही..

गाना ख़त्म हो चुका था..पर जग्गा अब चालू हो चुका था..

उसने शबाना की ब्रा के हुक खोलकर उसे नीचे फेंक दिया...और अब उसकी आँखो के सामने उसकी नग्न छातियाँ थी...इतने मोटे और बड़े स्तन देखकर वो तो निहाल हो उठा और वो भी एक हीरोइन के, उसने तो सोचा भी नही था की एक दिन उसकी किस्मत मे ऐसा दिन भी आएगा जब वो किसी हीरोइन के स्तन चूस रहा होगा..

उसने गोर किया की शबाना ने अपने स्तनाग्र के पास भी एक टेटु बनवा रखा है...उसने मन ही मन सोचा की कितनी बेशरम होती है ये हेरोइने ,कैसे बनवाती होगी ये किसी मर्द से अपने अंदरुनी अंगो पर ऐसे टेटु..पर उसे क्या वो तो मज़े लेने आया था..सो लेने लगा..

उसने उसके मोटे स्तनाग्र को अपने मुँह मे भरा और उसे जोरों से चूसने लगा..

"अहहययययययययययययीईईईईई..... म्*म्म्मममाआआअरर्रर
गयी.....अहहssssssssssssss ....धीई ररएरए ,.....जंगली .....कुत्ते .....
एsssssssssssssss ....."

पर जग्गा का तो यही तरीका था...वो तो अब बेलगाम हो चुका था..उसने शबाना को पलंग पर पटका और खुद उसके उपर सवार हो गया...और एक ही झटके मे उसकी स्कर्ट को भी उतार फेंका..उसकी कच्छी को तो उसने फाड़ ही डाला..और फिर जो नज़ारा उसके सामने था वो उसकी जिंदगी का सबसे हसीन पल था.

उसके सामने थी शबाना ख़ान, पूरी नग्न..अपने भरपूर जवानी मे लिपटी हुई...किसी नागिन की तरह उसका शरीर बिस्तर पर मचल रहा था..

उसके पेट पर बना हुआ टेटु उसकी योनी के दरवाजे तक जा रहा था..और उसकी योनी को

छिदवा कर उसने एक सोने की बाली पहनी हुई थी..ये नज़ारा जग्गा के लिए नया था, वो तो ये सोचकर ही सिहर उठा की उसने कैसे अपनी योनी छिदवाई होगी और ये सोने की बाली उसमे डलवाई होगी...खेर ,उँचे लोगो की ऊँची पसंद .

जग्गा ने अपनी टी शर्ट उतार फेंकी..उसकी छाती के बाल देखकर शबाना सम्मोहित सी होकर उठी और अपनी नाक वहाँ पर रगड़ने लगी...जग्गा ने उसके बालों को पकड़ा और उसके चेहरे को उपर किया और अपने होंठों को उसके होंठों पर रखकर जोरों से रगड़ने लगा...चूसने लगा ...उन्हे खाने लगा.

शबाना को भी उसका जंगली तरीका पसंद आ रहा था, उसकी नशीली जवानी को आजतक सुलझे हुए लोगो ने ही चखा था, आज पहली बार वो अपने शरीर को ऐसे इंसान से नुचवा रही थी जो उसके स्टेटस का भी नही था..

जग्गा ने उसके चेहरे को चूसा, उसकी गर्दन को चाटा और उसके स्तन चूसता हुआ वो उसकी योनी तक पहुँच गया..और एक ही झटके मे उसने अपना सिर आगे किया और शबाना ने अपनी योनी ....

दोनो एक दूसरे से ऐसे टकराए जैसे कोई तूफ़ान , शबाना को तो ऐसा लगा जैसे उसने बरसों से भूखे कुत्ते को खाना दिया गया है ..वो सड़प सडप करते हुए उसकी शहद जैसी मीठी योनी का रस पीने लगा...और साथ ही साथ उसकी योनी मे फंसी सोने की बाली को भी चुभलाने लगा..उसने नोट किया की जब वो उसे चुभलाता तो वो दर्द और मज़े से एक साथ सिहर उठती..शायद इसी लिए उसने वहाँ छिदवाया था .

जग्गा की लंबी जीभ ने शबाना की योनी की गहराई बड़ी आसानी से नाप ली...उसके अंदर से निकल रहा रस उसे इतना स्वादिष्ट लग रहा था की वो रुकने का नाम ही नही ले रहा था...और अचानक शबाना झड़ने के कगार पर आ गयी...उसने गजब की शक्ति और फुर्ती दिखाते हुए जग्गा को नीचे पटका और खुद उसके चेहरे पर सवार होकर जोरों से अपनी योनी को उसके चेहरे पर घिसने लगी...वो ऐसे घिस रही थी मानो अपनी योनी का रस निकलवा रही हो उसके मुँह की मशीन से...जग्गा के बाल पकड़कर वो बावली कुतिया की तरह अपनी आँखे बंद किए उसके मुँह के अंदर अपनी योनी को ठूसकर जोरों से हीले जा रही थी..

"'अहह ....चाट कुत्तेसssssssssssssssss ..... अहहsssssssssssssssss ....भेन पेल ..... अहह ...सालेsssssssssssssssssssssssssss .....खा जा आ ...मेरी योनी को .....अहहsssssssssssssssssss ....."

और अगले ही पल उसकी योनी के अंदर से गरमा गरम रसमलाई निकल कर जग्गा के चेहरे पर बिखर गयी...जग्गा को ऐसा लगा की उसके चेहरे पर किसी ने गिलास भरकर मीठा पानी फेंक दिया है..वो अपनी जीभ से , ज़्यादा से ज़्यादा मलाई को चाटकर अपनी प्यास बुझाने लगा.

झड़ने के बाद शबाना किसी कटे पेड़ की तरह एक तरफ गिर गयी....उसके शरीर मे जान नही बची थी...पूरा शरीर पसीने से नहा चुका था.

अब जग्गा की बारी थी...वो उठा और उसने अपने लिंग को उसके चेहरे के सामने लहरा दिया...शबाना आधी बेहोशी मे थी, जैसे ही उसकी नाक के पास जग्गा का लिंग आया, एक तेज दुर्गंध से उसकी आँखे खुल गयी..जैसे मिर्गी के मरीज को बदबूदार चप्पल सुंघा दी गयी हो

और आँखे खुलते ही उसकी आँखो के सामने जग्गा का नाग लहराता देखकर वो डर सी गयी...चेहरे के इतने पास होने की वजह से वो कुछ ज़्यादा ही बड़ा और भयानक लग रहा था...बालों से भरा हुआ...और उपर से उसमे से आ रही दुर्गंध उससे बर्दाश्त नही हो रही थी..उसे ऐसा लगा की उसको उल्टी आ जाएगी अगर उसने जग्गा के लिंग को मुँह मे लिया...पर लेना तो था ही..वरना ऐसे मर्द खुश नही होते..और अगर वो खुश नही हुआ तो उसकी ठुकाई कैसे करेगा.

वो झट से उठी और भागकर फ्रिज मे से फ्रूट जैम की शीशी निकाल कर ले आई...उसने उसका ढक्कन खोला और उसके अंदर जग्गा के लिंग को डाल दिया और सारा जैम जग्गा के लिंग के उपर लग गया...फिर उसने उसे बाहर निकाला और अपनी जीभ निकाल कर धीरे धीरे उसके उपर लगा हुआ जैम चाटने लगी...और फिर सब कुछ चाटने के बाद उसने जग्गा के लिसडे हुए लिंग को अपने मुँह मे भरकर चूसना शुरू कर दिया..अब वो मीठा एहसास दे रहा था.

दूसरी तरह जग्गा समझ रहा था की ये भी शायद बड़े लोगो का कोई तरीका होगा...पता नही कैसे कैसे कामो मे इन लोगो को मज़े आते हैं..उसे कोई फ़र्क नही पड़ रहा था, उसे तो मज़े आ रहे थे...एक नये अनुभव का एहसास हो रहा था..

शबाना का मुँह उसके लिंग को पूरा अंदर नही ले पा रहा था...पर फिर भी वो उसको चूसती रही..

शबाना को ऐसा करता देख जग्गा ने कमान संभाली और उसके बालों को पकड़ कर अपना पूरा लिंग एक ही झटके मे उसकी हलक तक उतार दिया...शबाना की तो आँखे निकल कर बाहर आ गयी...उसे ऐसा लगा की उसकी साँसे रुक जाएगी, उसके गले की नसें फट जाएगी..

जग्गा ने उसके चेहरे को किसी सस्ती वेश्या की तरह पेलना शुरू किया...हर झटके मे उसके लिंग का टोपा शबाना के टॉन्सिल्स को छूकर वापिस आता..थोड़ी देर बाद वो अभ्यस्त हो गयी और उसे भी मज़ा आने लगा.

जग्गा भी जानता था की उसके पास ज़्यादा समय नही है...उसने जल्दी से अपना लिंग बाहर निकाला और उसकी दोनो टांगे फेला कर उसे मोरनी बना दिया...और उसकी आँखों में देखते

देखते अपना मीठा लिंग उसकी चाशनी से भीगी योनी की गहराइयों मे उतार दिया...

उसकी चीख इतनी तेज थी की पूरी बिल्डिंग मे गूँज गयी...इतना मोटा लिंग शायद उसने पहली बार लिया था..

"अहहस्स्स्स

और उपर जग्गा अपने जीवन की सबसे मस्त ठुकाई करने के बाद पस्त सा होकर एक तरफ लुडक गया..शबाना उसके सीने पर सिर रखकर होल से मुस्कुराइ..उसने भी आज से पहले ऐसी ठुकाई नही करवाई थी.वो आज बहुत खुश थी..उसने साइड की ड्रॉयर से दस हज़ार की गड्डी निकाल कर जग्गा को दे दी...जग्गा की तो लॉटरी निकल गयी...पहले जावेद ने दस दिए और अब शबाना ने भी...इतने पैसे तो आज तक उसने नही देखे थे.

उसके बाद दोनों ने अपने अपने कपड़े पहने..और जग्गा वहाँ से पॉकेट लेकर बाहर निकल आया..

वो बड़ी सी सतर्कता से इधर उधर देखकर बाहर निकल रहा था...उसे बिल्डिंग से बाहर निकलता देखकर कल्लन की नज़र उसपर पड़ी और वो एकदम से चिल्लाया : "अर्रे भाई...वो देखो ...वो रहा साला जग्गा ..."

जावेद ने चोंक कर उसी तरफ देखा, तब तक जग्गा ने भी उन्हे देख लिया था और वो भागकर उनके पास पहुँच गया.

जावेद को तो विश्वास ही नही हो रहा था की जग्गा बिल्डिंग से निकला है .....पर वहाँ कोई तमाशा करना बेकार था, वो जल्दी से गाड़ी मे बैठे और वापिस झुग्गी की तरफ चल दिए..

रास्ते मे जग्गा को पता चल गया की पुलिस तैनात थी और वो पकड़ा जा सकता था..इसलिए वो लोग भी वहाँ पहुँच गये थे..

जग्गा के चालक दिमाग़ ने झट से कहानी बना ली और उसने जावेद को विश्वास दिला दिया की वो भी पुलिस से बचने के लिए काफ़ी देर तक बिल्डिंग मे ही छुपा रहा और उनके जाने के बाद ही बाहर निकला...और फिर उसने वो पॉकेट जावेद को दे दिया...वो भी काफ़ी खुश हुआ...क्योंकि आज उसकी जान जो बच गयी थी...वरना शेट्टी भाई तो उसकी लाश भी ना मिलने देते..

# ८

जावेद  के अचानक चले जाने के बाद कुछ देर तक तो रूपा वही पानी मे खड़ी रही.....इतना मज़ा आ रहा था ...और अचानक जावेद कहीं चला गया...आज तो अगर जग्गा घर पर होता तो उसके उपर चड़कर वो उसके लिंग को अपने अंदर ले लेती...इतनी आग लगी हुई थी उसके अंदर..

वो ऐसे ही बिना कपड़े बदले अपना भीगा बदन लिए अपने झोपडे की तरफ चल दी...वो किसी रोबोट की तरह चले जा रही थी...उसके मन मे उथल पुथल मची हुई थी..जो ऐसे मिटने वाली नही थी...उसे अपनी योनी पर चींटियां सी रेंगती महसूस हो रही थी..ऐसा तो उसके साथ आजतक नही हुआ था...अगर हुआ भी होगा तो उसे याद नही, वैसे भी उसकी यादाश्त खोए सिर्फ़ एक हफ़्ता ही तो हुआ था.

तभी उसे याद आया की वो खाने के लिए पैसे भी लाई है...भूख भी लगने लगी थी उसको..वो जैसे किसी सपने से एकदम से बाहर आई..और जब उसे ये एहसास हुआ की वो पूरी गीली है और उसके कपड़े उसके बदन से चिपक कर पारदर्शी लुक दे रहे हैं और आने जाने वाले सभी लोग उसके बदन को आँखे फाड़े देख रहे हैं..उसने जल्दी से अपने साथ लाया हुआ टावल अपने उपर लपेट लिया..

सामने ही उसको एक हलवाई की दुकान दिख गयी..वो वहाँ पहुँची और देखने लगी की क्या मिल सकता है उसके पास ..पर वहाँ कुछ सुखी मिठाइयों के अलावा कुछ नही था..एक मोटा सा आदमी गल्ले पर बैठा था.

रूपा : "भाई साहब, कुछ खाने के लिए नही है क्या आपके पास..."

उसने उसे उपर से नीचे तक देखा और बोला : "बस जी, अभी तैयारी कर रहा हू, आलू पूरी का नाश्ता बनाते हैं हम...थोड़ी ही देर मे पूरी निकालने वाला हू.."

वो पूरी भीगी हुई थी और उसके अंदर से पानी टपक रहा था..उसकी हालत देखकर वो हलवाई बोला : "तू जग्गा की लुगाई है ना ...?"

रूपा ने हाँ मे सिर हिला दिया..

हलवाई : "तू जा...मैं अपने लड़के के हाथ भिजवाता हू तेरे लिए आलू पूरी.."

रूपा वहां से चली गयी..अब उसको सच मे काफ़ी तेज भूख लगी थी..भूख के मारे उसके जबड़े खींच रहे थे..

पर पहले उसने अपने कपड़े बदलने की सोची, उसने दरवाजा बंद कर दिया और अपने सारे कपड़े उतार कर सूखने के लिए टाँग दिए..उसका नग्न संगमरमरी बदन चमक रहा था...वो दीवार पर लगे छोटे से शीशे मे अपनी बड़ी बड़ी छातियाँ देखकर मुस्कुरा दी...आख़िर उसको देखकर ही तो ज़्यादातर मर्द खुश होते हैं..और जग्गा भी तो उस दिन कैसे लतिका की ठुकाई करते हुए उसके स्तन चूस रहा था...दबा रहा था...और वो भी कितनी आनंदविभोर हो रही थी उनको दबवाते हुए..

जग्गा और लतिका की ठुकाई के बारे मे सोचते ही उसके अंदर एक अजीब सी लहर दौड़ गयी...उसके हाथ अपने आप अपने स्तनों के उपर चले गये और उसने उन्हे पूरी ताक़त से दबा दिया..

"अहह सस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स ..."

वो खुद ही सीत्कार उठी अपने आप को दबाकर..गोरे गोरे स्तनों पर उसकी उंगलियों के निशान छप गये,पर मज़ा भी काफ़ी मिला उसको..ऐसा लगा की अंदर की नसों मे जो हल्का दर्द हो रहा था उनको राहत मिल गयी है ..

फिर उसके हाथ अपने आप अपनी योनी की तरफ खिसकने लगे..क्योंकि वहां तो ज्यादा तकलीफ हो रही थी उसको इस वक़्त .....

पर तभी बाहर का दरवाजा खड़का...वो फिर से अपने सपने से बाहर निकली..कौन हो सकता है इस वक़्त ....वो पूरी नग्न खड़ी थी.

उसने दरवाजे के पास जाकर पूछा : "कौन है ..."

बाहर से किसी बच्चे की आवाज़ आई .. "जी मैं महेश....रामलाल हलवाई के यहा से आया हू...उन्होने नाश्ता भिजवाया है.."

उसने अपने बदन पर जल्दी से टावल लपेट लिया...और दरवाजा खोल दिया, ये सोचकर की हलवाई की दुकान पर काम करने वाला कोई बच्चा होगा..

पर उसके कद को देखकर वो हैरान रह गयी...वो तो जग्गा से भी लंबा था..उमर होगी करीब २० के आस पास ...एक बनियान और पुराना सा पायजामा पहना हुआ था..जो जगह जगह से फटा हुआ था.

वो एकदम से अंदर आ गया,और सीधा किचन वाली जगह पर पहुँचकर उसने अपने हाथ मे पकड़ी थाली रख दी..

महेश : "जग्गा भाई ने पहले भी कई बार नाश्ता मँगवाया है हमारी दुकान से...और पिछली

बार की थाली अभी तक वापिस भी नही की...पिताजी वो भी मंगवा रहे हैं.."

वो रामलाल हलवाई का लड़का था. चेहरे और आवाज से बिल्कुल बच्चा ही था पर कद-काठी से पता चलता था की वो जवानी की दहलीज पर खड़ा है..

उसको तो जैसे कोई फ़र्क ही नही पड़ा था रूपा को केवल टावल मे खड़ा देखकर..वो अपनी ही मस्ती मे इधर उधर देखता हुआ प्लेट ढूँढने लगा..

रूपा को पता था की वो प्लेट कहा है, वो अंदर वाले हिस्से मे आई और एक अलमारी खोलकर उसमे से प्लेट निकाल कर दे दी..

प्लेट देते हुए रूपा के हाथ महेश के हाथों से छू गये...और वो सिहर उठी...वो पहले से ही गर्म थी..मर्द का स्पर्श ऐसी अवस्था मे औरत को और उत्तेजित कर देता है..वही हाल रूपा का भी हुआ..उसकी नज़र एकदम से महेश के लिंग वाले हिस्से पर चली गयी...वहाँ बिल्कुल शांति थी..वो थोड़ा और आगे आई...और महेश की आँखों मे आँखे डालकर बोली : "अभी थोड़ी देर रुक जा,मैं नाश्ता कर लू..फिर तू ये थाली भी साथ ही लेकर चले जाना, वरना ये भी पिछली बार की तरह यहीं पड़ी रहेगी..."

रूपा को अपने इतने पास देखकर महेश सकपका सा गया..उसने आज तक किसी लड़की को छुआ तक नही था...सारा दिन दुकान पर काम करते रहने की वजह से उसका कोई ऐसा दोस्त भी नही था जो उसे सहवास के बारे मे सोचने के लिए उकसाता..यानी उसकी कोई बुरी संगत नही थी...

पर औरत का शरीर होता ही ऐसा है..समझ ना होते हुए भी सामने वाला उसके जाल मे फँस जाता है...रूपा ने जो टावल बाँधा हुआ था, वो उसके बड़े बड़े स्तनों को पूरी तरह से ढक नही पा रहा था..उसके उभरे हुए स्तन देखकर महेश की हालत भी खराब होने लगी...और उसके लिंग मे कड़ापन आने लगा..

वो रूपा की बात मानकर वहीं ज़मीन पर बैठ गया..और रूपा नाश्ता करने लगी..

अब उसका ध्यान आलू पूरी से ज़्यादा महेश के लिंग पर था..जो धीरे धीरे खड़ा होकर उसके पायजामे मे उभर रहा था..

भूख तेज थी, इसलिए नाश्ता जल्दी ही ख़त्म हो गया.

अब थी असली काम करने की बारी...रूपा ने पहले से ही सोच लिया था की आज जो भी हो जाए, वो मज़े लेकर ही रहेगी...जग्गा के आने तक का इंतजार वो नही कर सकती थी..

जैसे ही महेश प्लेट लेने के लिए आगे आया..रूपा ने ज़ोर से साँस ली और उसकी छातियाँ

फूल कर और बाहर निकल आई...और उसके साथ ही उसके टावल की गाँठ भी खुल गयी...और एक ही पल मे उसका टावल नीचे पड़ा था...और वो पूरी नग्न होकर महेश के सामने खड़ी थी.

महेश तो अपनी आँखे झपकाना भूल गया...उसने नारी का ये रूप तो आजतक नही देखा था...उसका मुँह खुल गया और होंठ सूख गये...

रूपा बड़ी ही अदा से मटकती हुई उसके पास आई और बोली : "ऐसे क्या देख रहा है रे ...कभी लड़की नही देखी क्या.."

उसने ना मे सिर हिला दिया..

रूपा समझ गयी की उसे सहवास के बारे मे कोई ज्ञान नही है...वैसे पता तो उसको भी नही था ज़्यादा...उसने तो सिर्फ़ एक बार ही जग्गा और लतिका की ठुकाई देखी थी...पर जिस तरह जावेद ने उसकी योनी की रगड़ाई की थी वो उसे बहुत अच्छा लगा था...उसने सोचा की चलो आज यही करवा लेती हू इस महेश से...अगर मौका मिला तो आगे भी करवा लेगी..

वो धीरे धीरे चलती हुई उसके पास पहुँची और महेश के काँपते हुए हाथ पकड़ कर अपनी छाती पर रख दिए..

अब इतना तो महेश भी जानता था की स्तनों को कैसे हेंडल करते हैं...उनके उपर हाथ लगते ही उसकी उंगलियों ने अपनी पकड़ बना ली और उन्हे ज़ोर से दबा दिया...

"अहह ..... सस्स्स्स्स्स्स्सस्स .....उम्म्म्मममममममम"

वही दर्दनाशक अहसास मिला रूपा को और वो किसी बेल की भाँति महेश के बदन से लिपट गयी...

बेचारा अबोध सा महेश , अपनी किस्मत पर उसे अभी तक विश्वास नही हो रहा था...ऐसी सुंदर लड़की उसके गले से लिपटी खड़ी है और वो भी पूरी नग्न...उसने उसकी नितंब के उपर अपने पंजे जमाए और उसे हवा मे उठा लिया...

बिल्कुल फूल जैसा था उसका बदन...इतनी हल्की थी वो ..

रूपा तो अभी नहा कर आई थी..पर महेश सुबह से तो क्या ,शायद पिछले कई दिनों से नहाया नही था...झुग्गी मे रहने वाले लोग शायद ऐसे ही होते हैं...उसके शरीर की दुर्गंध काफ़ी ज्यादा थी, पर रूपा के सिर पर उत्तेजना का जो नशा चड़ा हुआ था उसके आगे उसे वो दुर्गंध भी

खुशबू के जैसी लग रही थी..

उसने अगले ही पल महेश के होंठों पर हमला बोल दिया...और उसे नोचने कचोटने लगी...ऐसे जैसे कोई जंगली बिल्ली अपने शिकार के साथ करती है..

महेश के लिए तो ये सब नया था...पहली बार जो था उसके साथ...पर किसी लड़की के साथ ऐसे मज़े मिलते है, ये एहसास उसे आज ही हुआ था..

रूपा के हाथ सीधा उसके लिंग के उपर जा चिपके...और उसकी लंबाई नापकर वो भी हैरान रह गयी...जग्गा के जितना तो नही था..पर काफ़ी लंबा था वो भी..

वो झटके से नीचे बैठी और उसने महेश का पायजामा नीचे खिसका दिया..उसका लिंग एकदम से उसके सामने खड़ा होकर फुफ्कारने लगा...और बिना कुछ सोचे उसने उसे अपने मुँह के अंदर ले लिया...

महेश बेचारे ने तो आज तक मूठ भी नही मारी थी...उसके लिंग के टोपे की खाल अभी तक चिपकी हुई थी...इसलिए वो पूर वरह से पीछे भी नही हो रही थी...बल्कि उसे वहाँ तकलीफ़ होने लगी..दर्द होने लगा..

रूपा को लगा की शायद वो ही कुछ ग़लत कर रही है...उसके लिए भी तो ये पहला मौका था किसी के लिंग को चूसने का..उसने महेश के लिंग को मुँह से निकाल दिया..उसके लिंग की खाल पीछे तक नही जा पा रही थी..

पर अगर ऐसा ही रहा तो वो अपनी प्यास कैसे बुझाएगी..तभी उसे जग्गा का किया हुआ एक और कारनामा याद आ गया, जब उसने लतिका की योनी को अपने होंठों से चूसा था तो लतिका किस तरह से मज़े ले-लेकर चीखे मार रही थी..

वो झट से चारपाई पर लेट गयी और महेश को अपनी योनी के उपर झुका लिया..वो बेचारा आँखे फाड़े उसका चेहरा देखने लगा...की करना क्या है..

रूपा : "चल,जल्दी से यहा अपने होंठ रख दे..और यहाँ चाट..."

महेश उस वक़्त ऐसी हालत मे नही था की उसे मना कर सके...उसने वैसा ही किया...और उसके मोटे मोटे हलवाई वाले होंठ अपनी योनी पर लगते ही उसकी योनी पर रेंग रही चींटियाँ गायब सी होने लगी...और वो मज़े से दोहरी होकर उसके बाल पकड़ कर अपनी योनी पर रगड़ने लगी.

"आआयययययीीईईई

ऐसे मज़े की तो उसने कल्पना भी नही की थी..हाथ लगाने का अलग ही असर था पर किसी के गीले होंठ ऐसा मज़ा दे सकते हैं, ये उसे आज ही पता चला..

रूपा की योनी मे उबाल सा आने लगा..उसे अंदर से महसूस होने लगा की उसे अब जीभ के बदले कुछ और ही चाहिए अपने अंदर...और उसने अपनी पूरी ताक़त लगा कर महेश को अपने उपर खींच लिया...और उसकी कमर पर अपनी टांगे लपेट कर उसके लिंग को अपनी योनी के उपर रगड़ने लगी..

महेश बेचारा पहले से ही अपने लिंग पर हुए हमले से कराह रहा था..उसकी आग उगलती योनी की तपन और हल्के बालों की चुभन उससे बर्दाश्त नही हुई और वो वापिस खिसक कर नीचे आ गया..

एक अनाड़ी से अपनी पहली ठुकाई करवाने मे कितना नुकसान है ये अब रूपा को समझ आ रहा था...उसकी आग तो वो शांत कर ही नही सकता था..क्यो ना उपर के ही मज़े लेकर अभी के लिए शांति पहुँचा ले वो..

और उसने फिर से उसे नीचे खदेड़ दिया..और इस बार महेश को उसने नीचे लिटा दिया..और खुद उछलकर उसके उपर जा चढ़ी ...

रूपा ने महेश के शरीर पर बैठकर उपर खिसकना शुरू किया...वो जहा जहा से होकर उपर जाती जा रही थी, उसकी योनी से निकल रही चाशनी अपने निशान पीछे छोड़ती जा रही थी..महेश का पूरा शरीर उसकी मिठास मे नहा कर मीठा हो गया.

और जब अंत मे वो उसके मुँह तक पहुँची तो अपनी आँखो के ठीक सामने महेश को ताजमहल नाचता हुआ महसूस हुआ...इतनी सुंदर योनी और वो भी बिन ठुकी , वो उसकी सुंदरता देखकर मंत्रमुग्ध सा हो गया...और अपने आप ही उसकी लपलपाती हुई जीभ निकल कर उसके इस्तकबाल के लिए निकल पड़ी..और जैसे ही उसकी रस बरसाती योनी ने उसके मुँह को छुआ, ऐसी आवाज़ आई जैसे ठन्डे पानी में गर्म लोहा रख दिया हो ....सर्र्ररई की आवाज़ के साथ रूपा ने अपनी योनी को उसके मुँह के उपर झोंक दिया..

"अहह .....उम्म्ममममममममममममममममम..... एसस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स...."

रूपा के मुँह से तेज हुंकार सी निकलने लगी...गर्म साँसे इतनी तेज़ी से वो बाहर फेंक रही थी की महेश के चेहरे तक टकरा रही थी वो...और फिर रूपा ने महेश के बाल पकड़ कर अपनी पकड़ मजबूत करी और उसके मुँह पर किसी कुशल घुड़सवार की तरहा घुड़सवारी करने लगी...आगे-पीछे घिस्से लगाते हुए वो अपनी योनी के होंठों को उसके मोटे और खुरदुरे होंठों पर रगड़ने लगी....

और फिर एक जोरदार तूफान आया रूपा के अंदर....ठीक वैसा ही जैसा झोपड़े मे आया था,

उस घोड़े के लिंग को पकड़कर...बल्कि उससे भी ज़्यादा भयंकर...और उसने अपने अंदर का सारा मीठा और गाड़ा रस महेश के मुँह मे भर दिया...

हलवाई होने के नाते महेश ने एक से बड़कर एक मिठाइयाँ खाई थी...पर ऐसी मिठास उसने आज तक नही चखी थी...वो लॅप-लॅप करते हुए सारी चाशनी पी गया उसकी..

रूपा भी निढाल सी होकर उसके उपर गिर पड़ी...रूपा का मांसल शरीर महेश को बहुत अच्छा लग रहा था...पर वो मन ही मन अपनी नासमझी को भी कोस रहा था, क्योंकि उसे पता था की असली काम जो होना चाहिए था वो कर नही पाया...उसका लिंग क्यो इतना दर्द करने लगा...इसका कोई इलाज जल्द ही ढूँढना पड़ेगा...

रूपा उठी और उसने अपने कपड़े पहन लिए,महेश को भी उसने जाने के लिए कह दिया, वो अपने बर्तन उठा कर चलता बना...

आज के लिए तो रूपा ने अपने आप को शांत कर लिया था...पर ज़्यादा दिनों तक वो अपनी योनी की प्यास को ऐसे ही नही बुझाना चाहती थी...इसके लिए अब उसको किसी ना किसी का लिंग चाहिए ही था...फिर वो अब चाहे जग्गा का हो या जावेद का...

उसने सोच लिया की पहला मौका मिलते ही वो अपनी प्यास बुझवाकर ही रहेगी.

# ९

जावेद को अपनी किस्मत पर विश्वास ही नही हो रहा था...वो जानता था की इस डील मे अगर कोई ग़लती हो जाती, यानी जग्गा अगर आज पुलिस के हाथो पकड़ा जाता तो शेट्टी भाई ने उसकी नितंब मार लेनी थी..वो आज काफ़ी खुश था..

उसने कल्लन को वो पॉकेट लेकर शेट्टी भाई को देने के लिए भेज दिया और खुद जग्गा को लेकर एक होटल मे चल दिया...आख़िर उसने आज उसके करोड़ो रूपए के पॉकेट की सही सलामत डेलिवरी जो ली थी और अपनी जान बचने की खुशी भी थी जावेद को..इसलिए वो अपनी खुशी को सेलेब्रेट करना चाहता था.

जग्गा को लेकर जावेद एक ४ स्टार होटल मे पहुँचा, जहा वो अक्सर मज़े लेने के लिए जाया करता था..जग्गा के लिए ये पहला अवसर था किसी बड़े होटेल मे जाने का, वो घबरा भी रहा था..और अंदर ही अंदर उसे रूपा की भी चिंता सता रही थी..पर जावेद ने जब कहा की उसे आज हर तरह की मस्ती करवाएगा तो शराब की बोतलें और नग्न लड़किया उसकी आँखो के सामने नाचने लगी..

जग्गा तो था ही एक नंबर का ठरकी और उपर से फ्री की अँग्रेज़ी दारू पीने का अवसर भी वो खोना नही चाहता था, वो चुपचाप उसके साथ अंदर आ गया..

पर जग्गा की हालत तो वही थी ना, भिखारी वाली..जावेद उसे सीधा होटेल के अंदर बने स्पा एंड मसाज सेंटर मे लेकर गया..और वहां के मेनेज़र के हाथ मे नोट पकड़ा कर उसे धीरे से सब समझा दिया..वो मॅनेजर भी जावेद को जानता था इसलिए उसने चुपचाप वो पैसे जेब मे रखे और जग्गा को अपने साथ अंदर ले गया..वैसे तो उसकी भिखारी वाली हालत देखकर वो भी अपनी नाक भो सिकोड रहा था, पर जावेद के बारे मे वो जानता था की वो अंडरवर्ल्ड का बंदा है, इसलिए उसको वो मना नही कर सकता था.

जावेद उसके लिए कुछ नये कपड़े लेने के लिए पास ही बने एक शोरूम की तरफ चल दिया..और साथ ही उसने होटल मॅनेजर को बोलकर अपने और जग्गा के लिए कुछ विदेशी "माल" का भी इंतज़ाम करने के लिए कह दिया.

जग्गा तो स्पा के अंदर आते ही वहां की लड़कियों को देखकर पागल सा हो गया..इतनी सुंदर सुंदर लड़किया थी वहां ..ज़्यादातर चींकी टाइप की थी और कुछ मोटी छातियों वाली नॉर्थ साइड की भी..

ग्राहक को देखकर मुस्कुराना उनकी ड्यूटी थी...पर ऐसे भिखारी जैसे ग्राहक को देखकर सभी एक दूसरे को ताक रही थी...उनके मॅनेजर ने जब जाकर उन्हे समझाया की वो किसके साथ आया है और उन्हे कितने सारे पैसे मिले है तो उनके सामने मना करने का सवाल ही नही था.

उनमे से दो सुंदर सी दिखने वाली लड़किया जग्गा के पास आई और उसे अपने साथ लेकर एक कमरे मे चली गयी.

जग्गा के पेट मे गुदगुदी सी हो रही थी, जो भी हो रहा था उसके लिए किसी सपने जैसा ही था..

अंदर पहुँचकर उन लड़कियो ने जग्गा को कपड़े उतारने के लिए कहा, उसने कपड़े उतार कर अलमारी मे टाँग दिए..अब उसके शरीर पर सिर्फ़ एक पुराना सा कच्छा था ..जो कई जगह से फटा भी हुआ था..और लड़कियो को देखकर वैसे भी उसका लिंग खड़ा हो चुका था पूरा का पूरा..

उसकी शक्ल तो वैसे भी भिखारियो जैसी थी..पर उसके गठीले शरीर और उसके उफनते लिंग को देखकर वो दोनो लड़कियो के अंदर कुछ कुछ होने लगा..

उनके नाम थे दिया और शुमोना..

दिया तो शक्ल से ही बंगालन लग रही थी..उसकी बड़ी बड़ी आँखे और मोटे होंठ, हल्का सांवला रंग और मोटे मोटे स्तन और उतनी ही मोटी नितंब ..

शुमोना शायद आसाम की होगी..उसका गोरा रंग और छोटे छोटे स्तन बड़े ही गज़ब के लग रहे थे..

जग्गा के शरीर पर काफ़ी मैल सी थी..इसलिए उन्होने पहले उसको नहलाने की सोची..उन दोनो लड़कियो ने भी अपने कपड़े उतार दिए और वो सिर्फ़ ब्रा-पैंटी मे खड़ी थी..उनके जिस्म को देखकर उसके लिंग का साइज़ पूरे आकार मे आ गया...

वो दोनो जग्गा को लेकर एक आलीशान से बाथरूम मे आ गयी और शावर चला दिया..

शुमोना ने जग्गा के शरीर पर साबुन लगाना शुरू किया और दिया ने अपने हाथ मे एक स्क्रबर लेकर उसके शरीर को रगड़ना शुरू कर दिया...जग्गा तो अपने आप को आसमान पर उड़ता हुआ महसूस कर रहा था...उसने तो सोचा भी नही था की उसके जैसे भिखारी को ऐसे दिन भी देखने को मिलेंगे..

शुमोना ने उसके सिर पर शेंपू लगाया, और पूरे शरीर को बॉडी वॉश से दोबारा से रगड़ा...

उसको नहलाते नहलाते वो दोनो भी पूरी तरह से भीग चुकी थी..पर ये तो उनका रोज का काम था..उसी काम के तो उन्हे पैसे मिलते थे..

अचानक शुमोना ने जग्गा के कच्छे को पकड़कर नीचे खींच दिया..जग्गा ने अपने लिंग को छुपाने की कोई कोशिश नही की पर उसे आश्चर्य ज़रूर हुआ की कितनी बेशर्मी से उसने वो कर दिया...शायद यही काम होगा इनका रोज का..

वो दोनों उसके लिंग के साइज पलकें झपकना भूल गयी

उसे अच्छी तरह से नहलाने के बाद वो उसे बाहर ले आई...जग्गा ने शीशे मे अपना पूरा अक्स देखा तो अपनी सफाई देखकर वो भी हैरान रह गया...पर चेहरे पर घनी दाढ़ी और लिंग के चारों तरफ घना जंगल उसे अभी भी जंगली लुक दे रहा था..

दिया ने जग्गा को एक बड़े से टेबल पर लिटाया और अगले ही पल दोनो ने अपने अपने बचे हुए कपड़े भी निकाल फेंके..

अपने सामने दोनो को एकदम से नग्न देखकर जग्गा के सब्र का बाँध टूट गया और वो एकदम से उठा और शुमोना के रसीले बदन से लिपट गया..

वो एकदम से चिल्लाई : "स्टॉप सर ....आप ये क्या कर रहे हैं..."

जग्गा बेचारा एकदम से रुक गया...वो तो समझ रहा था की पहले उसको नग्न करके और फिर खुद नग्न होकर वो उसे ठुकाई का निमंत्रण दे रही हैं..पर फिर उन्होने समझाया की वो दोनो मिलकर उसे स्पेशल मसाज देने वाली हैं..और उसके लिए वो बिना कपड़ो के ही अपने कस्टमर के सामने आती हैं..

वो समझ गया, उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ..वैसे तो वो इस तरह से मानने वालो मे से नही था, पर उँचे लोगो की उँची बातें , ये सोचकर वो कुछ ना बोला और चुपचाप टेबल पर लेट गया.

शुमोना ने अपने हाथ मे एक तेल की बोतल ली, उसमे से अलग ही तरह की खुशबू आ रही थी..और उसके गठीले शरीर पर मलने लगी..उसकी छातियो और कंधो को वो अपने नाज़ुक हाथों से सहलाने लगी..वो उसके सिर के उपर खड़ी हुई थी, जिसकी वजह से उसके लटके हुए स्तन उसके चेहरे पर टच कर रहे थे..वो आगे झुकती तो उसके दोनों स्तन उसके चेहरे पर दब जाते..पर जग्गा अपनी तरफ से कोई भी पहल करके फिर से लज्जित नही होना चाहता था.

दिया ने उसके पैरों की मालिश करनी शुरू कर दी..और धीरे धीरे उसकी जाँघो से होती हुई ,लिंग को छोड़कर, पेट पर भी वही तेल मलने लगी..वो भी जब आगे झुकती तो उसके स्तन जग्गा के पैरों के पंजों के उपर दब जाते..और धीरे धीरे दिया ने अपनी लंबी उंगलियाँ उसके लिंग के चारों तरफ भी घुमानी शुरू कर दी...उसकी बड़ी बड़ी गोटियों को जैसे ही दिया ने

अपने हाथों मे पकड़ा ,जग्गा के पंजों के उपर लटक रहे स्तनों पर जग्गा के पैरों की उंगलियों ने अपनी पकड़ बना ली और उसके स्तनाग्र को जग्गा ने अपने अंगूठे और साथ वाली उंगली के बीच फँसा कर ज़ोर से दबा दिया...

"आआयययययययययययययययययीईईईईईईईईईईईईईईई .... सस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स ...."

दिया ने भी एक जोरदार सिसकारी मारते हुए उसके लिंग को एकदम से पकड़ा और ज़ोर से दबा लिया...जग्गा को एकबार तो ऐसा लगा की वो उसे उखाड़ कर अपने घर ही ले जाएगी..उसकी नितंब अपनी जगह से उपर उठ गयी..और उसका लाभ उठाते हुए दिया ने अपने तेल से सने हाथ उसकी नितंब के नीचे लगा कर वहाँ भी तेल मल दिया.

उपर की तरफ मालिश कर रही शुमोना भी अब अपने असली रंग मे आने लगी थी..वो जान बूझकर अपने मोटे स्तन उसके होंठों के उपर लटका रही थी, जैसे कोई दासी अपने राजा को अंगूर खिलाती है, जग्गा ने भी बड़े ही राजसी अंदाज मे अपना मुँह खोला और उसकी छाती पर लगे अंगूर को अपने मुँह के अंदर लेकर ज़ोर से चुभला दिया..

उसके मुँह से भी एक जोरदार सिसकारी निकल आई..

"आआआाागगगगगगगगगगगगघह ..... उम्म्म्मममममममम "

अब जग्गा का कब्जा दोनो के स्तनाग्र पर था..नीचे उसने अपने दोनो पैरों की उंगलियों के बीच दिया के स्तनाग्र फँसा रखे थे और उपर अपने मुँह के अंदर शुमोना का और अपने हाथ से उसके दूसरे स्तनाग्र को..

कुल मिलाकर माहौल अब काफ़ी गर्म हो चुका था..

जग्गा ने फिर से पहल करने की सोची और दिया को अपने उपर खींचकर अपने लिंग पर बिठाने की कोशिश करने लगा...

वो एक बार फिर से चीखी : "नही सर ...आप ऐसा नही कर सकते...ये एलाउ नही है..."

जग्गा को बहुत गुस्सा आया...साली ये कैसी लड़कियाँ है...उसके सामने पूरी नग्न खड़ी है, उसके शरीर से खेल रही है, अपने शरीर से खेलने दे रही है, पर ठुकाई का टाइम आते ही कहती है की ये एलाउ नही है...

पर उसका तो ये पहला टाइम था, शायद इन लड़कियो की लिमिट यहीं तक ही है..

वो अपने मन पर काबू करते हुए फिर से लेट गया.

शुमोना बोली : "सॉरी सर ...पर ठुकाई एलाउ नही है...बाकी जो भी करना चाहे आप कर सकते हैं..."

भागते भूत की लंगोटी ही सही...ये सोचकर उसने चबर-चबर बोल रही शुमोना के मुँह के अंदर अपना लिंग ठूस कर उसे चुप करा दिया...और दिया को अपने पास बुलाकर उसकी छोटी सी योनी के अंदर अपनी मोटी उंगली घुसेड दी..

दोनो सी-सी करती हुई मचलने लगी...

शुमोना ने आजतक इतने बड़े लिंग के दर्शन नही किए थे...उसे हेंडल करना उसके लिए काफ़ी मुश्किल हो रहा था..वो सही तरह से उसे अपने मुँह मे भी नही ले पा रही थी..

और दूसरी तरफ अपनी योनी के अंदर जग्गा की उंगलियों की थिरकन से दिया किसी नर्तकी की तरह नाचने लगी...और जग्गा के हल्के से झटके ने उसके चेहरे को उसके एकदम पास कर दिया...और अगले ही पल जग्गा के खूंखार होंठों ने उस हिरनी के होंठों को अपने मुँह मे दबोचकर उसे चूसना शुरू कर दिया...

जग्गा के दुर्गंध भरे मुँह से वो पीछा छुड़वाना चाहती थी, पर उसकी मजबूत पकड़ और अपनी योनी पर मिल रही मसाज की वजह से वो ऐसा नही कर पाई..और वहीं खड़ी होकर उसका साथ देने लगी.

जग्गा ने आज तक एक साथ दो दो लड़कियो से मज़े नही लिए थे...पर आज उसे ये एहसास हो गया था की ऐसी अय्याशी का भी अपना ही मज़ा है..

दिया भी अब जग्गा से अलग हुई और वो भी उसके सामने बैठ कर शुमोना की हेल्प करने लगी...दोनो बारी बारी से जग्गा का लिंग चूसने लगी...जग्गा के लिए ये एहसास ऐसा था जैसे वो पूरी दुनिया का राजा है..और अपनी दासियों से वो अपने लिंग को चुस्वा रहा है..

वो आराम से बैठकर अपने लिंग को चुसवाने का मज़ा लेने लगा..

और उसे जल्द ही ये एहसास हो गया की उसके अंदर एक तूफान बनने लगा है, उसकी खिंच रही मांसपेशियो को देखकर वो दोनो भी समझ गयी की सावन की बारिश कभी भी हो सकती है..

शुमोना ने अपने हाथ मे जग्गा के लिंग को पकड़कर जोरों से हिलाना शुरू कर दिया, और दोनो ने अपने अपने मुँह उसके सामने भूखी कुतिया की तरह खोल लिए..

और एक तेज गड़गड़ाहट के साथ जग्गा लिंग का बादल फट गया और उसके बीच से तेज बारिश की बूंदे निकलकर उनके चेहरे पर गिरने लगी और वो उसके मीठे रस को अपने अपने मुँह मे कैच करने की कोशिश करने लगी..

जग्गा तब रुका जब उन दोनो के चेहरे पर अपने सफेद रस की पूरी परत बिछा चुका था वो...बारिश के साथ साथ स्नो फाल का एहसास हो रहा था उन दोनो को अब..

वो दोनो जग्गा को लेकर फिर से बाथरूम मे चली गयी और उसे दोबारा रगड़ रगड़ कर नहलाया..वैसे तो कुछ ही देर मे जग्गा का लिंग दोबारा खड़ा हो गया, पर उसके बाद भी वो ठुकवाने के लिए तैयार नही हुई..

उसको अच्छी तरह से नहलाने के बाद वो तीनो बाहर आ गये, और जग्गा को वहीं छोड़कर दोनो ने अपने अपने कपड़े पहने और बाहर निकल गयी...

जग्गा ने अपने निचले हिस्से पर टावल लपेटा और वहीं बैठा रहा ..

कुछ ही देर मे जावेद अंदर आया...

उसके चेहरे पर अजीब सी मुस्कान थी , वो बोला : "क्यो जग्गा..कैसा लगा..."

जग्गा भी मुस्कुरा दिया : "सही था भाई...ऐसा मज़ा तो आज तक नही मिला.."

जावेद भी मन ही मन सोचने लगा की साले छक्के से घर पर अपनी बीबी की गर्मी तो शांत नही की जाती और यहा पर डींगे हांक रहा है...इसने तो कुछ भी नही किया होगा..

पर बेचारा असलियत नही जानता था..जो जल्द ही उसके सामने आने वाली थी..

क्योंकि जावेद ने एक विदेशी लड़की का इंतज़ाम करवा लिया था..और दोनो एक ही कमरे मे मिलकर उसे पेलने वाले थे..

जावेद के हिसाब से तो जग्गा के बस का कुछ नही था...इसलिए वो मन ही मन खुश हो रहा था की वो अकेला ही उस रशियन लड़की की योनी मारेगा...पर वो ग़लतफहमी भी जल्द ही दूर होने वाली थी उसकी.

जावेद अपने साथ जग्गा के लिए नये कपड़े लेकर आया था...वो उसे देकर बाहर उसका

इंतजार करने लगा.

जब नये कपड़े पहन कर जग्गा बाहर निकला तो जावेद भी उसको पहचान नही सका..वो काफ़ी अच्छा लग रहा था..

कमी थी तो उसकी घनी दाढ़ी र उसकी लंगड़ाती चाल की...वरना वो किसी फिल्मी हीरो जैसा ही लगता..

वो उसे लेकर होटेल के कमरे की तरफ चल दिया...और साथ ही साथ ये भी बता दिया की अब असली मज़ा लेने की बारी है...और वो भी एक विदेशी योनी की..

जग्गा सोच रहा था की कितना अच्छा दिन है उसकी जिंदगी का आज..पहली बार उसकी जेब मे बीस हज़ार रुपय थे, उसके बाद उसने शबाना ख़ान की भी अच्छी तरह से बजाई और फिर स्पा सेंटर मे उन दोनो लड़कियो ने उसे जन्नत का एहसास दिलाया और अब एक विदेशी लड़की की योनी भी मिलेगी..और उससे पहले महंगी शराब भी पीने को मिलेगी

वो भी जानता था की अभी अभी झड़ने के बाद जब वो पेलने पर आएगा तो उसका लिंग कितनी दूर तक उसका साथ देगा..

एक तरफ जग्गा मज़े ले रहा था और दूसरी तरफ बेचारी रूपा अपने जिस्म की आग मे सुलगकर जग्गा का इंतजार कर रही थी..

पर उसे क्या पता था की जग्गा आज किस दुनिया मे मगन है.

जग्गा और जावेद एक आलीशान कमरे मे पहुँचे, दो कमरे थे वहाँ, एक मे तो सोफा ,टेबल और बार बनी हुई थी, दूसरे कमरे मे आलीशान बेड और बाल्कनी थी..जिसमे खड़े होकर पूरा शहर दिख रहा था.

जग्गा और जावेद सोफे पर बैठ गये..तभी अंदर के कमरे से निकल कर एक रशियन लड़की बाहर आई..उसको देखकर एक पल के लिए जग्गा तो अपनी पलकें झपकना भी भूल गया, इतनी गोरी लड़की, इतने मोटे स्तन , सुनहरे बाल, लाल सुर्ख होंठ..टी शर्ट और मिनी स्कर्ट , टी शर्ट मे से उसके स्तन बाहर निकलने के लिए जैसे मरे जा रहे थे, उसने अंदर ब्रा भी नही पहनी थी..जिसकी वजह से उसके दूधिया स्तनों के उपर लगे लाल स्तनाग्र साफ़ दिख रहे थे..जग्गा तो पागल हुए जा रहा था उसको देखकर..

जावेद : "कैसी लगी..."

जग्गा बेचारा क्या बोलता, आज तो उसकी जिंदगी का ऐसा दिन था,जिसमे उसको ये पता चला था की खूबसूरत औरतें कैसी होती है...और अब ये विदेशी लड़की को देखकर और ये सोचकर की थोड़ी ही देर मे उसकी मारने को मिलेगी, उसका लिंग फटा जा रहा था..और जावेद के प्रश्न का वो कोई जवाब भी नही दे पाया..

जावेद को उसकी हालत देखकर हँसी आ गयी..वो बोला : "हा हा ... देख ले जग्गा, ये होती है असली जिंदगी...तुझे पता है, मैने इस लड़की की पहले भी दो बार बजाई है...साली को अँग्रेज़ी के सिवा कुछ समझ नही आता और हमे अँग्रेज़ी आती नही...पर ठुकाई के मामले मे ये सब बातें समझती है...अब देखता जा तू, कैसे मज़े दिलवाता हू मैं तुझे.."

उस रशियन लड़की का नाम था क्रिस्टिना, उम्र होगी सिर्फ़ २३ के आस पास ...कयामत थी सच मे..

इतना कहकर वो क्रिस्टिना की तरफ मुड़ा और बोला : "क्रिस्टिना....ड्रिंक ...ड्रिंक ...."

वो दारू की बोतलों की तरफ इशारा करते हुए उस लड़की से बोला...वो प्रोफेशनल थी..मुस्कुराते हुए वो मूडी और बार मे से एक १०० पाइपर की बोतल निकाल कर ले आई..

जावेद ने उसे पेग बनाने का इशारा किया...अब उसको अँग्रेज़ी तो आती नही थी..इसलिए टूटी फूटी अँग्रेज़ी और इशारों से काम चला रहा था..और कमाल की बात ये थी की वो सब समझ भी रही थी..

क्रिस्टिना ने दो लार्ज ड्रिंक बना कर दिए..

जावेद ने उसको फिर से कहा : "नो ..नो ...ऐसे मत दो ....डिप ..डिप .."

जग्गा की समझ मे नही आया की ये क्या डिप करने के लिए कह रहा है..पर वो शायद पहले भी जावेद के साथ आई थी और वो सब कर चुकी थी, इसलिए उसका अर्थ वो फ़ौरन समझ गयी...और उसने एक झटके मे अपनी टी शर्ट उतार फेंकी..और उपर से नग्न हो गयी..उसके मोटे मोटे सफेद खरबूजे दोनो की वहशी आँखों के सामने झूल गये..

जग्गा तो उसका बेबाकपन देखकर हैरान था...और फिर जो उसने किया, उसे देखकर तो जग्गा ने अपने लिंग पर हाथ रखकर सहलाना शुरू कर दिया..

क्रिस्टिना ने दोनो पेग उठाए...और थोड़ा झुक कर अपनी स्तनों को दोनो ग्लास मे डिप करा दिया...और फिर उन दोनो के सामने पहुँच कर उनके हाथ मे वो ग्लास थमा दिए..

दोनो ने चियर्स किया और एक ही घूँट मे दोनो ने पूरे ग्लास खाली कर दिए..

उनके सिर जैसे ही नीचे आए, क्रिस्टिना ने दोनो के सिर पकड़े और अपने शराब से भीगे हुए स्तनाग्र उन दोनो के मुँह मे घुसेड कर उन्हे अपनी छाती से चिपका लिया..

दोनो भूखे बच्चों की तरह उसका दूध पीने लगे..उसके स्तनों पर लगी मदिरा को चखने लगे....क्रिस्टिना के सेक्सी स्तनाग्र से लगकर वो शराब और भी नशीली हो गयी थी..

जग्गा ने उसकी नितंब पर हाथ रखकर ज़ोर से दबा दिया...इतनी मुलायम डबलरोटी उसने आज तक नही मसली थी...विदेशी जो थी.

जावेद ने उसकी स्कर्ट खोल दी और वो नीचे लहरा गयी...और अब उसकी रसीली , मखमली और गोरी चिट्टी योनी उन दोनो की भूखी आँखों के सामने थी..

क्रिस्टिना ने अपना एक पैर उपर उठाया और जग्गा के सिर को पकड़ कर अपनी योनी की तरफ झुकाने लगी...जग्गा ने भी पूरी उत्तेजना के साथ अपनी जीभ निकाली और उसकी बरफी जैसी मीठी योनी पर दे मारी..

उसके चेहरे पर उगी दाढ़ी और मूँछे उसकी चिकनी योनी पर चुभी और वो एक रोमांच भरे स्वर मे सिसक उठी....

"अहह.....येसस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स....."

उसने शायद ऐसे जंगली लुक वाले जानवर के साथ पहले कभी ठुकाई नही करवाई थी...

जावेद भी पहले जग्गा को मौका देकर उसकी मर्दानगी का टेस्ट लेना चाहता था...उसके हिसाब से तो जग्गा के बस का कुछ भी नही था..जो भी करना था उसको खुद ही करना था

बाद मे...इसलिए वो साइड मे हो गया..

जग्गा ने उसके मांसल जिस्म को पकड़ा और उसे हर जगह से नींबू की तरह निचोड़ने लगा..वो जैसे पागल हो गया था इतना कोरा माल देखकर..

वो भी सेक्सी आवाज़ें निकाल रही थी, जैसे सेक्सी मूवीज मे लड़कियाँ निकालती है..पूरा कमरा जग्गा की गर्म साँसों की आवाज़ और क्रिस्टिना की सेक्सी सिसकारियों से गूँज रहा था..

क्रिस्टिना जग्गा के सामने घुटनों के बल बैठ गयी..और उसकी नई पैंट की जीप खोल दी...फिर जैसे ही उसका अजगर बाहर आया, उसके मुँह से एक सिसकारी निकल गयी..शायद ये सोचकर की जब वो रेंगता हुआ उसके बिल मे जाएगा तो कितना मज़ा आएगा..

वहीं दूसरी तरफ जावेद ने जब उसके खड़े हुए लिंग को देखा तो वो भी हैरान रह गया...उसने तो आशा भी नहीं की थी की जग्गा के पास इतना बड़ा लिंग होगा...और वो भी खड़ा हुआ..ये कैसे हो सकता है.

वो हैरानी से उसे देखने लगा.

क्रिस्टिना ने अपना मुँह खोला और उसके लिंग को मुँह मे भरकर उसे प्यार करने लगी.

जग्गा भी उसके सुनहेरे बालों को पकड़कर अपने लिंग के उपर जोर जोर से मारने लगा.

कुछ देर तक ऐसे ही करने के बाद वो खड़ी हुई और जग्गा का हाथ पकड़कर दूसरे कमरे मे ले गयी..जावेद वहीं बैठा रहा..क्योंकि वहाँ से भी अंदर का नज़ारा साफ़ दिख रहा था..उसने अपने लिए एक लार्ज पेग बनाया और उन्हे देखते हुए उसे पीने लगा..

अंदर जाकर जग्गा ने अपने सारे कपड़े निकाल दिए..और अब वो जंगली भालू की तरह नग्न उसके सामने खड़ा था..

क्रिस्टिना हाइ क्लास की वेश्या थी..इसलिए शायद उसने इतना भद्दा सा दिखने वाला इंसान अपनी लाइफ मे अभी तक नही देखा था..पर जो पैसे उसको मिल रहे थे और जो लिंग उसको सामने दिख रहा था, वो बहुत था उसकी सोच को रोकने के लिए.

जग्गा ने क्रिस्टिना को अपनी बाहों मे भरा और उसके स्ट्रॉबेरी जैसे होंठों पर टूट पड़ा...उसके गुलाबी होंठों को उसने चूस चूस कर लाल कर दिया...और फिर यही हाल उसने उसकी दोनो स्तन का भी किया..

क्रिस्टिना भी उसके जंगलीपन को देखकर अपनी उत्तेजना के शिखर पर पहुँच चुकी थी...वो अँग्रेज़ी मे बड़बडाए जा रही थी .. "बाइट मी.....सक मी.....क़िस्स्स मी. ..अहह ....एससस्स .....उम्म्म्मममम "

और फिर उसके शरीर के हर हिस्से को अपनी लार से भिगोता हुआ जग्गा दक्षिण दिशा की तरफ बड़ा..और जैसे ही उसके सपाट पेट के बाद उसकी उभरी हुई योनी की दरारें उसके मुँह के सामने आई, वो उनपर टूट पड़ा...और फिर से अपनी दाढ़ी -मूँछ से भरा मुँह उसकी योनी पर फिराने लगा..

वो बिस्तर पर किसी जल बिन मछली की तरह तड़प रही थी...जग्गा अपनी लंबी जीभ से सड़प सड़प करता हुआ उसकी योनी से निकल रहा विदेशी शहद साफ कर रहा था..

अब क्रिस्टिना की हालत खराब होने लगी थी...उसने उसके बालों को पकड़कर उपर खींचा और ज़ोर से चिल्लाई : "अहह.....फककक मीसससससससससससस .....फककक मी ....यू बास्टर्ड ....."

जग्गा उसको अच्छी तरह से तडपा चुका था...इसलिए अब क्रिस्टिना से बर्दाश्त करना मुश्किल हो रहा था..

और बाहर बैठा हुआ जावेद अपनी साँस रोककर बैठ गया, वो अभी भी ये आस लगा कर बैठा था की जग्गा उसकी योनी नही मार पाएगा..

जग्गा उसके उपर आया और अपने स्टील रोड जैसे लिंग को अपने हाथ मे पकड़कर उसकी योनी पर रगड़ने लगा...पर अंदर नही डाला..उसकी ये हरकत से क्रिस्टिना पागल सी होकर हुंकारने लगी..

"फककक मीसससससससससससस ....यू बास्टर्ड.....फक्क मीीसससस ....कुत्ते...."

उसने हिन्दी वर्ड कुत्ते बोला, शायद इतना तो वो सीख ही चुकी थी इंडिया आकर..

अपने लिए कुत्ता शब्द एक विदेशी के मुँह से सुनते ही जैसे जग्गा के अंदर एक स्वाभिमान की भावना आ गयी ...वो ज़ोर से चिल्लाया : "साली .....मुझे कुत्ता बोलती है....तेरी माँ की योनी .....अभी तेरी योनी के परखच्चे उड़ाता हू, गली की कुतिया की तरह ठुकाई ना करी तो मेरा भी नाम जग्गा नही..."

और उसने अपने लिंग को बिना किसी वॉर्निंग के उसकी योनी के अंदर धकेल दिया...इतना मोटा लिंग उसकी छोटी सी योनी के अंदर जाते हुए फँस गया ..पर जग्गा उसके उपर अपने पूरे भार के साथ लेट गया..और उसका पहलवान उसकी योनी को ककड़ी की तरह चीरता हुआ अंदर तक घुस गया और उसके अखाड़े मे जाकर ही दम लिया उसने..

क्रिस्टिना की आँखों से आँसू निकल आए, इतना मोटा लिंग अपने अंदर लेकर..ये उसका पहला मौका था जब उसके अंदर इतना मोटा गया था...उसको दर्द तो हो रहा था, पर वो उसके लिंग की कायल हो उठी..उसने अपनी टांगे थोड़ी देर के लिए जग्गा की कमर मे लपेटी और उसे अपने उपर खींचकर उसे फ्रेंच किस करने लगी..

पर जग्गा अब पागल हो चुका था..वो उपर उठा और उसने क्रिस्टिना की टाँगो को दोनो दिशाओं मे फैलाकर चोडा किया और अपने लिंग को किसी पिस्टन की तरह अंदर-बाहर करने लगा..

कुछ ही देर मे क्रिस्टिना का दर्द भी गायब हो गया...और वो मस्ती मे भरकर चीखे मारने लगी..

"आहह आअहह उम्म्म्मम...येसस्स्सस्स....फककक मी...लाइक दिस ...याssssssssssssssss अ...ऑश याअ.... आई एम लविंग इट .....ह ...एसस्स..... ओफफफफ़ ..... उम्म्म्मम .....आई एम कमिंग...."

और वो झड़ गयी..

पर अपना हीरो कहाँ हारने वाला था...वैसे भी वो अभी अभी झड़ा था, इसलिए वो देर तक चलने वाला था इस बार...वो लगा रहा..

फिर वो आसान बदल बदल कर उसको पेलने लगा...कभी उसको अपने उपर खींच कर उसके स्तन चूसता हुआ धक्के मारता, कभी उसको पेट के बल लिटा कर उसकी योनी मे पीछे से लिंग डालता..और आख़िर मे जब वो झड़ने के करीब आया तो उसने उसको कुतिया वाले पोज़ मे लाकर उसकी भरी हुई नितंब को मसल मसल कर पेला ..और अंत मे उसने अपना सारा माल उसके विदेशी बॅंक मे जमा करा दिया और उसके उपर गिरकर सांड की तरह हाँफने लगा..

ये पूरा कार्यक्रम लगभग ४० मिनट तक चला था..

और बाहर बैठा हुआ जावेद उसकी ठुकाई की कला को देखकर हैरान और परेशान हुए जा रहा था...

क्रिस्टिना में और ठुकवाने की हिम्मत नही बची थी, जग्गा ने उसकी हालत इतनी बुरी जो कर दी थी.

कुछ देर बाद वो जावेद को किसी तरह से समझा बुझा कर चली गयी...जावेद का मन भी अब ठुकाई करने का नही कर रहा था...दोनो ने मिलकर बची हुई शराब की बोतल ख़त्म की और फिर दोनो वापिस अपनी झुग्गी की तरफ चल दिए.

जग्गा अपने आप को दुनिया का सबसे भाग्यशाली इंसान समझ रहा था...पर आज पूरे दिन की मेहनत और ठुकाई के बाद उसके शरीर मे कुछ भी करने की हालत नही बची थी..उपर से वो नशे मे धुत्त था...वो बस जाकर सोना चाहता था..

पर उसको नही पता था की उसका इंतजार कर रही रूपा के मन मे आज क्या प्रोग्राम चल रहा है.

# १०

जावेद ने अपनी जीप कॉलोनी के बाहर ही रोक दी, क्योंकि अंदर तक गाड़ी के जाने का रास्ता नही था..काफ़ी रात हो चुकी थी..जावेद ने किसी तरह से जग्गा को अपने कंधे का सहारा दिया और उसको लेकर झुग्गी की तरफ चल दिया.

उसके घर पहुँच कर जावेद ने दरवाजा खड़काया, और कुछ ही देर मे रूपा ने दरवाजा खोल दिया, जावेद ने जैसे ही रूपा को देखा तो वो उसको देखता ही रह गया..

उसने सिर्फ़ एक ब्लाउस और पेटीकोट पहना हुआ था..जिसमे से उसके मोटे मोटे उरोज किसी फूटबाल की तरह फँसे हुए थे..जग्गा को नशे की हालत मे देखते ही वो जल्दी से दूसरी तरफ आई और उसे अपने कंधे का सहारा देते हुए दोनो अंदर ले आए..

रूपा : "ये क्या हुआ इन्हे....शराब पी है क्या..?"

जावेद : "हाँ भाभी...आप तो ऐसे बोल रही है, जैसे जानती ही नही की ये शराब पीता है.."

अब वो क्या बोलती, वो अपने कमजोर दिमाग़ को दोष देने लगी की क्यो उसको कुछ याद नही है..

वो सोच मे डूबी हुई थी और जावेद उसके गुदाज जिस्म को घूर रहा था..पेटीकोट मे उसकी जांघो का आकार साफ़ दिख रही थी..और साथ ही साथ उसके उठते बैठते सीने पर भी उसकी गंदी नज़र थी

और उसकी कुत्ते जैसी नज़र को अपने जिस्म पर चुभता हुआ रूपा भी महसूस कर रही थी..वो तो आज पहले से ही मूड मे थी की कब जग्गा आए और कब वो उसके साथ मज़े ले..पर वो नशे की हालत मे क्या कर पाएगा और क्या नही ये तो तभी पता चलेगा जब जावेद  वहाँ से वापिस जाएगा...वो तो जग्गा की चारपाई पर ऐसे बैठ गया जैसे वहीं रहने का प्लान हो उसका..

जावेद मन मे सोच रहा था की आख़िर क्या करे की रूपा की जवानी चखने के लिए मिल जाए...पर उसको अपनी बात शुरू करने का कोई उपाय नही सूझ रहा था..और तभी जैसे उपर वाले ने उसकी सुन ली, बिजली चली गयी पूरी कॉलोनी की..और झुग्गी के अंदर घुपप अंधेरा हो गया..

रूपा एकदम से परेशान सी हो गयी...वो अपने हाथों को आगे करती हुई किचन वाले हिस्से मे गयी और माचिस ढूढ़ने लगी..जावेद अपनी जगह से उठा और अपनी उल्लू जैसी आँखों से

अंधेरे मे जाकर रूपा से जा टकराया..

रूपा : "ओह्ह्ह्ह .....आप क्यो तकलीफ़ कर रहे हैं....आप बैठिए..मैं माचिस ढूँढती हू..."

जावेद : "कोई बात नही भाभी जी...मैं भी आपकी मदद करता हू.."

इतना कहते हुए जावेद उसके जिस्म से रग़ड़ लगाता हुआ आगे की तरफ आ गया...और फिर अचानक रूपा की तरफ पलट कर खड़ा हो गया..अंधेरा इतना था की रूपा उसकी चाल समझ नही पाई और ना ही देख पाई और सीधा उससे जा टकराई...जावेद ने एकदम से उसको अपनी बाहों मे भर लिया और उसके सेक्सी शरीर को निचोड़ कर रख दिया..

जावेद : "ओफफफफफ़ .....सॉरी भाभी ....ये अंधेरा इतना है....ओह्ह्ह्ह्ह ...सम्भालो ...आप गिर ना जाओ..."

उसने जान बूझकर उसका बेलेंस बिगाड़ दिया और नीचे गिरती हुई रूपा को अपनी बाहों मे जकड़कर उपर उठा लिया..उसके मोटे मोटे खरबूजे उसकी छाती से बुरी तरह से पिस गये..और हड़बड़ाहट मे उसका हाथ एक बार के लिए जावेद के खड़े हुए लिंग से भी छू गया..

एक पल के लिए जैसे वक़्त रुक सा गया...दोनो की गर्म साँसे कमरे मे सुनाई दे रही थी...और साथ ही जग्गा के खर्राटे..

रूपा का हाथ उसके लिंग से लगकर वहीं जाम सा हो गया..उसका फायदा उठाकर जावेद ने अपने लिंग को एक-दो ठुमके देकर और बड़ा कर लिया..रूपा की हथेली से जैसे आग निकल रही थी..जो उसके लिंग को झुलसा देना चाहती हो..

पर अपनी तरफ से पहल करके वो कोई परेशानी खड़ी नही करना चाहता था...एक तो वो जानता नही था की अगर वो अपनी तरफ से पहल करेगा तो रूपा भी उसका साथ देगी या नही और अगर जग्गा को बोल दिया तो वो उसको छोड़ेगा नही..जग्गा काफ़ी काम का बंदा था अब उसके लिए..जिस तरह से उसने आज करोड़ो रूपए डूबने से बचा लिए वो उसका फायदा आगे भी लेना चाहता था..

वो बिना हीले डुले वहीँ खड़ा रहा..

पर रूपा की हालत खराब थी...उसके लिए तो सारे लिंग एक ही समान थे...थोड़ी बहुत बातें उसकी समझ मे आने लगी थी..पर सहवास अपने पति के साथ ही करना है, ऐसी कोई पाबंदी वो नही जानती थी..

एक तो पहले से ही वो सुलग रही थी..और अब जावेद के खड़े लिंग का सहारा मिलने से उसकी भावनाए उमड़ने लगी थी...और उन्ही भावनाओ मे बहते हुए उसने जावेद के लिंग को

उमेठ दिया..

अब वो भी समझ गया की चिड़िया जाल मे फँस गयी है..वो अपने हाथ उसके स्तन पर रखना ही चाहता था की एकदम से लाइट आ गयी..

और जग्गा जहाँ सो रहा था, उसके सिर के बिल्कुल उपर बल्ब लगा हुआ था,और एकदम से अपनी आँखों मे रोशनी पड़ते ही वो जाग गया और हड़बड़ा कर उठ बैठा..

पर वो कुछ देख पाता, उससे पहले ही जावेद और रूपा अलग हो गये..

जावेद की तो इच्छा मर गयी...उसका लिंग मुरझा कर बैठ गया.

जग्गा ने अपनी आँखे खोली और उन्हे मलते हुए दोनो की तरफ देखा..

जावेद : "जग्गा, तू तो पीने के बाद लूड़क गया था, मैं बस अभी अभी तुझे लेकर आया हू.."

उसने अपने लिए जैसे सफाई दी

जग्गा कुछ ना बोला, वो नशे की हालत मे अपने आप को संभालने की कोशिश करने लगा..

पर अब जावेद ने वहाँ से निकलने मे ही भलाई समझी..उसने दोनो से विदा ली और बाहर निकल आया.

पर जाते हुए उसके मन मे एक बात तो पक्की हो चुकी थी की अगर रूपा को ढंग से हेंडल किया जाए तो उसको पेलना काफ़ी आसान काम है.

उसके जाते ही रूपा ने दरवाजा बंद कर दिया और लपककर जग्गा के पास आई..पर तब तक वो फिर से सो चुका था..

रूपा को गुस्सा तो काफ़ी आया पर वो कुछ बोल नही पाई..पर आज उसने भी ठान लिया था की मज़े लेकर ही रहेगी...उसने जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतार फेंके और पूरी नग्न हो गयी..

अगर जग्गा होश मे होता तो उसे पता चलता की जिसे इतने दीनो से नग्न देखने की चाहत थी वो उसके कमरे मे नग्न खड़ी है और ठुकने के लिए पूरी तरह से तय्यार है, पर उसकी किस्मत जैसी आज सुबह से थी शायद रात होते होते पलट चुकी थी, इसलिए उसके हाथ से इतना सुनहरा मौका निकल गया था.

रूपा का तराशा हुआ बदन बल्ब की रोशनी मे चमक रहा था..वो चलती हुई जग्गा के पास

आई और उसकी पैंट खोल कर नीचे कर दी..फिर उसने धड़कते दिल से उसके अंडरवीयर को भी नीचे खिसका दिया..

एक पल के लिए तो वो भी डर गयी, उसके सोए हुए नाग को देखकर..सोया हुआ काला लिंग इतना ख़तरनाक लग रहा था की अगर कोई पहली बार उसको देख ले तो मर ही जाए..पर रूपा के दिमाग़ मे तो उत्तेजना का बुखार चड़ा हुआ था..उसने काँपते हुए हाथों से उसे अपने हाथ मे लिया..

एक पल के लिए तो उसका शरीर काँप सा उठा, इतना मुलायम लिंग था उसका, जैसे कोई जेली से बना हुआ खिलोना हो..वो आगे की तरफ झुकी और अपनी जीभ निकाल कर उसके लिंग पर घुमा दी..

उसके लिंग से इतनी बुरी बदबू आ रही थी की एक पल के लिए तो उसने अपना मुँह पीछे कर लिया...पर हाथ मे पकड़े हुए लिंग मे अचानक जान सी आने लगी तो अपनी योनी के कहने पर वो फिर से जग्गा के लिंग के करीब गयी और अपनी साँस रोककर एक ही बार मे उसके अकड़ रहे लिंग को अपने मुँह मे लेकर जोर जोर से चूसने लगी..

जितना पानी उसकी योनी से निकल रहा था उससे ज़्यादा उसकी लार निकल कर जग्गा के लिंग को नहला रही थी..

अब रूपा को भी मज़ा आने लगा था उसे चूसते हुए...लिंग जितना काला होता है उसका स्वाद उतना ही उत्तेजना से भरा होता है,ये बात आज उसने जान ली थी.

वो जग्गा के काले भूसंड लिंग को अपने मुँह मे लेकर जोर जोर से चूस रही थी.. जैसे कोई लोलीपोप हो

उसके दिमाग़ मे उस दिन का सीन चल रहा था जब जग्गा और लतिका ने झोपड़े मे ठुकाई की थी...काश वो होश मे होता तो वो सारे आसन कर लेती उसके साथ..

पर जग्गा होश मे भले ही नही था, पर अपने सपनों मे वो पूरे मज़े ले रहा था..

उसको तो लग रहा था की उसका लिंग अभी भी वो रशियन लड़की क्रिस्टिना ही चूस रही है..उसने अपना हाथ रूपा के सिर पर रख दिया और नशे की हालत मे बड़बड़ाने लगा : "अहहssssssssssssss ....क्रिस्टिना .....मेरी जान ....चूस इसको.....खा जा साली, मेरे लिंग को ..."

जग्गा के मुँह से क्रिस्टिना का नाम सुनकर रूपा की समझ मे कुछ नही आया...अगर कोई समझदार पत्नी होती तो ऐसी हालत मे अपने पति के मुँह से किसी दूसरी लड़की का नाम सुनकर उसकी माँ ही पेल देती, पर रूपा का मामला थोड़ा अलग था...वो बेचारी अपने

अधिकारों के बारे मे कुछ भी नही जानती थी...उसकी बला से वो क्रिस्टिना का नाम ले या लतिका की ठुकाई करे, उसे कोई फ़र्क नही पड़ता था..

वो चारपाई पर चढ़ गयी..वो ६९ पोजिशन के बारे मे नही जानती थी, वरना उस वक़्त वो घूमकर जग्गा को अपनी योनी खिला देती और खुद उसके लिंग की पार्टी उड़ाती..उस बेचारी की योनी मे काफ़ी खुजली हो रही थी...जिसे बुझाना ज़रूरी था...वो जग्गा के लिंग को जल्द से जल्द अपनी योनी मे लेना चाहती थी...पर जग्गा उसके सिर को अपने लिंग पर दबाए हुए उसे उपर उठने ही नही दे रहा था..बेचारी अकड़ू सी होकर उसकी टाँगो के बीच बैठी हुई उसके लिंग को चूसती रही..

अचानक उसने जग्गा की टाँग को अपनी दोनों टांगो के बीच ले लिया , जिसकी वजह से उसके पैर का अंगूठा उसकी योनी से जा टकराया, और अपनी योनी पर उसके पैर का घिस्सा लगते ही वो तड़प सी उठी और दुगने जोश के साथ उसके लिंग को चूसने लगी..

पर जग्गा ने अपनी तरफ से कुछ नही किया, जिसकी वजह से वो तड़प सी उठी और उसने अपनी योनी को थोड़ा एडजस्ट करते हुए सीधा उसके पैर के अंगूठे पर रखा और उसे अपने अंदर लेकर सिसक उठी..

"उम्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म्म। ...। अह्ह्ह्

उसके पैरों के उपर निकालनी शुरू कर दी..

और बुरी तरह से पस्त होकर वो उपर की तरफ आई और जग्गा के गले से लिपट कर लेट गयी...और लेटने के कुछ देर बाद ही उसे गहरी नींद भी आ गयी..

अब वो पूरी नग्न होकर उसके जिस्म से चिपक कर सो रही थी..जग्गा भी आधा नग्न था..अब एक बात तो पक्की थी, सुबह उठकर जग्गा को अपनी जिंदगी का सबसे हसीन दृश्य देखने को मिलने वाला था ...

# ११

सुबह के ९ बज गये थे...जग्गा ने कसमसाते हुए अपनी आँखे खोली..उसका सिर बुरी तरह से दर्द कर रहा था..एक पल मे ही उसके दिमाग़ मे कल के सारे द्रिश्य घूम गये..कैसे उसने शबाना ख़ान की बजाई, उसके बाद होटल मे जाकर रशियन की..और फिर जमकर शराब पी..पर उसके बाद क्या हुआ वो उसे याद नही आ रहा था..और वो घर कैसे आया ये भी उसकी समझ मे नही आ रहा था.

शायद जावेद  उसको लेकर आया होगा..उसने उठना चाहा तो उसे अपना कंधा भारी सा लगा..उसने अपने उपर पड़ी हुई चादर हटाई तो वहाँ का नज़ारा देखकर वो एक पल के लिए तो साँस लेना भी भूल गया..उसके कंधे पर सिर रखकर रूपा गहरी नींद मे सो रही थी..

और वो भी पूरी नग्न.

उसके मोटे मोटे स्तन उसकी छाती पर चिपके हुए थे..और उसकी मोटी जाँघो ने उसके लिंग के उपर कब्जा जमाया हुआ था..वो भी लगभग नग्न ही था..

उसकी समझ मे कुछ नही आ रहा था..ये कब हुआ और कैसे हुआ...

उसने लाख कोशिश की पर उसे कल रात का कोई भी वाक़या याद नही आ रहा था..बस हल्का हल्का इतना याद आया की वो शराब पीने के बाद क्रिस्टिना ने उसका लिंग चूसकर उसे खल्लास किया था..

पर जब उसने क्रिस्टिना की ठुकाई की थी तो उसके बाद तो वो चली गयी थी ...और फिर जावेद के साथ मिलकर उसने काफ़ी शराब पी थी..उसे ये भी याद आ गया की जावेद उसको उठाकर लिफ्ट से होते हुए गाड़ी तक आया था...पर उसके बाद का कुछ भी याद नही था उसको..

यानी जावेद उसको घर ले आया था..और यहा पहुँचकर शायद उसने नशे की हालत मे रूपा के साथ कोई ज़ोर ज़बरदस्ती करके उसकी मार ली थी..

"नही...ऐसा नही हो सकता...मैं किसी पर कैसे ज़ोर ज़बरदस्ती कर सकता हू....नही...ऐसा नही हो सकता.." वो बड़बड़ाने लगा...उसको आत्मग्लानि सी हो रही थी..

पर तभी उसके दिमाग़ मे एक विचार कौंधा..

अगर मैने कोई ज़ोर ज़बरदस्ती की होती तो मुझे कुछ तो याद होता..और ये रूपा भी इतने

प्यार से मुझसे लिपट कर ना सो रही होती..यानी..जो कुछ भी हुआ..वो रूपा की मर्ज़ी से हुआ...

शुक्र है उपर वाले का..

पर रात को क्या क्या हुआ और किस हद तक हुआ, ये जानने के लिए रूपा को उठाना ज़रूरी था..

उसने धड़कते दिल से रूपा के चेहरे को उपर किया..वो अब भी गहरी नींद मे थी..

उसके चेहरे का नूर देखकर और उसके लाल सुर्ख होंठ अपने इतने करीब पाकर उसके लिंग की धड़कने तेज हो गयी और वो मॉर्निंग वॉक पर निकल पड़ा..और धीरे धीरे बड़ा होने लगा.

जग्गा ने उसकी पतली कमर को पकड़कर उपर की तरफ खींचा तो वो और उपर आ गयी..और उसके स्तन जो पहले जग्गा की छाती पर आ रहे थे वो लगभग उसकी गर्दन तक पहुँच गये..

एक दम से झटका मिलते ही रूपा की आँख खुल गयी..और जग्गा का चेहरा इतने करीब देखकर वो एकदम से घबरा गयी..पर अगले ही पल रात की बात याद आते ही उसकी आँखों मे गुलाबीपन उतार आया और उसने नज़रें नीचे झुका ली..

जग्गा : "रूपा...मेरी तरफ देखो..."

उसने शरमाते हुए अपनी नज़रें उपर उठाई..

वो जग्गा के लिंग को अपनी जांघों के बीच फड़कता हुआ महसूस कर पा रही थी और उसे महसूस करते हुए उसकी योनी मे भी गीलापन आ गया.

जग्गा : "मैं कल काफ़ी नशे मे था...मुझे तो कुछ याद भी नही की मैं इस तरह तुम्हारे पास कैसे आया..क्या किया मैने..बोलो ना"

उसकी बात सुनकर रूपा का चेहरा लाल हो उठा..उसने शरमाते हुए कहा : "आपने कुछ नही किया...जो भी किया बस मैने ही किया...पता है मेरी क्या हालत हो रही थी २ दीनो से...मैं बस किसी भी तरह से अपनी प्यास बुझाना चाहती थी..इसलिए कल जब आप नशे मे वापिस आए तो मुझसे रहा नही गया और मैने वो सब करना शुरू कर दिया...आप तो किसी क्रिस्टिना के सपनो मे खोए हुए थे...और आपने अपना "वो" बड़ी ही ज़बरदस्ती से मेरे मुँह मे डालकर मुझे बहुत परेशान किया...पर वो सब मुझे अच्छा भी लगा.."

ओ हो ...यानी रात को वो क्रिस्टिना का सपना देख रहा था...और असली मे वो रूपा को अपना लिंग चुसवा रहा था..

पर रूपा उसका लिंग लेने के लिए इतना तड़प रही थी, ये बात सुनकर उसे बहुत खुशी हुई..

उसने रूपा के चेहरे को अपनी तरफ बढाया और उसके लरजते हुए होंठों को अपने मुँह मे लेकर ज़ोर से चूसने लगा..

रूपा तो पिघल गयी जग्गा के इस वार से...उसका पूरा शरीर सूखे पत्ते की तरह काँपने लगा और अगले ही पल वो उछलकर जग्गा के उपर सवार हो गयी और अपनी घनी ज़ुल्फो के जाल मे अपने और जग्गा के चेहरे को छुपा कर उसके स्मूच का जवाब अपने स्मूच से देने लगी.

जिस आग मे वो कल रात तड़प रही थी उसकी आँच फिर से बाहर निकलने लगी..रूपा ने जग्गा के हाथों को पकड़कर अपनी छातियों पर रखा और उन्हे ज़ोर से दबा दिया..

जग्गा ने भी अपना ज़ोर उनपर जैसे ही लगाया वो दर्द से बिलबिला उठी ...

"अहह ..... उफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफ़ .....उम्म्मममममममम.....काटो इन्हे.....बहुत दर्द है.....चबा जाओ....आओ ना..."

जग्गा के लिए इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी...वो थोड़ा सा उठा और उसने अपना मुँह उसकी गोल मटोल छाती पर रखकर उसके आधे से ज़्यादा स्तन को अपने मुँह मे ले लिया और अपनी जीभ और दाँत का इस्तेमाल करते हुए उसके पिंक स्तनाग्र को जोर जोर से सक्क करने लगा...

"आआयययययययययीीईईईईईईईईईईईईईईईईई .....मररररर गयी ..... अहह.....हाआआअन्न ऐसे ही....."

और वो जग्गा के सिर को पकड़ कर कभी अपनी दाँयी और कभी बाँयी स्तन पर ले जाती और बारी बारी से दोनो पकवान उसे टैस्ट करवाती.

जग्गा ने कल शबाना ख़ान को और रात को क्रिस्टिना की जमकर ठुकाई की थी...पर जितना मखमली बदन रूपा का था उतना उन दोनो मे से किसी का भी नही था...और रूपा के कोरे स्तनों की कसावट महसूस करते हुए उसके पसीने छूट रहे थे..वो जानता था की ऐसी लड़की उसकी जिंदगी मे नही है, पर किस्मत ने जिस तरह से उसको जग्गा के पास भेजा है और वो जिस तरह से तड़प कर उसके लिंग की दीवानी हुई बैठी है, ये सब एक सपने जैसा ही लग रहा था..

वैसे भी उसने रूपा के लिए इतना कुछ किया था...अब इतना तो हक बनता ही था

उसपर..और वैसे भी वो कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नही कर रहा था...भले ही उसकी यादश्त गुम हो चुकी थी..पर अपने जिस्म की बत मानकर वो खुद ही उससे ठुकने को तैयार थी..

ये सब बातें जग्गा के दिमाग़ मे चल रही थी..जैसे वो किसी कोर्ट मे खड़ा होकर अपनी पैरवी कर रहा हो.

खैर..जग्गा ने अब सोच लिया था की रूपा को असली ठुकाई का एहसास करवाने का टाइम आ चुका है..पर पहली ठुकाई से पहले वो हर तरह के मज़े लेना चाहता था उसके साथ..सबसे पहले तो वो उसकी कुँवारी योनी को चूसना चाहता था...जिसके लिए वो ना जाने कब से तड़प रहा था..

वैसे जग्गा का मानना था कि अगर किसी इंसान को लड़की की कुँवारी योनी चूसने को मिल जाए तो उससे बड़ा इनाम उसको जिंदगी से मिल ही नही सकता..ऐसे लोग जिनके सामने उनकी कुँवारी गर्लफ्रेंड या बीबी पहली बार नग्न हुई हो और वो सीधा ठुकाई करनी शुरू कर दे तो उनसे बड़ा बेवकूफ़ कोई और हो ही नही सकता..पहली धार का माल जब तक चूसा ना जाए तब तक जवानी का नशा पूरा ही नही होता..

जग्गा ने उसको अपने उपर से नीचे उतारा और बेड पर पीठ के बाल लिटा दिया..और खुद ज़मीन पर खड़ा हो गया...और अपने बचे-खुचे कपड़े भी उतार दिए..

अब उसकी नग्न आँखो के सामने थी अपने उफन रहे योवन को संभाल रही नग्न रूपा...उसका नग्न जिस्म किसी नागिन की तरह मचल रहा था..उसकी जांघों के बीच इतनी चिकनाई आ चुकी थी की वो उन्हे आपस मे रगड़कर अजीब सी आवाज़ें निकल रही थी..जग्गा ने एक बार फिर से उपर वाले का धन्यवाद दिया की उसकी जिंदगी मे इतनी खूबसूरत लड़की आई..

और फिर वो नीचे बैठ गया और रूपा की दोनो टाँगो को खोलकर अपने कंधे पर रख लिया..जैसे जैसे उसका मुँह उसकी उफनती योनी के करीब पहुँच रहा था ,वहाँ से निकल रही मादकता से भरी खुशबू उसे पागल कर रही थी..

उसकी आँखों के सामने दुनिया की सबसे टाइट योनी थी...बिल्कुल चिकनी योनी ,बिना बालों के..नीचे से उपर की तरफ छोटा सा चीरा...जैसे मिट्टी की गुल्लक मे होता है..उतना ही लंबा और उतना ही छोटा और टाइट...

रूपा भी अपनी साँस रोके अपनी योनी की पहली चुसाई का आनंद लेने के लिए तैयार थी..और जैसे ही जग्गा की गर्म जीभ ने उसकी योनी को छुआ, वो उछल सी पड़ी..पर जग्गा ने उसकी जांघों को बड़ी ज़ोर से पकड़ रखा था इसलिए वो अलग ना हो पाई..और बिना कोई और देर किए जग्गा ने अपना बड़ा सा मुँह खोला और उसकी गुल्लक को मुँह मे भर लिया और अपनी जीभ को सिक्का बनाकर उसे अंदर डाल दिया...छेद छोटा और सिक्का बड़ा..यानी उसकी जीभ अंदर घुस नही रही थी..जग्गा सोचने लगा की जब उसकी जीभ अंदर

नही जा रही तो उसका लिंग कैसे जाएगा..

खूब मेहनत करनी पड़ेगी उसको आज...और उसकी चीखों को भी दबाना पड़ेगा..वरना पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो जाएगा..

जग्गा ने अपनी उंगली को उसके अंदर डाला..रूपा सिसक उठी..क्योंकि वो एक ही बार मे अंदर तक जाकर उसकी झिल्ली से जा टकराई..जग्गा ने धीरे से अपनी दूसरी उंगली भी अंदर डाल दी..अब रूपा को दर्द होना महसूस हो गया...पर वो अपनी साँस रोके लेती रही..जग्गा काफ़ी देर तक अपनी दोनो उंगलियों को अंदर बाहर करता रहा और साथ ही साथ उसकी योनी के तितली जैसे होंठों को अपने मुँह मे लेकर उसका रस चूसता रहा ...फिर उसने अपनी तीसरी उंगली भी अंदर डालनी चाही..इस बार तो रूपा चीख उठी ..

"अहह..... नहियीईईईईईईईईईईईईईई .....मत करो..... मुझे दर्द हो रहा है..."

जग्गा रुक गया...उसकी तीन उंगलियो की मोटाई तो उसके लिंग से आधी ही थी...जब वो नही ले पा रही तो लिंग कैसे लेगी..अभी काफ़ी चिकनाई की ज़रूरत थी उसको..और साथ ही रूपा को और ज़्यादा उत्तेजित करने की भी..

वो थोड़ा और नीचे झुका और अपनी जीभ से उसकी नितंब के छेद को कुरेदा ...ऐसा करते ही रूपा के पूरे शरीर मे जैसे करंट सा लगा...पर साथ ही साथ उसकी उत्तेजना भी अपने पूरे शिखर पर पहुँच गयी...और उसने अपनी रेशमी टाँगो के फंदे मे जग्गा की गर्दन दबोची और अपनी कसावट वाली नितंब को उसके चेहरे पर रगड़ने लगी..जग्गा को ऐसा लगा जैसे उसके चेहरे की मसाज की जा रही है...

अब जग्गा ने अपनी तीन उंगलियाँ एक साथ अंदर डाल दी उसकी योनी के...और वो चली भी गयी...इस बार वो चिल्लाई भी नही...बल्कि जोर जोर से बड़बड़ाने लगी

"आहह..... मैं मर गयी..... इतना मज़ा आ रहा है .....अहह ...ओफफफफफ़ खा जाओ .....सब कुछ .....चाटो मुझे.....खाओ .....इसको .....अहह ..."

अब वो पूरी बावली हो चुकी थी...जग्गा ने महसूस किया की अब उसकी योनी पहले से ज़्यादा चिकनी हो गयी है...यानी अब वक़्त आ गया था सील तोड़ने का..

वो उठा और उसने रूपा की दोनो टाँगो को फेला कर अलग अलग दिशा मे कर दिया..और फिर उसकी गीली योनी के उपर लिंग रखकर उसकी आँखों मे देखा..

रूपा बेचारी को पता नही था की उसके साथ क्या होने वाला है...वो तो बस अपनी मस्ती मे मचलती हुई अपनी योनी की खुजली को मिटा देना चाहती थी.

जग्गा ने धीरे धीरे अपना भार उसके उपर डाला..और सिर्फ़ एक इंच अंदर जाकर उसका लिंग अटक गया...पर अब इस पार या उस पार...ये सोचते हुए उसने अपने घोड़े को जोरदार झटका दिया और वो हिनहिनाता हुआ रूपा की योनी को चीरता हुआ अंदर चला गया.

"आआआआआआआईयईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई ..... नहियीईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई .....मैं मर गयी .....अहह ....."

उसकी आँखो से आँसू निकल आए..खून निकल कर बाहर रिसने लगा..जग्गा कुछ देर के लिए रुका और फिर एक और झटके से और अंदर और फिर आख़िरी झटके मे पूरा अंदर समा गया उसके..

रूपा के मुँह से अब कोई आवाज़ ही नही निकल रही थी...दर्द के मारे उसका बुरा हाल था..पर अंदर फँसे लिंग को महसूस करते हुए एक अजीब सी तरंग भी उठ रही थी ...

जग्गा काफ़ी तजुर्बे वाला था...उसने धीरे धीरे अपने लिंग को अंदर बाहर करना शुरू किया...और दस मिनट तक ऐसे ही करता रहा..

धीरे धीरे रूपा की दर्द भारी चीखो की जगह मस्ती भरी सिसकारियों ने ले ली...

जग्गा भी सोच रहा था की ये ठुकाई भी कैसी चीज़ है, हर कोई डरता भी है, दर्द भी होता है...पर बाद मे मज़े भी पूरे मिलते हैं..

अब तो रूपा पागल कुतिया की तरह अपनी टांगे उसकी कमर मे लपेट कर उसके लिंग को ज़्यादा से ज़्यादा अंदर ले रही थी...उसे पूरी तरह से महसूस कर रही थी..

उसकी मस्ती भरी चीखों से वो छोटी सी झोपड़ी गूँज रही थी..

"आअहह ह ओगगगग ओह ओह हाआँ ऐसे ही..... उम्म्म्मम .....अब दर्द नही है.....हन .....मज़ा मिल रहा है .....अहह एसस्सस्स ..एसस्स .....उम्म्म्मममममम अहह "

और ऐसे ही सिसकते सिसकते रूपा की योनी से ढेर सारी क्रीम निकल गयी...जिसे जग्गा ने भी महसूस किया.

जग्गा भी इतनी टाइट योनी मे जाकर अपने लिंग को ज़्यादा देर तक नही रोक पाया , वो उसके अंदर झड़कर कोई रिस्क नही लेना चाहता था..कुँवारी लड़की के साथ ठुकाई करते हुए वो सेफ रहना चाहता था..

उसने लास्ट मूमेंट पर अपना लिंग बाहर खींच लिया..रूपा तो जैसे इसी इंतजार मे थी..वो उठकर उपर आई और उसके लिंग को निगल कर जोर जोर से चूसने लगी..

और अगले ही पल उसके अंदर से अलग अलग साइज़ की पिचकारियाँ निकलनी शुरू हो गयी...जिसे रूपा ने अपने चेहरे और मुँह के अंदर निगल कर पूरी तृप्ति पा ली।

जग्गा उसके बाद हांफता हुआ उसके उपर ही गिर पड़ा..

ऐसी ठुकाई उसने अपनी जिंदगी मे आज तक नही की थी..

पर ये तो अभी शुरूवात थी..वो उसके साथ हर तरीके से मज़े लेना चाहता था जो उसने सोच रखे थे..

कुछ देर तक ऐसे ही लेटे रहने के बाद वो बोला : "चलो....नदी पर नहाने चलते हैं..."

रूपा ने हाँ मे सिर हिला दिया और उठकर कपड़े पहनने लगी..

जग्गा ने उसके हाथ से ब्रा खींच लि और बोला : "बिना ब्रा-पैंटी के ही चलो..."

रूपा के चेहरे पर भी शरारत भरी मुस्कान फैल गयी...वो शायद समझ चुकी थी की जग्गा उसके साथ क्या क्या करने वाला है..

आज नदी पर ज़्यादा भीड़ नही थी..शायद वो लोग ही लेट पहुँचे थे...जग्गा तो अभी तक कल के नशे से सही तरह से उभर भी नही पाया था, और आज सुबह सुबह उसको अपनी जिंदगी की सबसे हसीन और कुँवारी योनी भी मिल चुकी थी, इसलिए वो तो सांतवे आसमान पर था..आज तो वो मर भी जाए तो भी उसको अपनी जिंदगी से कोई गम नही होता..

पिछले दो दीनो मे किस्मत ने जिस तरह से उसका साथ दिया था, वो अपने आपको किस्मतवाला समझने लगा था, वो तो बस यही सोच रहा था की अब उसकी जिंदगी मे कुछ भी बुरा हो ही नही सकता..

पर बेचारा ये नही जानता था की उपर वाले ने सब कुछ नाप तोल कर ही लिखा है सबकी किस्मत मे..

पर आज के लिए तो उसकी जिंदगी खुशहाल ही थी.

वो अपने कपड़े उतार कर नदी के अंदर आ गया..सिर्फ़ एक अंडरवीयर ही पहना हुआ था.

रूपा भी अंदर आ गयी, और अंदर आते ही उसके कपड़े उसके बदन से ऐसे चिपक गये जैसे फेविकोल लगी हो उसके बदन पर...और उसका संगमरमरी बदन अपने जलवे बिखेरने लगा..

जग्गा मस्ती मे डूबा हुआ उसकी तरफ आया और उसके लगभग नंगे बदन से बुरी तरह से लिपट कर उसे चूमने लगा.

दूर खड़ी कम्मो ये सब देखकर मुस्कुरा रही थी...वो थी धोबी की लड़की, जिसकी उम्र थी १९ और वो वही सरकारी कॉलेज में पड़ती थी, पर आज उसकी छुट्टी थी,शायद कोई सरकारी होलिडे था..इसलिए नदी मे आकर वो मल-मलकर नहा रही थी..उसके उभार अभी आने शुरू ही हुए थे,पर वो उनकी परवाह किए बिना उपर से नग्न होकर ही नहाती थी, सिर्फ़ कच्छी पहन कर..जैसा ज्यादातर झुग्गी में रहने वाली लड़कियां नहाती थी।वो थी एकदम साँवले रंग की पर उसके नैन नक्श काफ़ी अच्छे थे, हमेशा सब से अलग ही रहती थी।

आज भी कम्मो ने जब जग्गा और रूपा को एक दूसरे को चूमते हुए देखा तो वो झट से उसी चट्टान की औट मे जाकर खड़ी हो गयी ,जहाँ उस दिन जग्गा ने लतिका को पेला था..

जग्गा ने रूपा के स्तन पकड़ कर ज़ोर से दबा दिए ...और उसके होंठों पर होंठ रखकर ज़ोर से चूसने लगा..

साथ ही नहा रही दो औरतें भी उन्हे देख कर हँसने लगी..

पहली : "हाए दैया, देख तो इस जग्गा को, अपनी ही जोरू को खुले मे ऐसे चूम रहा है जैसे

घर पर मौका ही नही मिलता..."

दूसरी : "ही ही .... ये मर्द साले होते ही ऐसे हैं, जहाँ मौका मिल जाए, अपना हथियार उठा कर चले आते हैं, मीटिंग करने को... हा हा"

फिर दोनो जोर जोर से हँसने लगी..

पर उनकी बातों और हँसी से जग्गा को कोई फ़र्क नही पड़ता था, वो उसकी असली बीबी तो थी नही, जो इतना पोस्सेसिव होता, वो हर उस तरीके से रूपा के साथ मज़े लेना चाहता था जो उसने सोचे हुए थे..

आज भी वो अपनी अधूरी इच्छा लेकर ही आया था नदी मे नहाने के लिए...पिछली बार तो रूपा ने काफ़ी तरसाया था उसके लिंग को...पर आज ठुकने के बाद वो पूरी तरह से खुल चुकी थी और उसका पूरा साथ भी दे रही थी...अब तो उसकी खुले मे ठुकाई करने मे काफी मजा आएगा.

जग्गा ने अपना हाथ नीचे किया और अपने लिंग को बाहर निकाल लिया..और रूपा का हाथ पकड़कर उसके उपर लगा दिया.

ठंडे पानी मे गर्म रोड पकड़कर रूपा एकदम से सिहर उठी..हालाँकि अभी कुछ देर पहले ही उसकी जिंदगी की पहली ठुकाई हुई थी, पर जग्गा के लिंग मे ना जाने क्या जादू था, वो फिर से गर्म होने लगी..शायद दूसरी ठुकाई के ख़याल से उसकी योनी ने फिर से पानी देना शुरू कर दिया था.

उसकी आँखों मे नशीलापन तैरने लगा..और वो भी पूरी तरह से मदहोश सी होने लगी.

ये एक ऐसी परिस्थिति होती है जब औरत को मज़े के आगे कुछ भी नही दिखता, वो कहाँ पर है और क्या कर रही है, उससे ज़्यादा सहवास का मज़ा मेटर करता है..

रूपा को अपने शरीर के कपड़े बोझ से लगने लगे...उसका तो मन कर रहा था की अभी के अभी सारे कपड़े फाड़ डाले और पूरी नग्न होकर जग्गा की शक्तिशाली भूझाओं से लिपट जाए...उसको छोड़े ही नही,....उसकी गोद मे चड़कर उसको चूस डाले...

ये ख़याल आते ही उसने अपने गाउन के बटन खोलकर अपने स्तन बाहर निकाल लिए और ज़बरदस्ती जग्गा के मुँह मे पूरा का पूरा स्तन ठूस दिया...

"खा इसको.....चबा जा....मिटा दे इनकी खुजली.....दाँत से काट इन्हे...." वो बड़बडाए जा रही थी..

और उन्हे ऐसा करता देखकर वो दोनो औरतें तो शर्म से पानी पानी होकर वहाँ से निकल गयी..पर चट्टान की औट मे खड़ी हुई कम्मो का बदन जल उठा...वो अपने नन्हे-नन्हे उभारों को सहलाते हुए खुद ही बड़बड़ाने लगी

"हाँ ....काट इन्हे जग्गा....खा जा....चबा जा ....ज़ोर से दबा....और ज़ोर से ...."

वो खड़ी खड़ी अपने स्तनाग्र को खींच कर ऐसा महसूस कर रही थी जैसे वो जग्गा के मुँह मे हो और वो ही उन्हे चूस रहा हो..

अपनी पतली उंगलियों से वो अपने छोटे छोटे अमरूदों को दबा रही थी...ऐसा उसने कई बार किया था, पर आज जो मज़ा उसे मिल रहा था, वैसा उसने कभी भी फील नही किया था.

उसने जो कच्छी पहनी हुई थी, वो भी उसने नीचे खिसका दी..उसकी योनी पर अभी बाल आने शुरू ही हुए थे , पर वो जानती नही थी की वहाँ क्या करना है, पर अंदर से ही उसे पता नही क्यों ये फील हो रहा था की वहाँ हाथ लगाया जाए..उसने अपनी अनछुई योनी को अपने पंजे मे दबोच लिया..पर वहाँ से उठ रही खुजली कम हो ही नही रही थी.

वो लगातार जग्गा और रूपा को ही देख रही थी..जग्गा तो मदमस्त सांड की तरह खुले मे ही रूपा को पेलने की फिराक मे था..पर उसके दिमाग मे भी ख़याल आया की ऐसे ही अगर उसने रूपा को खुले मे पेल दिया तो कोई भी आकर रूपा को पेल देगा, कुछ परदा तो होना ही चाहिए..

उसे फिर से उसी चट्टान की याद आ गयी, जहाँ उसने पहले भी कई बार ठुकाई की थी..और जहाँ इस वक़्त कम्मो लगभग नग्न होकर उन्हे ही देख रही थी.

जग्गा ने रूपा का हाथ पकड़ा और उसे दूसरी तरफ ले जाने लगा, चट्टान के पीछे..उन दोनो को अपनी तरफ आता हुआ देखकर कम्मो तो एकदम से सकपका गयी..वहाँ से भागने का कोई और रास्ता भी नही था..पीछे की तरफ उँची दीवार थी और बाँयी तरफ दूर तक नदी का पानी...इसलिए वो वहीं खड़ी रही..उसने जल्दी से अपनी कच्छी उपर कर ली.

वहाँ पहूचकर जग्गा ने देखा की कम्मो वहाँ खड़ी हुई है...उसका चेहरा लाल सुर्ख था, वो समझ गया की या तो वो उन्हे छुप कर देख रही थी या फिर खुद ही छुपकर अपनी योनी मल रही थी..

जग्गा : "आए कम्मो , तू यहाँ क्या कर रही है...चल भाग यहाँ से..."

कम्मो पर भी अपनी उभरती जवानी का नशा चड़ा हुआ था, वो बोली : "क्यो, ये नदी क्या तेरे बाप की है...तू जा ना बाहर...मैं तो यहीं नहाऊँगी ..तू बाहर जाकर चाट इसके दूध ...जैसा अभी कर रहा था.."

जग्गा समझ गया की वो वहाँ छुपकर उन्हे ही देख रही थी..वैसे तो उसने आज से पहले भी कई बार उसको नहाते हुए देखा था, पर एक छोटी बच्ची समझकर उसकी तरफ ख़ास ध्यान नही दिया था...उसकी अर्धविकसित छातियाँ आम लड़कियों की तरह ही थी जो वहाँ नदी मे नहाने के लिए आती थी..पर उसकी आँखों मे एक अजीब सी कसक थी..जल्दी जवान होने की...गंदे काम करने की...किसी का लिंग लेने की..

जग्गा ने भी घाट घाट का पानी पिया था..ऐसी चिड़िया को अपने हाथों से कैसे जाने देता वो..इसलिए अगले ही पल उसने वो किया जिसकी कम्मो ने कल्पना भी नही की थी..उसने एक ही झटके मे अपना अंडरवीयर उतार कर चट्टान पर रख दिया..और पूरा नग्न होकर खड़ा हो गया..

रूपा को तो ऐसी बातों से कोई फ़र्क नही पड़ता था, पर कम्मो ने आज पहली बार किसी का पूरा लिंग देखा था और वो भी इतना बड़ा..उसे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नही हुआ..उसके साथ की लड़कियों के साथ उसने कई बार लिंग के बारे मे बात की थी..पर किसी के पास भी कोई ब्योरा नही था..उन्होने तो सिर्फ़ झुग्गी के बच्चो की लुल्लिया ही देखी थी आज तक..पर आज कम्मो ने साक्षात काला लिंग देख लिया था..और वो उसे देखकर पलकें झपकना भी भूल गई...उसकी छाती की घुंडीयां उत्तेजना मे भरकर पूरी तरह से बाहर निकल आई.

जग्गा : "तेरी मर्ज़ी...मैं तो तेरे भले के लिए ही कह रहा था...ऐसी चीज़ें बच्चे नही देखते..."

लाकचो : "मैं भी कोई बच्ची नही हू अब...ये देख..."

और इतना कहते हुए उसने भी बेशर्मी से अपनी कच्छी नीचे कर दी..और उसकी छोटी सी रोँये वाली योनी देखकर जग्गा के लिंग ने नाचना शुरू कर दिया...

वो सोचने लगा की काश इसकी भी योनी मिल जाए तो मज़ा ही आ जाए..पर ऐसा करने मे कितना खून ख़राबा होगा ये वो अच्छी तरह से जानता था.

कम्मो : "देख क्या रहा है तू....अगले साल मैं भी २० की हो जाउंगी ...मैं कोई बच्ची नही हू ..."

जग्गा ने उसको पूरी तरह से उकसा दिया था..

अचानक उसके दिमाग़ मे एक प्लान आया..वो रूपा की तरफ मुड़ा और बोला : "चलो ...जल्दी से अपने कपड़े उतार दो..."

वो तो जैसे इसी की प्रतीक्षा कर रही थी...उसने झट से अपना गाउन उतार कर चट्टान पर रख दिया और वो भी नग्न हो गयी..

फिर जग्गा ने रूपा को उसी छोटी वाली चट्टान पर बिठाया और अपने लिंग पर झुकाते हुए उसके मुँह के अंदर अपना लिंग डाल दिया..

और कम्मो की तरफ मुड़कर बोला : "ये किया है क्या तूने कभी ..."

कम्मो बेचारी क्या बोलती, उसने तो सोचा भी नही था की लिंग को चूसा भी जाता है...उसने ये तो सुना हुआ था की लड़कियाँ अपनी योनी मे लेती है लिंग को..पर उसको चूसती भी है, ये वो आज ही जान पा रही थी.

पर फिर भी अपने आप को सयानी बताने का नाटक करते हुए वो बोली : "हाँ हाँ ...कई बार किया है...तू समझता क्या है मुझे...ये सब तो मैं दो सालों से करती आ रही हू..."

जग्गा समझ गया की उसका तीर निशाने पर लगा है..उसने दूसरी तरफ देखा की कोई उस तरफ तो नही आ रहा ...पर बाहर की तरफ कोई भी नही था..

फिर वो कम्मो की तरफ मुड़ा और बोला : "चल इधर आ फिर...मैं भी तो देखु की २ सालों मे तूने क्या सीखा है.."

कम्मो : "पर ये....तेरी जोरू...."

वो शायद डर रही थी की जग्गा कैसे अपनी ही बीबी के सामने उसको बुला रहा है..

जग्गा : "तू इसकी फ़िक्र मत कर ...ये कुछ नही कहेगी..."

अब तो वो बुरी तरह से फँस चुकी थी, ऐसी शेखी बघारी थी उसने की अब पीछे भी नहीं हट सकती थी..और वैसे भी अंदर ही अंदर वो खुद भी तो ये एक्सपीरियन्स लेना चाहती थी..इसलिए जग्गा के कहने पर वो चुपचाप पानी मे चलती हुई उसके पास पहुँची और वहाँ पहुँच कर खड़ी हो गयी.

कम्मो : "बोल...क्या करू..."

उसने तो जैसे आत्मसमर्पण कर दिया था...जग्गा ने मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देखा और अगले ही पल उसके नंगे बदन को अपनी बाहों मे भरकर उसे हवा में उठा लिया...उसकी छोटी छोटी स्तन जग्गा की बालों वाली छाती से पीसकर टूट सी गयी...और फिर जग्गा ने उसके गोल मटोल चेहरे को अपने करीब किया और उसके होंठों को अपने मुँह मे लेकर कुलफी की तरह चूसने लगा...

ये था कम्मो की जिंदगी का पहला चुंबन...और वो भी इतने रफ़ तरीके से...

जग्गा ने बिना कोई रहम करते हुए उसके होंठों को ऐसे चबाना शुरू किया जैसे वो रबड़ के बने हो...और उसके अंदर से आ रही मीठास को महसूस करते ही उसके लिंग ने झटके देने शुरू कर दिए रूपा के मुँह के अंदर..जो बड़े ही मज़े ले-लेकर नग्न बैठी हुई उसके लिंग को चूस रही थी.

कम्मो की चड्डी तो उसके घुटने मे फंसी थी..और उसकी नयी योनी जग्गा की कमर पर घिस्से लगा रही थी..जग्गा ने एक हाथ से उसके स्तनाग्र को पकड़कर ज़ोर से उमेठ दिया...और अगले ही पल कम्मो पर भी उत्तेजना का वही ज्वर चड गया जो कुछ देर पहले रूपा पर चड़ा था...और वो बुदबुदाने लगी..

"खा जा इन्हे...ज़ोर से दबा....चबा जा.....मिटा दे इनकी खुजली..."

उसकी बड़बड़ाहट सुनकर जग्गा के साथ साथ रूपा भी मुस्कुरा दी...वो दोनो समझ गये की वो छुपकर उन्हे ही देख रही थी..उनकी बातें भी सुन रही थी...

जग्गा ने भी उसको निराश नही किया...उसने उस फूल जैसी लड़की के जिस्म को थोड़ा और उपर उठाया और उसके स्तनाग्र को अपने मुँह मे डाल कर उस बछिया का दूध पीने लगा..

"आहह..... ओह .....जग्गा sssssssssssssssssss"

ये शायद सबसे छोटी उम्र की लड़की थी, जिसके शरीर के साथ जग्गा मज़े ले रहा था...वरना ज़्यादातर की उम्र तो २० से उपर ही थी, जिनकी ठुकाई उसने आज तक की थी.

इतनी आसानी से एक और योनी का इंतज़ाम होता देखकर जग्गा को फिर से अपनी किस्मत पर फक्र होने लगा...पर वो कम्मो को आराम से मज़े ले-लेकर भोगना चाहता था...और वैसे भी इतनी कच्ची कली को फूल बनाने के लिए ये जगह भी सही नही थी..पर आज वो उसको पूरी तरह से उत्तेजित करते हुए, उपर-ऊपर से मज़े लेकर, उसको आगे के लिए तैयार ज़रूर करना चाहता था.

जग्गा ने कुछ देर तक उसके दोनो स्तनाग्र एक-एक करते हुए चूसे , फिर उसके होंठ दोबारा चूसे और फिर अचानक ही बिना किसी वॉर्निंग के अपनी मोटी सी उंगली को उसकी योनी की फांकों के बीच डाल दिया..

कम्मो की आँखे एकदम से फैल सी गयी...दर्द की एक तेज लहर उसके बदन मे उठ गयी..पर एक मीठी सी कसक और वहाँ से उठ रही खुजली मिटने की आस भी उसको महसूस हुई.

जग्गा ने उसको भी रूपा के साथ चट्टान पर टीका दिया...और उसके घुटनो मे फंसी हुई कच्छी को उसने निकाल कर साइड मे रख दिया.

रूपा बड़े ही मज़े ले लेकर जग्गा के लिंग को चूस रही थी...अपनी जीभ से चाट रही थी...उसके टट्टों को अपनी उंगलियों से सहला रही थी...और कम्मो उसको देखते हुए जैसे वो सब सीखने की कोशिश कर रही थी..जग्गा भी समझ चुका था की आज जो भी कम्मो के साथ हो रहा था, वो पहली बार ही हो रहा था, उसे पहले से ऐसी बातों का कोई भी तजुर्बा नही था.

और ऐसी ही नयी नवेली मछलियों को सहवास का मज़ा देने के लिए जग्गा महाराज ने जन्म लिया था..वो मंद -मंद मुस्कुराते हुए उसको कसमसाते हुए देखने लगा...वो अपने होंठों पर जीभ फेरा रही थी, जैसे वो लिंग चाटने के लिए तैयारी कर रही हो..

जग्गा ने उसके सिर को पकड़कर अपने लिंग की तरफ झुकाया और रूपा को पीछे करते हुए अपना खोफ़नाक लिंग कम्मो के सामने लहरा दिया..वो तो उसके चेहरे से भी बड़ा था...पर फिर भी उसने डरते डरते उसे अपने नन्हे हाथों मे पकड़ा और अपनी जीभ लगा कर पहले तो उसको चेक किया की उसका स्वाद कैसा है...फिर धीरे से अपना पूरा मुँह खोलकर उसके सुपाडे को अंदर लिया...और फिर अपनी जीभ और होंठों का इस्तेमाल करते हुए धीरे धीरे दो इंच लिंग अंदर ले लिया...और इतना करते ही उसे ऐसे लगा की उसकी साँस बंद हो रही है...उसका गला और मुँह पूरी तरह से बंद हो चुके थे..

जग्गा : "शाबाश....ऐसे ही...थोड़ा और खोलो मुँह...अंदर बाहर करो..चूसो इसको...चाटो अपनी जीभ से..."

और फिर धीरे धीरे करते हुए कम्मो ने लिंग को चूसना सीख ही लिया....उसको अंदर से ऐसी खुशी हुई जैसे उसने कॉलेज पास कर ली हो...

रूपा की योनी अब बुरी तरह से सुलग रही थी...वो तो बस चाहती थी की जग्गा जल्द से जल्द अपनी नयी सहेली को छोड़कर उसकी टांगे फेलाए और लिंग पेल दे उसके अंदर..

उसने जग्गा की जाँघ पर अपने मोटे मम्मे रगड़ने शुरू कर दिए...जग्गा भी समझ गया की वो ठुकाई के लिए तड़प रही है..उसने अपना लिंग बड़ी मुश्किल से कम्मो के मुँह से बाहर खींचा, क्योंकि मज़े मिलने के बाद वो उसको छोड़ने का नाम ही नही ले रही थी.

फिर उसने उस सपाट चट्टान पर रूपा को लिटाया और उसकी टांगे उपर हवा मे थाम ली...कम्मो बड़े ही गौर से वो सब देख रही थी..

और फिर जग्गा ने अपने लिंग को उसकी योनी पर लगाया और दबाव डालकर उसको अंदर डालना शुरू किया..

रूपा का भी ये सिर्फ़ दूसरी बार था...पर योनी गीली होने की वजह से वो बड़ी ही आसानी से अंदर चला गया...इतने बड़े लिंग को छोटी सी योनी मे पूरा समाता हुआ देखकर वो हैरान रह

गयी...और उसी हैरानी मे आकर वो अपनी योनी को निहारने लगी..जैसे समझने की कोशिश कर रही हो की आख़िर ये सब होगा कैसे.

रूपा की आहें गूंजने लगी वहाँ

"अहह .... ओह ....उ हह अहह ....और अंदर .....ज़ोर से .....अहह ...ऐसे ही .....उम्म्ममम .....आहह ..."

और एक जोरदार चीख के साथ वो झड़ने लगी..

जग्गा ने भी पाँच मिनट तक और पेला उसको और फिर जब वो झड़ने को हुआ तो उसने अपनी पिचकारी बाहर निकाल कर रूपा और कम्मो के चेहरे सफेद रंग से रंग दिए..

रूपा ने वो सारी मलाई खा ली..और उसकी देखा देखी कम्मो ने भी अपना चेहरा साफ़ करते हुए उसे समेट कर निगल लिया...जिसमे उसको मज़ा भी बहुत आया..

फिर अच्छी तरह से नहाने के बाद दोनो ने अपने अपने कपड़े पहने और घर की तरफ निकल गये..

कम्मो भी नये एक्सपीरियेन्स को फील करती हुई घर चली गयी...पर जाने से पहले जग्गा से ये वादा भी किया की वो जब भी कहेगा,वो वहाँ हाजिर हो जाएगी..

# १२

घर पहुँच कर उसने देखा की जावेद  का आदमी उसका वेट कर रहा था..

उसने जग्गा से कहा की जावेद ने उसको अपने साथ लाने के लिए कहा है..

जग्गा जल्दी से तैयार हुआ और उसके साथ चल पड़ा.

शायद आज कुछ और ख़ास होने वाला था उसके साथ..

जावेद का आदमी जग्गा को लेकर एक आलीशान बार कम केसीनो मे पहुँचा....वो बार कम केसीनो आज तक जग्गा ने बाहर से ही देखा था, अक्सर वो वहाँ बैठकर भीख माँगा करता था, जावेद के आदमी के साथ जग्गा को अंदर जाता हुआ देखकर वहाँ का दरबान भी चोंक गया, वो जग्गा को अच्छी तरह से जानता था,पर जावेद के आदमी के साथ उसको अंदर जाता हुआ देखकर वो भी उसको सिर्फ़ सलाम ठोकने के अलावा कुछ नही कर सकता था..

जग्गा भी अपने आप को मिल रहे ऐसे ट्रीटमेंट से काफ़ी खुश था..

अंदर पहुँचकर उसने जो नज़ारा देखा,उसकी तो जग्गा ने कल्पना भी नही की थी...चारों तरफ गोल टेबल पर जुआ चल रहा था, लाखों की बाजिया चल रही थी...दारू और बियर के ग्लास हर टेबल पर थे...आधी नग्न लड़किया सर्व कर रही थी...ऐसा माहौल तो उसने एक फिल्म मे देखा था..पर असल जिंदगी मे ऐसा देखने को मिलेगा, ये उसने सोचा भी नही था.

जावेद का आदमी उसको एक झालर वाले केबिन मे ले गया..कोने मे एक बड़े से टेबल पर जावेद बैठ हुआ था...और उसके साथ ही एक मोटा सा आदमी, जिसकी घनी मूंछे थी,वो सिगार पीता हुआ अपनी गोद मे बैठी लड़की के स्तन दबा रहा था,जो उपर से पूरी नग्न थी..

जावेद : "भाई, ये है वो जग्गा...और जग्गा, ये है शेट्टी भाई..."

शेट्टी भाई को अपने सामने बैठा देखकर जग्गा की तो हिम्मत ही नही हुई कुछ कहने की...कहाँ वो झुग्गी मे रहने वाला एक अपाहिज भिखारी और कहाँ अंडरवर्ल्ड का डॉन शेट्टी भाई..

शेट्टी ने उसको उपर से नीचे तक देखा और बोला : "अच्छा काम किया तूने कल...तेरी वजह से आज मेरा सिर उँचा हो गया...अगर वो माल पकड़ा जाता तो करोड़ो का नुकसान तो होता ही, मेरा नाम भी खराब होता मार्केट मे..इसलिए तुझे यहाँ बुलवाया,अच्छे आदमियों की कद्र करता है ये शेट्टी.."

उसका एक हाथ लगातार उस लड़की का स्तन दबाता रहा , और वो लड़की भी बड़े मज़े-ले लेकर अपने स्तन दबवा रही थी.

जग्गा की नज़रें उसके उभरे हुए स्तनाग्र को घूर रही थी..जो इतने लंबे थे की उन्हे मुँह मे लेकर चूसने मे मज़ा ही आ जाए कसम से.

जग्गा को लड़की की तरफ घूरते देखकर शेट्टी समझ गया की उसके मन मे क्या चल रहा है...उसने धीरे से उस लड़की के कान मे कुछ कहा और वो उठ खड़ी हुई, उसने एक छोटी सी स्कर्ट पहनी हुई थी...और शायद अंदर कच्छी भी नही थी...और वो मटकती हुई जग्गा के पास आई और उसका हाथ पकड़कर एक कुर्सी पर बिठाया...और खुद उसकी गोद मे बैठ गयी.

शेट्टी : "आज पहली बार शेट्टी अपनी लड़की को किसी के साथ शेयर कर रहा है...आज की रात तू मज़े कर इसके साथ.."

और इतना कहकर वो उठ खड़ा हुआ और जावेद  के कान मे कुछ फुसफुसाया....और फिर अपने आदमियो के साथ बाहर निकल गया.

उसके जाने के बाद जावेद ने जग्गा को देखा और जोर जोर से हँसने लगा.

जावेद : "साले ...तूने तो भाई पर जादू चला दिया है...इस छमिया पर तो मेरी नज़र थी इतने दिनों से...और देख , ये तेरी गोद मे बैठी हुई है...हा हा...मज़े है तेरे.."

जग्गा सच मे अपने आप को किसी रियासत का राजा समझ रहा था...शेट्टी भाई का खास आदमी, जिसे उन्होने अपनी रखैल दे डाली...

उसने अपनी छाती फुलाई और अपने खुरदुरे हाथ उस गोरी लड़की की स्तन पर जमा कर ज़ोर से दबा दिया..

ऐसा लगा जैसे किसी मक्खन के गोले को हाथ मे पकड़ लिया हो उसने...उसकी उंगलियाँ अंदर तक धँसती चली गयी..ऐसी चिकनी त्वचा तो उसने आज तक नही देखी थी..और उसके शरीर से उठ रही महक भी काफ़ी नशीली थी...जैसे पूरी रात शराब मे डुबो कर रखा हो उसको...नशा सा छा रहा था जग्गा के सिर पर.

जावेद ने ये तो सोचा भी नही था की शेट्टी भाई जग्गा को मल्लिका जैसी लड़की दे देंगे..

मल्लिका पर उसकी काफ़ी समय से नज़र थी..पर शेट्टी भाई के डर से उसकी तरफ कोई आँख उठा कर भी नही देखता था...और शेट्टी भाई भी काफ़ी ऐय्याश टाइप का आदमी था, उसको दूसरो के सामने सहवास करने मे काफ़ी मज़ा आता था, या ये कह लो की अपना लंबा लिंग और मर्दानगी सबके सामने दिखाने मे वो फक्र महसूस करता था.

और मल्लिका को भी कुछ ऐसी ही आदत पड़ चुकी थी, शेट्टी के लंबे लिंग से ठुकाई करवाने मे उसको काफ़ी आनंद मिलता था, ख़ासकर जब उसके चमचे और बॉडीगार्ड उसकी ठुकाई होते हुए साफ़ देख रहे हो...उनके खड़े होते लिंग देखकर वो और भी ज़्यादा उत्तेजित हो जाती थी..और खूब उछल उछल कर ठुकाई करवाती थी.

जग्गा को देखकर एक बार तो उसने भी नाक सिकोडी, क्योंकि उसका हुलिया था ही फकिरों जैसा...पर वो नही जानती थी की वो सच मे एक भिखारी है..जब शेट्टी भाई के कहने पर वो उसकी गोद मे आकर बैठी, तो उसकी बलिष्ट बाजुओं और सख़्त छाती को महसूस करके वो जान गयी की बंदे मे काफ़ी दम है...और वो खुली आँखों से ही उसके लिंग को अपने अंदर लेने के सपने देखने लगी.

उधर जावेद मन मे सोच रहा था की कैसे जग्गा को आज ज़मीन पर लाया जाए, साला दो दिन में एकदम से उड़ने लगा है..

उधर जावेद मन मे सोच रहा था की कैसे जग्गा को आज ज़मीन पर लाया जाए, साला दो दिन में एकदम से उड़ने लगा है..

देखा जाए तो हमारे आस-पास वाले लोग ही हमारी तरक्की से जलते हैं, उन्हे ये बात हरगिज़ हजम नही होती की उनके सामने पैदा हुआ इंसान उनसे भी उपर निकल जाए...ऐसी जलन की भावना ही इंसान को एक दूसरे का दुश्मन भी बना देती है..

और यही सब इस वक़्त जावेद सोच रहा था जग्गा के बारे मे.

जग्गा तो बिजी था मल्लिका के हुस्न को सूंघने मे, जावेद ने सबके लिए शराब और चिकन मँगवाया और साथ ही ताश के पत्ते भी..

वो जुआ खेलने मे एक नंबर का उस्ताद था...और जग्गा को जो एकदम से इतने पैसे मिले थे,उनकी गर्मी उतारकर ही उसको उसके भिखारीपन का एहसास करवाया जा सकता था.

जग्गा ने शराब के दो गिलास पी लिए , अब तक मल्लिका ने उसके लिंग को बाहर निकालकर चूसना शुरू कर दिया था, पहले तो जग्गा को बड़ा ताज्जुब हुआ , पर जब वो आधी नग्न होकर बैठ सकती है तो ये काम भी आसान है उसके लिए...वो मज़े से अपने लिंग की चुसाई का आनंद लेने लगा.

इतने मे जावेद ने ताश के पत्ते बाँटने शुरू कर दिए.

जग्गा को कोई खास तजुर्बा नही था खेलने का, पर फिर भी शराब का नशा और जेब मे पड़े पैसों की गर्मी की वजह से उसने खेलना शुरू कर दिया.

कुल बीस हज़ार रुपय थे जग्गा के पास,घर पर तो रखने की कोई जगह नही थी, इसलिए वो पैसे साथ ही उठा लाया था...१० जावेद ने ही दिए थे और १० शबाना ख़ान ने.

४ बाजियों के बाद वो लगभग १० हज़ार रुपय हार गया जावेद से..

अब उसका माथा ठनका ...वो तो सही से खेलना भी नही जानता था, इसलिए हार रहा था..और ऐसे ही चलता रहा तो उसके सारे पैसे ख़त्म हो जाएँगे, जिनकी गर्मी को महसूस करके वो ये भी भूल चुका था की वो एक भिखारी है.

अब तक उसका लिंग भी खड़ा हो चुका था..वो सीधा तो मना करना नही चाहता था जावेद को, वरना वो उसको फट्टू समझता..इसलिए उसने बहाना किया और एकदम से मल्लिका को अपनी गोद मे उठा कर सैंट्रल टेबल पर लिटा दिया और उसकी टाँगो को फैला कर उसकी बुर चाटने लगा.

मल्लिका तो वैसे भी एक नंबर की चुड़दक़्कड़ थी, उसको तो ऐसे कामो मे मज़ा मिलता था..अपनी जवानी को सबके सामने दिखा कर वो तृप्त सी हो जाती थी..और आज उसका टेस्ट भी तो बदल दिया था शेट्टी भाई ने, उसको जग्गा के हवाले करके...

काफ़ी समय से सिर्फ़ शेट्टी से ठुकाई करवाते हुए वो भी बोर हो चुकी थी और आज ऐसे गठीले इंसान के सामने अपने आपको नग्न बिछाकर वो भी मस्ती मे झूम रही थी.

जावेद भी समझ गया की थोड़ी देर के ब्रेक की ज़रूरत है शायद जग्गा को...वैसे भी खड़े लिंग को जल्द से जल्द काम पर लगा देना चाहिए,वरना सही नही होता.

वो भी आराम से अपने साथियों के साथ बैठकर जग्गा की ठुकाई के तरीके देखने लगा..उसके और उसके साथियो ने पहले भी कई बार मल्लिका को शेट्टी के लंबे लिंग के नीचे मचलता देखा था, पर आज जग्गा के लिंग का स्वाद लेते हुए पहली बार देखना था सभी को.

जग्गा ने मल्लिका की टांगे अपनी गर्दन पर लेपेटी और अपना मुँह उसकी योनी से लगा दिया..और उठ खड़ा हुआ..मल्लिका का नग्न शरीर उसकी गर्दन से लटककर झूल गया...पर बेचारी चीखने के अलावा कुछ नही कर सकती थी..उसकी मोटी मोटी स्तन हवा मे ऐसे उछल रही थी जैसे बाहर ही निकल आएँगी..

"आआयययययययययययययययययययययययययययययीई साले, खा जा मेरी योनी को.....अहह .....हहाआ...."

जग्गा तो उसकी योनी के होंठ ऐसे नोच रहा था जैसे उसको बरसो से खाना नही मिला....वो अपनी जीभ से उसकी योनी की सफाई भी कर रहा था, जिसमे से लगातार मीठा रस बाहर निकल रहा था...और उसकी गर्दन से उल्टी लटके होने की वजह से कुछ रस फिसल कर

उसके पेट से होता हुआ उसके उरोजों तक भी जा रहा था...

वहाँ खड़े सारे गुंडों की हालत खराब थी...ख़ासकर जावेद की, उसका मन तो कर रहा था की उसकी योनी के रस से भीगे स्तन चूस कर वो भी मज़े ले , पर शेट्टी के बारे मे वो अच्छी तरह से जानता था, अगर उन्हे पता चल गया तो उसका क्या हश्र होगा, ये वो जानता था.

वो सभी लोग सिर्फ़ जीभ लपलपा कर देखने के अलावा कुछ भी नही कर सकते थे..

जग्गा ने उसको आराम से टेबल पर लिटाया और उसकी गर्म योनी को गोर से देखा, जो ज़्यादा चूसने की वजह से लाल सुर्ख हो चुकी थी..

मल्लिका की आँखो मे सहवास का नशा पूरी तरहा से उमड़ चुका था....वो जल्द से जल्द जग्गा के लिंग को अपने अंदर लेना चाहती थी..

जग्गा ने उसकी टाँगो को चोडा करते हुए उसकी योनी के मुहाने पर अपना लिंग रखा और धीरे से धक्का देकर अंदर दाखिल हो गया...

"उम्म्म्मममम..... सस्स्सिस्सईईईईई.....अहह"

उसकी ठुकते टाइम ऐसी आवाज़ सुनने की वहाँ के लोगो को आदत थी....पर जग्गा का लिंग शेट्टी के मुक़ाबले थोड़ा मोटा था...और शायद लंबा भी...इसलिए आज मल्लिका की सिसकारियों मे एक गर्माहट भी थी...

वो अपने ही रस से भीगे स्तनों को हाथ मे लेकर निचोड़ने लगी...और उसपर लगे रस से उसने जग्गा के चेहरे को पोत दिया....

अगले ही पल जग्गा उसके उपर धम्म से गिर पड़ा और अपना पूरा लिंग अंदर तक पेल दिया, और साथ ही साथ उसके नर्म मुलायम होंठों को बुरी तरह से चूसने लगा...

अब तो जग्गा ने स्पीड से ठुकाई करनी शुरू कर दी...वो खड़ा हुआ था और मल्लिका की टांगे उसकी कमर से बँधी हुई थी और वो ढका धक उसको पेले जा रहा था....शायद मल्लिका की जिंदगी की ये सबसे यादगार ठुकाई बनने वाली थी....उसके मुँह से लार निकल कर साईड मे गिर रही थी....हर झटके से उसकी बड़ी बड़ी स्तन उपर तक जाकर उसकी ठोड़ी को छूती ..और फिर नीचे आकर जग्गा के चेहरे को...

ऐसे ही थपेड़ों के बीच एक जोरदार आवाज़ के साथ मल्लिका की योनी का ज्वालामुखी फट पड़ा...और वो कल-कल करती हुई बहने लगी..

"अहहssssssssssssssssssssssssss ..... ओह माय गॉड .....
अहहssssssssssssssssssssssssssssss ....."

पर जग्गा अभी तक थका नही था, वो उसकी योनी का कीमा बनाने मे लगा था अपने मूसल जैसे लिंग से....वो धक्के दे-देकर पूरा अंदर तक जा रहा था और उसकी हिलती हुई जवानी के कलशो को पीने की कोशिश भी कर रहा था...

और जब १० मिनट के बाद जग्गा के लिंग ने सफेद सोना उगलना शुरू किया तो उसकी बोछार के तले दबकर मल्लिका का शरीर तो गायब ही हो गया...जग्गा ने उसके उपर जैसे सफेद रंग का स्प्रे कर दिया हो...वो उसके गाड़े रस से भीगकर पूरी ढक गयी...

और फिर अपने बिखरे हुए कपड़ो को समेटकर उठी और जग्गा को एक प्यारी सी किस्स देकर पिछले दरवाजे से उपर के कमरे मे चली गयी.

जग्गा ने भी अपने कपड़े पहन लिए..उसकी आज की ठुकाई देखकर जावेद को पूरा विश्वास हो गया की वो अपनी बीबी को भी ऐसे ही पेलता होगा...फिर वो ऐसी प्यासी सी बनकर क्यों घूमती रहती है...ज़रूर कोई गड़बड़ है...

और ये सब जानने के लिए उसके दिमाग़ मे एक प्लान बन ही चुका था..

उसने ज़िद करते हुए जग्गा को और शराब पिलाई और साथ ही दोबारा जुआ खेलने के लिए उकसाया, एक दो बार जान बूझकर हारने के बाद वो फिर से जीतने लगा और आख़िर मे उसने जग्गा को पूरा खोखला कर दिया, उसके सारे पैसे जुए मे जीतकर..

फिर शराब के नशे मे धुत्त जग्गा को उसने घर तक भी छोड़ दिया..

आज भी वो रूपा को खा जाने वाली नज़रों से देख रहा था..पर वो जग्गा को ऐसी हालत मे देखकर आज कुछ ज़्यादा ही चिंता मे आ गयी थी...इसलिए उसके लिए कोई जुगाड़ हो पाना संभव नही हो सका..

पर उसको भी पता था की उसकी योजना अगर सही काम कर गयी तो ये खुद ही उसकी गोद मे आकर बैठेगी...जैसे मल्लिका आ गयी थी आज जग्गा की गोद मे.

जावेद के जाते ही रूपा ने जल्दी से दरवाजा बंद किया और जग्गा के पास पहुँची, नयी नवेली दुल्हन की तरह उसकी योनी में भी खुजली हो रही थी, वो तो कब से जग्गा के वापिस आने की प्रतीक्षा कर रही थी, उसकी योनी गाड़े पानी से भरकर बाहर रिसने को हो रही थी, पर जग्गा को ऐसी हालत मे फिर से देखकर वो घबरा गयी, वो समझ गयी की शायद आज भी जग्गा उसको संतुष्ट नही करेगा, क्योंकि उसने शराब पी रखी थी, वो अपने होश मे नही था..

पर जिस लड़की के सिर पर ठुकाई का भूत सवार हो जाए, वो इतनी जल्दी हार नही मानती, उसने जग्गा की पैंट खोलकर उसे नीचे उतार दिया, और उसके अंडरवीयर को भी खींच कर बाहर कर दिया...

जग्गा का सोया हुआ अजगर उसकी टाँगो के बीच आराम कर रहा था..उसके देखते ही रूपा की साँसे तेज हो गयी...और उसके हाथ अपने आप ही योनी पर पहुँच गये और वो उसे कुरेदने लगी..अभी लाइट नही आ रही थी, रूपा ने एक लेम्प जलाकर उसको टांगा हुआ था, जिसकी मद्धम रोशनी मे वो नशे मे सोए हुए जग्गा को प्यासी नज़रों से देख रही थी..

उसकी उंगलियो ने हरकत की और अगले ही पल उसके ब्लाउस के हुक खुलने शुरू हो गये..अपनी ब्रा को भी उसने नोच कर अपने शरीर से ऐसे अलग किया जैसे उसमे काँटे लगे हो...खुली हवा मे आते ही उसके गोल मटोल उरोजो ने गहरी साँस ली और वो अपनी शेप मे आ गये..उसके स्तनाग्र उबलकर उठ खड़े हुए और उसकी मांसल छातियाँ पहले से कई ज़्यादा बड़ी दिखने लगी..

वो खिसककर जग्गा के करीब पहुँची और अपने मुँह से गर्म साँसे छोड़ती हुई वो जग्गा की टाँगो के बीच लेट गयी, उसके दोनो स्तन उसके घुटनो की कटोरियों पर पिसकर अंदर की तरफ घुस गये..और उसने अपनी लपलपाती हुई जीभ को सीधा लेजाकर जग्गा के लिंग के उपर रख दिया और उसको नीचे से उपर की तरफ ऐसे चाटना शुरू कर दिया जैसे वो लिंग नही कोई आइस्क्रीम हो..

इंसान भले ही होश मे ना हो पर उसके शरीर के साथ जो कुछ भी हो रहा होता है, वो उसका दिमाग़ तुरंत महसूस कर लेता है और उसके अनुसार ही प्रतिक्रिया करता है.. जग्गा के साथ भी यही हुआ, वो अपने नशे की दुनिया मे डूबा हुआ था और उसके लिंग ने रूपा की गर्म जीभ के साथ मिलकर गाने गाना शुरू कर दिया, एक मिनट के अंदर ही अंदर जग्गा का घोड़ा बेलगाम सा होकर रूपा के मुँह मे रेस लगा रहा था..

रूपा बड़े ही चाव से उसके लिंग को चूस रही थी, उसको चाट रही थी, अपने होंठों के बीच उसकी स्तन्स को लेकर अपने दांतो से चुभला रही थी..जग्गा भी बीच बीच मे कसमसा कर नशे से उभरने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि बेहोशी मे ही सही, उसको ये एहसास हो ही चुका था की उसके लिंग को कोई चूस रहा है, और उसके सपनो मे इस वक़्त कम्मो थी, जो उसके लिंग को नहाते हुए चूस रही थी..

रूपा ने जल्दी से अपना घाघरा भी उतार कर अपने जिस्म से अलग कर दिया, नीचे उसने कच्छी भी नहीं पहनी थी, जिस वजह से ऐसा लग रहा था जैसे उसकी टाँगो के बीच की टंकी खुली रह गयी है और उसमे से ढेर सारा पानी बहकर बाहर आ रहा है...उसने अपनी योनी से रिस रहे पानी को अपनी हथेली मे भरा और उसको जग्गा के लिंग से चोपड़ कर उसको चिकना बना दिया और फिर थोड़ा उपर होकर उसने अपनी स्तन को उसके लिंग के चारों तरफ लपेटा और उसको टिट फक्क करने लगी..ऐसा उसने उस दिन झोपड़े मे लतिका को करते हुए

देखा था..हर बार वो जग्गा के उपर निकल रहे लिंग के सिरे को चाट लेती और फिर वो उसकी छातियों की गहराई मे खो जाता..

उसकी योनी मे फिर से पानी इकट्ठा होकर बहने लगा..वो घूम कर उल्टी पोजिशन मे आ गयी..और जैसे ही उसने अपनी गीली योनी को जग्गा के मुँह के उपर रखकर दबाया, जग्गा की गर्म जीभ निकलकर उसके अंदर दाखिल हो गयी और वो बड़े ही मज़े से उसे चाटने लगा...

उसके मुँह से एकदम से निकला : "अहह ..... कम्मो ...."

रूपा समझ गयी की वो इस वक़्त उस छोटी लड़की के बारे मे सोच रहा है...और कोई बीबी होती तो उसका अभी के अभी रिमांड ले लेती, पर ये रूपा थी, जो अपनी यादश्त भूलकर ये भी भूल चुकी थी की एक पत्नी की जिंदगी मे किसी दूसरी औरत की बात करना भी कितना बड़ा जुर्म है..पर वो इस वक़्त अपनी ही मस्ती मे डूबकर अपनी योनी चटवा रही थी और उसका लिंग चूस रही थी.

और कुछ देर तक ऐसे ही करते रहने के बाद वो अचानक पलटी और उसने झुककर अपने ही रस मे सने जग्गा के चेहरे को बिल्ली की तरह चाटना शुरू कर दिया...और साथ ही साथ उसकी योनी ने भी नीचे होते हुए उसके उबलते हुए लिंग को अंदर लेने की तैयारी शुरू कर दी...

और जैसे ही जग्गा का लिंग रूपा की गर्म योनी से टकराया, रूपा की साँसे एक पल के लिए रुक गयी..और फिर अगले ही पल उसने एक जोरदार झटका देते हुए अपने आप को पूरा का पूरा उसके लिंग पर धराशायी करवा दिया और जग्गा का लिंग उसकी योनी की परतों को भेदता हुआ अंदर तक विलीन हो गया..

"अह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह उम्म्म्म्म्म्म्म्म्म। "

रूपा के मुंह से एक आनंदमयी सिसकारी निकल गयी

और इसके साथ ही जग्गा की आँखे खुल गयी...अब तक तो उसके सपने मे कम्मो ही घूम रही थी, पर ऐसा जोरदार झटका लगते ही उसकी खुली आँखो के सामने एकदम से रूपा का चेहरा झूमता हुआ देखकर वो भी एक पल के लिए सकते मे आ गया...वो सोचने लगा की ये एकदम से कैसे हो गया...अभी कुछ देर पहले तो वो बार मे था...फिर पता नही कहा से कम्मो आ गयी और वो उसके लिंग को चूसती रही और अब ये रूपा, जो उसके लिंग पर किसी फिल्मी गाने की तरह थिरक रही है...

उसने अपने हाथ उपर करते हुए रूपा के स्तन पकड़ कर ज़ोर से दबा दिए और खुद नीचे से धक्के मारकर उसकी लय से लय मिलाने लगा..

"ओह जग्गा..... कितना नशा करते हो तुम भी ..... ये भी नही सोचते की घर पर मैं अकेली हू.....तुम्हारे लिए .....ठुकने के लिए ....."

रूपा ने बड़े ही प्यार से अपनी शिकायत करते हुए नीचे झुककर फिर से जग्गा को चूम लिया...

जग्गा ने भी उसके चुम्बन का जवाब अपने ताकतवर धक्को से दिया और अगले दस मिनट तक लगातार आसन बदल बदल कर उसने रूपा की योनी की सारी गर्मी निकाल दी...उसके बाद तो रूपा मे इतनी भी हिम्मत नही बची की वो उठकर अपनी योनी को धोने के लिए चली जाए...जग्गा ने लगातार धक्के मारकर उसे करीब ३ बार झाड़ा था..

फिर दोनो ऐसे ही एक दूसरे से नंगे लिपट कर सो गये.

# १३

अगली सुबह जग्गा और रूपा फिर से नदी पर जाकर नहाए, पर ज़्यादा भीड़ होने की वजह से वो कुछ ज़्यादा नही कर पाए वहां ...और वैसे भी अब उन्हे खुलकर बाहर कुछ भी करने की आवशयक्ता नही थी, रूपा अब खुलकर घर मे ही उससे ठुकवा सकती थी. वहां जग्गा को कम्मो भी दिखाई दी, पर उसको वो अभी कुछ और दीनो तक तरसाना चाहता था, ताकि आराम से उसकी कच्ची जवानी का मज़ा ले सके.

अब जग्गा के सामने फिर से एक समस्या थी, वो अपने सारे पैसे कल जुए मे हार चुका था, और अब उसके पास कुछ भी नही बचा था, वो फिर से अपने फटे पुराने कपड़े पहन कर भीख माँगने के लिए निकल पड़ा..

पूरा दिन घूमते रहने के बाद वो शाम को घर की तरफ चल दिया, आज उसके पास भीख के करीब १६० रुपय आए थे, वो उनसे अपने और रूपा के लिए कुछ खाने के लिए खरीदने लगा..

और खाना लेते हुए वो सोच रहा था की ये भी क्या दिन है, कल तक उसके पास इतने पैसे थे की वो एक-दो महीने तक बिना भीख माँगे आराम से खा-पी सकते थे, पर जुए ने सब गड़बड़ कर दिया...उसने मन ही मन सोच लिया की वो अब कभी भी जुआ नही खेलेगा..

वो अपनी सोच मे डूबा ही हुआ था की पीछे से जावेद ने आकर उसे पुकारा : "अरे जग्गा....यार कहा है तू सुबह से...मैं तेरे घर गया था..पर तू पहले ही निकल चुका था.."

जग्गा ने उसकी तरफ गुस्से मे देखा, जावेद समझ गया की वो कल वाली बात से नाराज़ है..पर अगले ही पल वो बोला : " अच्छा सुन, तुझे शेट्टी भाई ने बुलाया है...चल जल्दी से...वहाँ अंसारी भाई भी आए हुए हैं, उन्होने बोला है की मैं तुझे लेकर वहाँ जल्दी से पहँचु "

जग्गा की आँखो के सामने फिर से नोटो की गड्डियां तैरने लगी...वो बोला : "पर काम क्या है..."

उसकी रूचि बनते देखकर जावेद बोला : "भाई, ये तो मुझे भी नही बताया उन्होने, पर शेट्टी भाई बोले की काफ़ी बड़ा काम है और पैसे भी काफ़ी ज़्यादा मिलेंगे...और ख़ासकर तुझे बुलाया है, कह रहे थे की ऐसा काम जग्गा भिखारी ही कर सकता है.."

जग्गा ने सोचा की ऐसा क्या काम है जो उसके गुंडों की फौज नही बल्कि वो कर सकता है...वो मन ही मन फिर से अपनी किस्मत को सराहता हुआ जावेद के साथ निकल पड़ा..

पर वो ये नही जानता था की आज जो उसके साथ होने वाला है वो उसकी जिंदगी को पूरी

तरह से बदल देगा...

जावेद और जग्गा एक कार मे बैठकर शहर के एक ५ स्टार होटल मे पहुँचे, इतना आलीशान होटल था वो की उसके फर्श पर जग्गा के पैर भी फिसल रहे थे..वो काफ़ी संभल संभल कर चल रहा था, जावेद उसको लेकर लिफ्ट से १५वें माले पर गया और एक कमरे के सामने पहुँच कर उसने बेल बजाई..

कुछ ही देर मे दरवाजा खुल गया और दरवाजा खोलने वाले को देखकर उसकी आँखे चमक उठी..

वो शबाना ख़ान थी..वो भी जग्गा को देखकर मुस्कुरा दी...उसकी मोटी मोटी छातियों पर लगे स्तनाग्र जग्गा को देखने के साथ ही चमकने लगे..शायद उसको भी वो सब एक ही पल मे याद आ गया था, जिसके बारे मे सोचकर जग्गा का भी लिंग खड़ा हो चुका था, वो बड़ी ही मुश्किल से उसको अपने हाथ से छुपाता हुआ अंदर आ गया.

वो एक आलीशान सुइट था...जिसमे बाहर सोफा लगा हुआ था और अंदर की तरफ ३ बड़े बड़े बेडरूम थे..शबाना ने उन दोनों को सोफे पर बिठाया और खुद अंदर कमरे मे चली गयी.

वहाँ पहले से ही ५ लोग बैठे थे...वो देखने मे काफ़ी ख़तरनाक लग रहे थे..जावेद भी शायद उन्हे नही जानता था, इसलिए वो एक दूसरे से बोल भी नही रहे थे...बस घूर-घूरकर एक दूसरे को देखने मे लगे थे.

थोड़ी ही देर मे शबाना बाहर आई और उसने जग्गा से कहा : "तुम चलो अंदर, बॉस ने बुलाया है ..."

जावेद भी साथ ही उठ खड़ा हुआ तो शबाना बोली : "तुम यही बैठो...सिर्फ़ जग्गा को बुलाया है.."

उसकी बात सुनकर तो जावेद की आत्मा सुलग उठी..ऐसे अपमान की उम्मीद नही थी उसको...और वो भी एक वेश्या के हाथों..

पर वो कुछ नही कर सकता था, जलता भुनता सा वो वहीं बैठ गया.

जग्गा अंदर गया..वहाँ एक बड़े से सोफे पर अंसारी और शेट्टी बैठे थे..जग्गा को अंदर आता देखकर शेट्टी भाई बोले : " आजा मेरे शेर....तुझसे मिलने को तो कब से तरस रहा था मैं ...आ जा ..."

शेट्टी भाई से पहली बार मे ही अपने को इतना मान मिलता देखकर जग्गा भी खुश हो गया...वो लंगड़ाता हुआ आगे आया और दोनो से हाथ मिलाकर वहीं उनके सामने वाले सोफे पर बैठ गया

शेट्टी : "जग्गा, ये है अंसारी भाई...जिनके यहाँ से तूने उस दिन माल निकलवाया था..काफ़ी खुश हुए ये तेरे कारनामे से...वो शबाना भी काफ़ी तारीफ कर रही थी इनसे तेरे काम की...इसलिए ये तुझसे मिलना चाह रहे थे..."

जग्गा ने उन्हे देखा...और ना जाने क्यो उसको लगा की उसने अंसारी भाई को पहले भी कहीं देखा है..भारी भरकम सा शरीर था उनका..रोबीला चेहरा...घनी मूँछे...देखने मे ही गेंगस्टर लगता था वो..काफ़ी सोचने की कोशिश की उसने, पर याद नही आया जग्गा को..

अंसारी बोला : "जग्गा, मुझे टाइम और पैसे की उतनी ही कदर है, जितनी सही आदमी की..और तू एक सही आदमी है ,और मेरे पास एक ऐसा काम है जो तू अच्छी तरह से कर सकता है.."

जग्गा पूरा ध्यान लगाकर उसकी बातें सुनने लगा..

अंसारी ने अपनी जेब से हज़ार के नोटो की एक गड्डी निकाली और उसके सामने रख दी...

अंसारी : "ये तू रख ले अभी...बाद मे और भी दूँगा.."

जग्गा की आँखे फैल गई, एक लाख रुपए अपने सामने देख कर..वो बोला : "पर ... काम क्या है.."

अंसारी : "पिछले महीने मैने एक लड़की खरीदी थी...दुबई से ...बिल्कुल कच्चा माल था वो...कुँवारी..खूबसूरत... और ऐसी ही लड़कियाँ मेरी कमज़ोरी है... पर वो जो थी ना, उस जैसा कोई हो ही नही सकता था... पूरे डेढ़ करोड़ मे खरीदा था उसको..और जब उसको लेकर वापिस इंडिया आया, तो रास्ते में ही वो भाग गयी... बस तब से उसके लिए तड़प रहा हूँ ..."

जग्गा समझने की कोशिश करने लगा..वो बोला : "पर इसमे मैं क्या कर सकता हू...ये तो पुलिस का काम है...वो ज़्यादा जल्दी उसको ढूंड सकती है.."

उसकी बात सुनकर शेट्टी और अंसारी दोनो हँसने लगे , शेट्टी बोला : "जग्गा.... हमारे धंधे मे पुलिस की कोई मदद नही लेता... फिर चाहे वो काम लीगल ही क्यो ना हो... और ये काम तो वैसे भी काफ़ी पेचीदा है... ये लड़की कोई मामूली लड़की नही है...दिल्ली के एक बहुत बड़े घराने की इकलौती लड़की है...जो पता नही कैसे इन दुबई वालो के हत्ते चढ़ गयी...और वहीं से नीलामी मे अंसारी भाई ने उसको खरीदा...इन्हे तो बाद मे उसकी स्टोरी पता चली थी की वो असल मे है कौन...पर तब तक देर हो चुकी थी..अब माल खरीदा था तो उसका मज़ा लेना

भी तो बनता ही था ना..बस फिर क्या था...ये भाई तो रास्ते मे ही शुरू हो गये, अपने होटेल जाने तक का भी वेट नही किया...बस,साली रास्ते से ही भाग गयी....ये रही उसकी फोटो ..."

और शेट्टी ने एक फोटो निकाल कर उसके सामने रख दी...जिसे देखते ही जग्गा की समझ मे सब आ गया..

ये लड़की और कोई नही रूपा थी...जो उसके साथ उसकी झोपड़ी मे रह रही थी..

जग्गा का दिमाग़ तेज़ी से चलने लगा...रूपा जब उसको मिली थी तो काफ़ी सुबह का समय था, शायद वो सीधा एरपोर्ट से ही आ रहे थे...और उस समय वो मोटा आदमी जो उसकी इज़्ज़त लूटने की कोशिश कर रहा था, वो और कोई नही, ये अंसारी ही था, इसलिए जग्गा को उसका चेहरा जाना पहचाना सा लग रहा था..पर शायद अंसारी उसको नही पहचान पा रहा था,क्योंकि उस वक़्त वो भिखारी के वेश मे था...और अब वो टी शर्ट और जीन्स पहन कर खड़ा था उसके सामने..

ओहो...यानी, जो लड़की इतने दिनों से उसके साथ भिखारी की जिंदगी जी रही है, वो एक उँचे घराने की रईस औलाद है..और जिसकी कच्ची जवानी को चखने के लिए अंसारी ने डेढ करोड़ रुपय खर्च कर दिए,उसकी जवानी को जग्गा ने फ्री मे ही पेल दिया..

पर जो भी हुआ था रूपा के साथ, वो काफ़ी बुरा था..

जग्गा ने बड़ी मुश्किल से अपने आप पर कंट्रोल किया की जो उसके मन मे चल रहा है, वो बाहर ना दिखे

वो बोला : "पर इसमें मैं क्या कर सकता हू..."

अंसारी : "ये लड़की सेंट्रल मार्केट के पास से गायब हुई थी उस दिन..तू इसके आस पास के इलाक़े को पूरी तरह से छान डाल, तू तो एक भिखारी है,इसलिए हर घर मे जाकर चेक करना तेरे लिए काफ़ी आसान है...मेरे आदमी ये सब नही कर सकते..उनके पीछे तो वैसे भी पुलिस पड़ी है आजकल, इसलिए नये लड़को से काम करवाने पड़ रहे हैं आजकल,तभी तो उस दिन वाला काम भी तुझसे करवाया था जावेद ने..और जब मुझे पता चला की तू पेशे से एक भिखारी है तो मुझे लगा की मेरा ये काम तू ही कर सकता है...इसकी फोटो रख ले...और साथ मे ये फोन और ये पिस्टल भी..."

कहकर अंसारी ने उसके सामने दोनों चीज़े रख दी..और बोला : "कही भी दिखाई दे तो बस मुझे कॉल कर दियो ..और इसके साथ कोई भी हो तो उसको वहीँ के वहीं टपका दियो ...बाकी मैं संभाल लूँगा.."

वो आगे बोला : "बस, एक बार ये ऐश्वर्या मिल जाए..."

जग्गा : "ऐश्वर्या ???"

अंसारी : "हाँ , ऐश्वर्या, यही इसका नाम है...बस एक बार मिल तो जाए ...साली की ऐसी ठुकाई करूँगा की महीने तक हिल भी नही सकेगी बिस्तर से..." वो अपने लिंग को मसलते हुए बोला

जग्गा का तो खून ही खोल उठा ये सुनकर....पर फिर उसको आश्चर्य भी हुआ अपने आप पर, की रूपा यानी ऐश्वर्या के लिए वो इतना भावुक कैसे हो रहा है...उसके सामने एक लाख रूपए पड़े थे..वो अगर चाहता तो अभी के अभी ये बोलकर की वो लड़की तो उसके घर पर ही है,वो और भी रूपए कमा लेता, पर ना जाने क्यो वो अब तक चुप था, और अब अंसारी की ये बात सुनकर तो वो गुस्से मे भी आ चुका था..पता नही क्या हो रहा था उसको...क्या फील कर रहा था वो इस वक़्त ऐश्वर्या के बारे में, ये बात उसकी समझ मे नही आ रही थी अभी.

उसका एक मन तो किया की वो मना कर दे...पर अगर उसने मना कर दिया तो ये काम कोई और करेगा...क्या पता जावेद को ही मिल जाए ये काम और वो तो ऐश्वर्या की फोटो देखते ही पहचान लेगा, और फिर ऐश्वर्या के साथ साथ उसकी भी खैर नही होगी...वो गहरी सोच मे डूब गया की क्या किया जाए, कैसे निकला जाए इस मुसीबत से..

उसको गहरी सोच मे डूबा देखकर शेट्टी बोला : "क्या सोचने लगे जग्गा...इतना पैसा कमाने मे तुझे सालों लग जाएँगे...ये कम है तो ये ले, और पैसे ले, पर ये काम जल्द से जल्द कर दे.."

इतना कहते हुए शेट्टी भाई ने हज़ार के नोटो की दो और गड्डियां निकाल कर रख दी उसके सामने..यानी अब जग्गा के सामने पड़े थे पूरे तीन लाख रूपए ..

जग्गा की समझ मे नही आ रहा था की शेट्टी क्यो इतनी दिलचस्पी ले रहा है इस काम मे..पर अभी के लिए ज़्यादा सोचना सही नही था, उसने जल्दी से सामने रखा सारा समान अपने थेले मे भरा और बोला : "ठीक है , मैं आज से ही इस काम पर लग जाता हू.."

और वो बाहर निकल आया..

उसका उड़ा हुआ सा चेहरा देखकर बाहर बैठा जावेद बोला : "क्या हुआ जग्गा...क्या काम बोले अंदर ..बोल ना.."

पर वो कुछ नही बोला, वो बाहर निकल ही रहे थे की शबाना ख़ान ने जग्गा को इशारे से अपने पास बुलाया, वो जावेद को बाहर जाने का इशारा करके उसके पास गया, बाकी के सभी लोग काफ़ी दूर बैठे थे, शबाना फुसफुसा कर बोली : "अगली बार कब मिलेगा...जब से तूने वो ठुकाई की है, सच मे किसी का भी लेने मे मज़ा नही आता..."

जग्गा के माइंड मे अचानक एक आइडिया आया...वो बोला : "तुम अपना नंबर दे दो...मैं बात करके जल्द ही मिलता हू.."

उसने जल्दी से अपना नंबर एक पेपर टिश्यू पेपर पर लिखकर उसको दे दिया, और जग्गा बाहर निकल आया..

जावेद ने लाख कोशिश कर ली, पर जग्गा ने उसको बाद मे कुछ नही बताया की अंदर क्या काम मिला है..

वो अच्छी तरह से जानता था की जिस दिन जावेद को ये सब पता चल गया, उसी दिन ऐश्वर्या अंसारी के नीचे पहुँच जाएगी...और ये बात सुनकर की वो इतने दिनों से जग्गा के साथ ही थी, और उस दिन भी उसको बचाने वाला जग्गा ही था, वो उसको भी मार डालेंगे...

अब तो उसकी जान का फंदा बन चुकी थी ये ऐश्वर्या ...उसको अंसारी से बचाकर रखने मे ही उसकी भी भलाई थी...वो अब किसी भी कीमत पर ऐश्वर्या को नही खोना चाहता था...पर वो ऐसा क्यो करना चाहता था, इसका जवाब उसको नही मिल रहा था.

अब उसके पास तीन लाख रुपए और एक रिवॉल्वर थी..एक बार तो उसके मन मे आया की ऐश्वर्या को लेकर वो दूसरे शहर मे चला जाए..पर ये डर भी था की अगर अंसारी के लोगो ने उसको वहाँ भी ढूंड लिया तो दोनो का क्या हश्र होगा..भागने वालो के लिए तो पूरी दुनिया छोटी पड़ जाती है..

जग्गा को ध्यान आया की अंसारी ने बताया था की वो दिल्ली के एक बड़े घर की लड़की है...तो ज़रूर उसके घर वालो ने कोई ना कोई इश्तिहार दिया होगा...अख़बारो में ..या कंप्लेंट कराई होगी...वहां से उसके बारे मे पता चल सकता है...और फिर उसको वापिस घर भेजकर वो उसकी जान बचा सकता है...और पुलिस को अंसारी और शेट्टी के बारे में बताकर अपना पीछा भी छुड़वा सकता है..

पर ये सब सोचने मे ही आसान लग रहा था, वो सब होगा कैसे..

पर सबसे पहले तो ये जानना था की अंसारी के साथ साथ शेट्टी भी क्यो इतना उतावला हो रहा था ऐश्वर्या का पता जानने के लिए..और इसका पता सिर्फ़ एक इंसान ही लगा सकता है..

उसने जल्दी से अपना वो मोबाइल फोन निकाला जो अंसारी ने दिया था और शबाना ख़ान का नंबर लगाया..

जग्गा : "हेलो....मैं जग्गा बोल रहा हू ..."

शबाना : "ओह....जग्गा....बड़ी जल्दी फोन कर दिया, यानी जितना मैं तड़प रही हू यहाँ,

उतना ही तू भी तड़प रहा है मेरे लिए, इसलिए घर जाते ही मिला दिया नंबर..."

जग्गा : "हाँ , बस कुछ ऐसा ही समझ लो...तुम कहा हो अभी..."

शबाना : "अभी तो उन दोनों की सेवा करके बाहर निकली हूँ ...सालों ने एकसाथ मिलकर बजा डाली आज तो...बस अभी अंसारी का ड्राइवर घर छोड़कर आएगा मुझे..."

जग्गा : "तुम मेरा एक काम कर सकती हो क्या..."

स्तनत : "काम तो मैं तेरा कोई भी कर दूँगी...बस मेरी प्यास बुझा जा एक बार फिर से...आज रात अंसारी दुबई जा रहा है...अगले दो दिनों तक मैं अकेली ही रहूंगी..तू कल आ जा मेरे घर...पहले मेरी बारी , फिर तेरे काम की बारी..."

जग्गा ने अगले दिन आने का वादा करके फोन रख दिया..

फिर वो वापिस अपने झोपडे की तरफ चल दिया...अंधेरा होने को था...उसने रास्ते से ही खाने का समान पैक करवा लिया..

घर पहुँचकर उसने बड़े ही प्यार से रूपा यानी ऐश्वर्या को देखा...सच मे वो काफ़ी खूबसूरत थी...उसका मासूम सा चेहरा,गहरी झील सी आँखे , उसके चेहरे से निकलता तेज सब बयान कर रहे थे की वो एक अमीर घराने की लड़की है..

पर बेचारी की किस्मत तो देखो...उसको देह व्यापार वालो के चुंगल मे फँसा कर दुबई तक पहुँचा दिया गया..और फिर उसकी यादश्त भी चली गयी ...और अब वो अपनी पिछली जिंदगी भूलकर उसके साथ भिखारियो जैसी जिंदगी बिता रही है...और अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी पूंजी, यानी अपना कुँवारापन भी वो जग्गा को दे चुकी है...

इसलिए जग्गा ने सोच लिया की अब तो कुछ भी हो जाए, वो इसको किसी भी कीमत पर बचाकर ही रहेगा उस भेड़िए के हाथों से..उसके ही पैसे और हथियार का इस्तेमाल करके वो अकेला ही लड़ाई करेगा उन सभी से...और इसके लिए चाहे उसकी जान भी क्यो न चली जाए, वो अब पीछे नही हटेगा..

रूपा : "ऐसे क्या देख रहे हो मुझे...पहली बार देखा है का..."

जग्गा : "नही कुछ भी नही....ये लो खाना, जल्दी से लगा दो, काफ़ी भूख लगी है.."

रूपा : "भूख तो मुझे भी लगी है...पर इस खाने की नही...इसकी.." और इतना कहकर उसने जग्गा की पैंट के उपर से ही उसका लंबा लिंग पकड़ कर सहला दिया.

रूपा की असलियत जानने के बाद तो और भी ज़्यादा सेक्सी लग रही थी जग्गा को वो...ऐसी सेक्सी लड़की की दोबारा ठुकाई के ख़याल से ही उसका लिंग फटने सा लगा...वो बोला : "तो पहले तुम्हारी इसी भूख का इलाज कर देता हू..."

और इतना कहते ही उसने आगे बढ़कर रूपा को पकड़ कर भींच लिया अपनी बाहों मे और उसके रसीले होंठों को पकड़कर ज़ोर से चूम लिया...उसके होंठों पर लगा सारा शहद निकलकर उसके मुँह मे जाने लगा...और वो कसमसाती हुई सी उसकी बाहों मे मचलने लगी..

"अहह ..... पुचssssssssssssssssssssssssssss ..... उम्म्म्मममममममम ....."

रूपा की बल खाती जवानी को अपनी बाहों मे उठाकर उसने बिस्तर पर पटक दिया...और फिर हल्की रोशनी मे उसने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए...रूपा ने भी बिस्तर पर पड़े पड़े अपने कपड़े उतारे और नग्न हो गयी...अपनी टांगे और बाहें फेला कर उसने जग्गा को बड़े ही प्यार से अपने उपर बुलाया..और जग्गा ने उसके प्यार भरे चेहरे को चूमते हुए अपना लिंग उसके अंदर डाल दिया..

"अहह ..... ओह ...जग्गा ..... .... कितना मज़ा आता है ...जब तुम्हारा ये मेरे अंदर जाता है..... अहह ..... और अंदर डालो ..... उम्म्म्मममममम "

और फिर जग्गा ने ऐसे झटके मार मारकर उसकी ठुकाई की, जिन्हे सुनकर शायद अडोस पड़ोस के लोग भी जाग गये होंगे...

और फिर अगले दिन की प्लानिंग करता हुआ जग्गा,रूपा के नंगे जिस्म को अपनी बाहों मे लेकर सो गया.

# १४

अगली सुबह जग्गा की नींद जल्दी ही खुल गयी...उसके दिमाग़ मे कल के सारे सीन किसी मूवी की तरह से चल रहे थे...उसको तो अब भी विश्वास नही हो पा रहा था की उसकी बाहों मे लेटी हुई नग्न लड़की एक अमीर घराने की औलाद है..जो अब सब कुछ भूलकर उसकी पत्नी की तरह उसके साथ रह रही है...ठुकाई का मज़ा ले रही है...

हल्का उजाला होने लगा था...उसको प्रेशर भी लगा था, वो धीरे से उठा और बाहर निकल गया..शोच से निपटने के बाद उसने सोचा की लगे हाथो नहा भी लिया जाए, क्योंकि आज के लिए उसने काफ़ी कुछ प्लान कर रखा था, जिसके लिए उसको हर हाल मे ८ बजे से पहले घर से निकलना ही था..आज उसने शबाना ख़ान से जो मिलना था..

वो नहाने के लिए नदी की तरफ चल दिया..अभी तक पूरी तरह से उजाला नही हुआ था..इसलिए २-४ लोग ही गलियों मे नज़र आ रहे थे...जब वो नहाने की जगह पहुँचा तो उसकी नज़र सीधा वहाँ नहा रही कम्मो पर पड़ी...जो हमेशा की तरह उपर से नग्न होकर आराम से नहा रही थी..नीचे उसने एक छोटी सी कच्छी पहनी हुई थी..जिसमे उसकी छोटी छोटी गोल मटोल सी नितंब बंद थी..

जग्गा को देखते ही उसकी आँखो मे भी चमक आ गयी...पर अगले ही पल उसने घूम कर दूसरी तरफ़ देखा, जहाँ उसकी माँ भी नहा रही थी..आज वो इतनी सुबह अपनी माँ के साथ आई थी...जो अपने बदन पर मात्र एक पेटीकोट पहने हुए नहा रही थी..जिसे उसने अपने मोटे मोटे स्तनों के उपर चड़ा रखा था..उसकी माँ उमा को भी वो काफ़ी बार पेल चुका था...पर बाद मे जब जग्गा को दूसरी जवान और छरहरी लड़कियाँ और औरतें मिलने लगी ठुकाई के लिए तो उसने उमा की तरफ ध्यान देना बंद कर दिया..क्योंकि वो काफ़ी मोटी थी..उसका वजन लगभग ९० किलो के आस पास था उस वक़्त.....और उसके भारी भरकम शरीर के नीचे लेटना किसी यातना से कम नही लगता था जग्गा को..

उमा ने भी जब जग्गा को देखा तो वो नदी मे चलती हुई उसकी तरफ ही आकर नहाने लगी..कम्मो भी बड़ी उम्मीद भरी नज़रों से जग्गा को देख रही थी...जैसे आज वो उसके लिंग से ठुकने को पूरी तरह से तैयार हो..एक ही जगह पर माँ-बेटी को अपने लिए आशिक़ होता देखने का जग्गा के लिए ये पहला मौका था..

इंसान के दिमाग़ मे भले ही लाख परेशानियाँ हो, पर सहवास वो सब भुला देता है...जग्गा के दिमाग़ से इस वक़्त ये निकल ही चुका था की वो और रूपा कितनी बड़ी मुसीबत मे हैं...इस वक़्त तो उसको सिर्फ़ और सिर्फ़ कम्मो की नमकीन और कुँवारी योनी ही नज़र आ रही थी..

कम्मो अपनी छोटी छोटी घुंडीयों पर साबुन लगाकर उन्हे साफ कर रही थी...जिसकी वजह से वो काफ़ी सख़्त हो चुकी थी...और जग्गा को देखने के बाद तो उनमे रक्त संचार और भी तेज़ी

से होने लगा था...और ज़ोर से रगड़ने की वजह से वो लाल हो चुकी थी..

जग्गा उन्हे देखने मे बिज़ी था की उसके कानों मे उमा की आवाज़ पड़ी : "आज तो बड़े दिनों के बाद दिखा है रे जग्गा...मेरी याद नही आती आजकल..."

वो भी बेशर्मो की तरह अपना आधे से ज़्यादा स्तन बाहर निकाल कर उसपर साबुन लगा रही थी...कम्मो अपनी माँ को ऐसी हाकत करती देखकर जल भुन रही थी...वैसे तो वो अपनी माँ को अच्छी तरह से जानती थी...उसका झुग्गी के कई मर्दों के साथ संबंध था...पर इस वक़्त वो जग्गा पर लाइन मार रही थी, जो उसको बिल्कुल भी पसंद नही आ रहा था...वो तो अपनी माँ को किसी सोतन की तरह से देख रही थी..

जग्गा : "तू ही नही दिखती आजकल उमा, तेरे पति का कुछ पता चला क्या ..?"

उसका पति ४ महीने पहले लापता हो गया था, शुरू मे उमा भी परेशान हुई थी, पर ये सोचकर की चलो अच्छा हुआ की अब कोई रोक टोक वाला नही है, वो भी अपनी जिंदगी मे मस्त हो गयी थी...वो शायद अब पैसों के लिए भी ठुकवाने लगी थी बाहर जाकर..और ये उड़ती हुई खबर जग्गा ने भी सुनी थी की वो अब एक धंधे वाली बन चुकी है..

उमा : "नही पता चला रे...बेवड़ा था, पता नही कहाँ मर खप गया...वैसे भी वो किसी काम का नही था मेरे लिए...तू तो जानता है जग्गा, जवान हो रही बेटी की चिंता हर किसी को रहती है...बस उसी के लिए इधर उधर फिरती रहती हू अब..."

उसने बड़ी ही बेशर्मी का परिचय देते हुए अपनी दोनो स्तन बाहर निकाल ली...वो जानती थी की उन्हे देखकर जग्गा का लिंग ज़रूर खड़ा हो जाएगा और उसको फिर से एक बार उसके तगड़े लिंग को अंदर लेने का मज़ा मिलेगा..

पीछे खड़ी हुई कम्मो अपनी मा को उपर से नग्न देखकर हैरान रह गयी...उसने तो सोचा भी नही था की वो ऐसा कुछ करेगी...और वो भी ऐसे, सबके सामने...नदी मे ८-१० लोग और भी नहा रहे थे...उनकी नज़रें भी उमा की मोटी स्तन पर जम कर रह गयी...वो भी अपने अपने लिंग को अपने हाथों मे लेकर सहलाने लगे..और उसके मोटे मोटे स्तनों के दर्शन का मज़ा लेने लगे..

जग्गा ने भी नोट किया की अब वो पहले जैसी मोटी नही रह गयी...उसकी स्तन और भी आकर्षक हो चुकी है...और नितंब भी पीछे से काफ़ी बाहर निकली हुई थी...शायद वेश्या बनने के बाद उसने अपने जिस्म को सही तरह से ढाल लिया था..

जग्गा : "हाँ , दिख रहा है, तेरे इधर उधर फिरने का असर तेरे उपर..."

वो उसके गुलाबी और मोटे स्तनाग्र को घूरता हुआ बोला..

उमा ने इधर उधर देखा फिर धीरे से बोली : "चल ना जग्गा...मेरी खोली मे चल...बस थोड़ी ही देर लगेगी..."

उसकी योनी शायद अंदर से खुजाने लगी थी...

पर जग्गा की नज़रें तो उसकी बेटी कम्मो पर थी...जग्गा को उधर देखता हुआ पाकर वो बोली : "उसको क्यो देख रहा है रे...वो तो बच्ची है अभी..."

वो शायद उसकी नज़रों को पहचान गयी थी..

जग्गा : "बच्ची नही है वो अब....मज़े लेना वो भी सीखना चाहती है...मैं चलता हू तेरे घर ...पर उसको भी सामने रखना होगा तुझे..."

जग्गा से ऐसी शर्त की उम्मीद नही थी उमा को...वो जानती थी की उसकी बेटी का मन आजकल काफ़ी मचलने लगा है...उसने अक्सर गाँव के लड़कों के साथ उसको चूमा चाटी करते हुए देखा था...पर ज़्यादा कुछ वो भी नही बोलती थी उसको...ऐसे माहोल में रहकर एक ना एक दिन तो वो सब होना ही है..पर आज जग्गा के मुँह से उसके बारे मे सुनकर वो समझ गयी की उसकी बेटी भी अब बड़ी हो चुकी है...इस वक़्त तो उसके जिस्म मे आग लगी हुई थी, इसलिए वो बोली : "ठीक है...पर कुछ ज़बरदस्ती ना करना उसके साथ...वो अभी छोटी है..."

जग्गा जानता था की वो कितनी बड़ी है...वो मुस्कुराता हुआ उमा के पीछे चल दिया..कम्मो ने भी अपनी टी शर्ट पहनी और उनके पीछे चल दी..वो नही जानती थी की उनके बीच क्या बात हुई है, पर इतना समझ चुकी थी की कुछ मजेदार होने वाला है..अपने बाप के घर से चले जाने के बाद उसने अक्सर दूसरे मर्दों को अपने घर पर आते हुए देखा था...और उसकी माँ ने समझाया भी था की उन्हे अपनी लाइफ चलाने के लिए अब यही काम करना पड़ेगा...इसलिए उसको भी अब कोई फ़र्क नही पड़ता था..

उमा के घर पहुँचकर जग्गा तो उसके ठाट बाट देखकर हैरान रह गया...उसने अपनी झोपड़ी को पक्के मकान मे बदल दिया था...और सबसे बड़ी बात, उसने अपने अंदर वाले कमरे मे एसी भी लगवाया हुआ था..

उमा उसको लेकर सीधा अंदर घुस गयी...और दरवाजा बंद कर दिया..पर जग्गा के ज़ोर देने पर उसको फिर से खोल भी दिया...

अब उमा से सब्र नही हो रहा था...उसने अपना गाउन निकाल फेंका और पूरी नग्न हो गयी..जग्गा की धोती भी उसने निकाल फेंकी..उसका खड़ा हुआ लिंग सुबह सुबह उसको सलामी ठोंकने लगा ..

वो झट से नीचे बैठ गयी...और उसके लिंग को मुँह मे लेकर चूसने लगी..

जग्गा ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए दरवाजे की तरफ देखा, जहाँ कम्मो आकर खड़ी हो चुकी थी..उसने शायद आज पहली बार अपनी माँ को ऐसा कुछ करते हुए देखा था...वैसे तो वो भी उस दिन जग्गा का लिंग चूस चुकी थी..पर अपनी माँ को इतनी आसानी से वो सब करता देखकर वो समझ गयी की वो पहले भी जग्गा के साथ ये सब कर चुकी है..

जग्गा ने कम्मो को इशारे से उसकी टी शर्ट उतारने को कहा...पहले तो वो झिझकी पर फिर जल्द ही उसकी बात मान गयी...टी शर्ट के साथ साथ उसने अपनी कच्छी भी उतार फेंकी...और अब एक ही कमरे मे दोनो माँ बेटियाँ नग्न थी जग्गा के सामने..

कम्मो की योनी पर अभी हल्के हल्के बाल आने शुरू हुए थे पर उसकी नितंब मे माल भर चुका था काफ़ी...जग्गा का मान हुआ की उसके गोल नितंबो पर अपना मुँह रग़ड़ डाले..पर इसके लिए पहले उमा को तैयार करना था...ताकि वो अपने सामने ही अपनी बेटी को जग्गा के हवाले कर दे..

और वैसे भी आज जग्गा ये सोचकर ही उसके साथ घर पर आया था की वो कम्मो की योनी लेकर ही रहेगा..क्योंकि आज के बाद जो काम वो करने वाला था,उसके बाद वो कभी भी इस कॉलोनी मे वापिस तो आ ही नही सकता था..इसलिए जाने से पहले वो इस कच्ची जवानी को अपने लिंग की सोगात देकर जाना चाहता था..

उमा तो जग्गा के लिंग को चूसने मे बीजी थी...उसे तो पता भी नही था की उसकी बेटी नग्न होकर पीछे ही खड़ी है..

जग्गा ने अचानक कम्मो से कहा : "आ जा कम्मो  ...इधर आकर दिखा, कितनी जवान हुई है तू और कितनी बच्ची है अभी तक..."

जग्गा की बात सुनते ही उमा ने घूमकर पीछे देखा...उसको तो विश्वास ही नही हुआ की उसकी जवान हो चुकी बेटी ऐसे नग्न होकर उनके सामने आ जाएगी...पर उसको देखकर उमा समझ गयी की आज वो ठुकने के लिए पूरी तरह से तैयार हो गयी है...वो मना करती भी तो किस मुँह से , वो खुद भी तो यही काम कर रही थी..ऐसे मे सिर्फ़ सिर झुकाकर उसके लिए जगह बनाने के अलावा वो कुछ और कर ही नही पाई...

अब जग्गा के सामने दोनो माँ बेटी उसकी दासियों की तरह बैठी हुई थी...और एक एक करके उसके लिंग को चूस रही थी...

पर जग्गा को तो उमा मे कोई दिलचस्पी ही नही थी...वो तो बस कम्मो को देखने मे लगा था...अपना हाथ सिर्फ़ उसके सिर पर फेर रहा था...अपने लिंग को ज़्यादा देर तक उसके ही मुँह मे रख रहा था...और उसकी माँ को अपने टटटे दे रहा था चूसने के लिए..

अब उमा भी समझ चुकी थी की उसकी बेटी का चुदना लगभग तय ही है जग्गा के लंबे लिंग से...और वो सिर्फ़ उसकी वजह से ही उसके घर तक आया है...

वो बीच मे से हटना चाहती थी..पर अपनी योनी की खुजली मिटाए बिना नही...वो सीधा बिस्तर पर जा चढ़ी और जग्गा को अपने उपर खींच कर उसके लिंग को अंदर ले लिया...

"आअह्ह्ह्ह्ह्ह ..... साले .....जग्गा ....हरामजादे .....मेरी बेटी से ज़्यादा मज़े ले रहा है...तू आया भी इसके लिए ही है ना....कोई बात नही कमीने...आज कर ले इसके साथ भी मज़े...अहह...पर पहले मेरी ठुकाई कर ले अच्छी तरह से....ओफफफफफफफफफफफफफफफ़ .....मैं तो इससे भी छोटी थी जब पहली बार ठुकी थी...इसके अंदर की गर्मी मैं समझ सकती हू.....अहह....पेल लियो आज इसको भी....कर दे इसको भी जवान...."

उमा के मुँह से अपनी बेटी के बारे मे ऐसी बाते सुनकर जग्गा के साथ साथ कम्मो भी हैरान रह गयी....जग्गा समझ गया की एक लड़की के अंदर जब आग भड़कती तो कैसा फील होता है...और ऐसी आग मे ज़्यादा देर तक वो अपनी बेटी को तड़पाना नही चाहती थी...

ऐसी माँ आजकल कम ही मिलती है, जो अपनी बेटी की ऐसी ज़रूरत का भी पूरा ध्यान रखे..

जग्गा ने भी तेज़ी से धक्के मारने शुरू कर दिए....सुबह का वक़्त था, इसलिए उसका लिंग पूरे उफान पर था...पर वो जल्दी झड़कर कम्मो को और लंबा इंतजार नही करवाना चाहता था...और कम्मो तो उसके लंबे लिंग से अपनी माँ की ठुकाई होते देखकर हैरानी से कभी उसके लिंग को देखती और कभी अपनी अनठुकी छोटी सी योनी को....वो समझ नही पा रही थी की ऐसी छोटी सी योनी मे उसका मोटा और लंबा लिंग कैसे जाएगा...

पर आज तो किसी भी हालत मे वो उसकी ठुकाई करके ही मानने वाला था...उसने उसकी योनी को ठुकाई के लिए तैयार करने का एक नायाब तरीका निकाला...उसने कम्मो को भी उपर खींचकर सीधा उसकी माँ के मुँह के उपर बिठा दिया और कम्मो का चेहरा अपनी तरफ कर लिया...इस तरीके से कम्मो की कुँवारी योनी अब उसकी माँ उमा के मुँह मे थी और उसके छोटे छोटे उभार सीधा जग्गा की वासना से भरी आँखो के सामने...

जग्गा ने आगे बढ़कर उन्हे सहलाया और फिर उसके चेहरे को पकड़कर अपने पास लाया और उसे स्मूच करने लगा....

नीचे के होंठों पर उसकी माँ के होंठों की पकड़ और उपर के होंठों पर जग्गा के होंठों की....कम्मो की तो बुरी हालत हो गयी....उसकी योनी से लबालब तरी निकल कर उसकी माँ की जैसे मुँह मे जाने लगी...

और अपनी बेटी के रस को पीकर उमा भी अपनी उत्तेजना के उफान पर पहुँच गयी और एक

जोरदार झटके के साथ उसकी योनी ने ढेर सारा पानी बाहर की तरफ उछाल दिया...और उसने भी अपनी बेटी की जांघों को ज़ोर से भींचते हुए उसकी योनी को और भी अंदर तक चूस कर उसे उसकी ठुकाई के लिए तैयार कर दिया...

अब बारी थी कम्मो की....उसको जग्गा ने अपने सामने बिछाया...बगल मे ही उसकी माँ गहरी साँसे लेती हुई अपने सदमे से उभरने की कोशिश कर रही थी...इतने मे जग्गा ने बिना वक़्त गँवाए कम्मो की दोनो टांगे पकड़ी और उसके अंदर अपना लिंग सटाकर जोरदार धक्का मारा...

"माआआआआआआआआआ..... अहह ....मररररर गयी ..... "

और जब तक उसकी माँ देखती की क्या खून ख़राबा चल रहा है वहाँ, जग्गा ने एक और शॉट मारा और अपना आधे से ज़्यादा लिंग अंदर तक पेल दिया....

"आआआआआआआआआआहह..... मममाआआआआ .....दर्द हो रहा है ....."

उमा : "जग्गा.....धीरे कर हरामी....मेरी फूल सी बच्ची को दर्द हो रहा है..."

वो उसका सिर सहलाने लगी...और तब तक जग्गा ने आख़िरी वार किया और अपना पूरा लिंग उसकी छोटी सी योनी के अंदर डाल कर उसके उपर ओंधा लेट गया...

कम्मो की आँखे उबल कर बाहर निकल आई....उसने जग्गा की कमर को ज़ोर से पकड़ लिया...और वो दोनो काफ़ी देर तक ऐसे ही एक दूसरे से लिपटे लेटे रहे...

फिर कम्मो ने ही अपनी नितंब उपर की तरफ उचकानी शुरू की...उसके अंदर के दर्द ने कब खुजली का रूप ले लिया, उसको भी पता नही चला...और अब वो इस खुजली को जग्गा के लिंग से बुझाना चाहती थी...

वो बड़बड़ाने लगी : "आआआआआआआआह ....अब पेल ना साले ....जग्गा.....अपने लिंग से....जैसे अपनी बीबी को पेलता है.....जैसे मेरी माँ को पेला अभी.....साले .....हरामी....ज़ोर से धक्के मार ना..... अहह ....अहह .....और तेज कर जग्गा....."

अब तो उसके सिर पर जैसे सहवास का नशा पूरी तरह चड चुका था....उसने जग्गा के लिंग को ऐसे झटके ले-लेकर अंदर लिया की उसकी माँ भी समझ गयी की उसकी बेटी उससे भी बड़ी वेश्या बनेगी...

जग्गा ने उसकी जांघे पकड़ी और ज़मीन पर खड़ा होकर धक्के मारने लगा....उसकी छोटी

छोटी स्तन हर झटके मे ऐसे हिलती जैसे गुलाब जामुन थाली से निकल कर बाहर आ जाएगा...

और अब वो भी हर झटके को एंजाय कर रहा था...ऐसी टाइट योनी तो रूपा की भी नही निकली थी, जब उसने उसकी पहली ठुकाई की थी....

और फिर रूपा के बारे में सोचते हुए...और कम्मो की कसाव वाली योनी को मारते हुए उसके लिंग ने भी जवाब दे दिया...और आख़िरी वक़्त पर उसने अपने लिंग को बाहर निकाला और जोरदार प्रेशर के साथ सीधा कम्मो के जिस्म को भिगो दिया....उसके गर्म लावे मे पिघलकर कम्मो की जवानी की आग शांत हुई...

और कुछ देर तक आराम करने के बाद जग्गा बाहर निकल गया...और सीधा अपनी झोपड़ी मे पहुँचा...रूपा अभी तक सो रही थी...जग्गा ने शबाना को फोन करके मिलने का टाइम लिया...और फिर रूपा को उठाया..

दोनो ने मिलकर नाश्ता किया...और फिर रूपा को कुछ समझाकर वो बाहर निकल गया...शबाना के घर की तरफ..

# १५

पैसो की कमी तो अब थी ही नही जग्गा के पास, इसलिए उसने पहले अपना हुलिया सही करने की सोची..सबसे पहले तो उसने पूरे दिन के लिए एक टैक्सी किराए पर ली ..फिर वो सीधा उसी मसाज पार्लर मे गया, जहाँ उसको दिया और शुमोना ने पिछली बार मज़े दिए थे...उस दिन दिया तो मिली नही पर शुमोना ने जग्गा को देखते ही पहचान लिया और वो उसको लेकर अंदर केबिन मे आ गयी..

अंदर जाते ही जग्गा ने सीधा पाँच हज़ार निकाल कर शुमोना के हाथ मे रख दिए और बोला की आज मेरा हुलिया ऐसा कर दो जैसे फिल्मी हीरो का हो..

पर उसके काले चेहरे को देखकर वो बात सही नही बैठ रही थी...फिर भी शुमोना ने हंसते हुए उसके चेलेंज को स्वीकार किया और अपने काम मे जुट गयी..इतने पैसे तो उसको शायद ही किसी ने दिए हो आजतक..उसने जग्गा के बाल सही से काटे, उसकी शेव बनवाई..उसके शरीर के सारे बाल निकाल कर उसको बिल्कुल चिकना बना दिया..और पूरे शरीर पर इंपोर्टेड क्रीम लगा कर जमकर मालिश करी..अंत मे उसने जग्गा को जब नहलाया तो जग्गा भी अपने अक्स को देखकर हैरान रह गया..सिर्फ़ उसकी लंगड़ी टाँग ही माइनस पॉइंट थी, वरना उपर से नीचे तक वो किसी हीरो से कम नही लग रहा था..

शुमोना ने जग्गा के लिंग को हाथ मे लेकर उसको हेंड जॉब देने की कोशिश की पर उसने मना कर दिया, क्योंकि वो अपने लिंग की गर्मी को शबाना ख़ान के लिए बचाकर रखना चाहता था.

उसके बाद वो एक बड़े से मौल मे गया और आधे घंटे मे ही उसके शरीर पर नये कपड़े थे, जिनकी वजह से वो काफ़ी डेशिंग लग रहा था...उसने रूपा के लिए भी काफ़ी शॉपिंग की और बाहर निकल कर उसने वो सारा समान गाड़ी मे ही रख दिया और शबाना के घर की तरफ चल दिया..

अब उसके दिमाग़ मे जो योजना थी, वो शबाना की जानकारी के आधार पर ही निर्भर थी..पर वो अच्छी तरह से जानता था की शबाना से जानकारी निकलवाने के लिए पहले उसको पूरी तरह से खुश भी करना पड़ेगा..

उसने नीचे से ही फोन कर दिया की वो पहुँच गया है, शबाना ने भी कहा की रास्ता क्लीयर है, वो सीधा उपर आ गया.

उसको शायद पता नही था की जब से जग्गा ने दोबारा मिलने का वादा किया था, तब से उसकी योनी किसी नये पक्षी की तरहा चहचहा रही थी..जिसमे वो किसी भी हालत मे जग्गा के लिंग को ठुकवाकर उसकी तड़प शांत करवाना चाहती थी..

जग्गा ने जैसे ही बेल बजाई, शबाना ने झट से दरवाजा खोलकर उसको अंदर खींच लिया और एक ही झटके मे दरवाजा बंद कर दिया.

उसने एक लाल रंग की छोटी सी नेट वाली नाइट ड्रेस पहनी हुई थी..बिना किसी अंडरगार्मेंट्स के..जिसमे उसकी गोरी गोरी स्तन और मोटी मोटी जांघे बड़ी सेक्सी लग रही थी.

उसने जग्गा के बदले हुए रूप को देखा तो वो और भी प्यासी हो उठी..एक तो पहले से ही अपने लंबे लिंग की वजह से वो गबरू जवान लगता था..अब उसके हुलिए ने भी उसको एक सेक्सी रूप दे दिया था...वो किसी बिल्ली की तरह से उसपर झपट पड़ी और वहीं गेलेरी मे ही उसके बदन से लिपट कर उसको चूमने लगी..

इतनी गर्म औरत से निपटने का शायद पहला मौका था जग्गा का, क्योंकि शबाना अपने भारी भरकम जिस्म से धक्के मार-मारकर उसको उत्तेजित कर रही थी...उसने जग्गा को वही गेलेरी की दीवार से सटा दिया और अपनी दोनो बाहों को उसके गले मे बाँध कर लटक सी गयी...जग्गा के पास और कोई चारा नही बचा था, इसलिए उसने उसकी नितंब के नीचे हाथ रखकर उसे हवा मे उठा लिया..भले ही उसके स्तन और जांघे काफ़ी मोटे थे पर उसका वजन ज़्यादा नही था..जग्गा के हाथों मे आते ही वो पूरी तरह से अड्जस्ट हुई और जोर जोर से उसके होंठों को चूसने लगी...

"उम्म्म्मम ..... पुचहssssssssssssssssssssss ...अहहssssssssssssssss .....उम्म्म्मममममममम ... ओह जग्गा ..... चूसो मेरे होंठ .....अहह ....ज़ोर से ..... काटो मत ..... बस चूसो ..... उम्म्म्मममममममssssssssssssssssssssssssssssss ...अहह ...."

जग्गा ने उसको सामने वाली दीवार से टीका दिया और शबाना ने अपनी दोनो टांगे जग्गा की कमर से लपेट दी..और उसने अपने दोनो हाथ उपर करते हुए एक रोड को पकड़ लिया..जग्गा ने अपने दोनो हाथों से उसके स्तन पकड़े और ज़ोर से उमेठ दिए...शबाना को दर्द तो हुआ पर मीठा वाला .....उसने चिल्लाते हुए अपनी दोनो स्तन को एक ही बार मे नग्न कर दिया और उन्हे जग्गा के चेहरे के सामने परोस दिया..

"आआआआआआअहह ..... उफफफफफफफफफफफफफफफ़ जग्गा ..... और ज़ोर से दबाओ .....अहह ...तरस रहे है ये कब से ..... चूसो इन्हे ..... निचोड़ डालो सालों को ..... रग़ड़ डालो अपने हाथो से ..... दिखाओ अपना रफ़ स्टाइल ज़रा .....अहह sssssssssssssssssssssss "

जग्गा को दोबारा याद दिलाने की ज़रूरत नही पड़ी उसके बाद शबाना को.... वो किसी जंगली की तरह उसपर टूट पड़ा ...उसने अपने दाँये हाथ से उसकी नाईटी के कपड़े को खींचकर फाड़ दिया और उसके शरीर से अलग करते हुए दूर फेंक दिया...और नीचे होते हुए उसने अपने पैने

दांतो से उसके उभरे हुए स्तनाग्र को दबोचा और ज़ोर से काट लिया.....वो वार इतना जोरदार था की शबाना ने जग्गा के सिर को ज़ोर से अपनी छाती मे दबा कर उस दर्द को बड़ी मुश्किल से संभाला...

"अहह ..... येसस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स ..... काट इन्हे .....कुत्ते की तरह चबा जा मेरे स्तनाग्र ..... अहहssssssssssssssssssssssssssssssssssssss "

जग्गा पर तो जैसे अब कोई पागलपन सवार था...वो शबाना को अपनी गोद मे उठाए हुए ही सीधा अंदर की तरफ गया और उसके वॉटर वाले गद्दे के उपर पटक दिया...वो जितना अंदर तक गयी उतना ही उपर की तरफ भी उछली..जग्गा के लिए ये नया अनुभव था..उसने वॉटर बेड आज से पहले कभी नही देखा था, देखता भी कैसे..एक भिखारी की जिंदगी मे ऐसी चीज़ो की कोई जगह नही होती..

बेड पर उपर नीचे उछल कर जब शबाना का शरीर शांत हुआ तो उसकी बदहवासी देखकर जग्गा ने एक ही झटके मे उसका नीचे वाला कपड़ा भी खींचकर बाहर निकाल फेंका..अब वो उस वॉटर बेड पर,सफेद चादर के उपर,नग्न पड़ी थी...उसकी योनी से पानी निकल कर नीचे बह रहा था...जग्गा ने उसकी दोनो टांगो को उपर उठाया..और उसकी आँखो मे देखता हुआ अपनी जीभ से उसकी दोनो टाँगो और जांघों को चाटता हुआ नीचे तक आया और फिर एक ही झटके मे, किसी शिकारी की तरह उसने अपने मुँह से उसकी मचल रही योनी को पकड़ लिया और उसके गीले होंठों को अंदर निगल कर उन्हे चूसने लगा.

"उम्म्म्मममममममममममम ..... येसस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स माय डार्लिंग जग्गा ..... अहह ..... मररर्रर गयी मैं तो ..... ओफफफफफफफफफफफ़ ...क्या फीलिंग है रे ..... अहह ...कहाँ से सीखा है तू ये सब ..... अययईीईईईईईईईईईईईईईईई ..... अपनी जीभ से पेल मुझे जग्गा.....अहह ...."

जग्गा ने अपनी लंबी जीभ को कड़ा करते हुए उससे उसकी मखमली योनी की ठुकाई करनी शुरू कर दी...वो हर बार सूखी हुई अंदर जाती और योनी के रस मे भीगकर ही बाहर निकलती, जिसे जग्गा चट कर जाता....कभी वो अपनी जीभ से उसकी योनी को नीचे से उपर तक चाट्ता, कभी उसकी क्लिट को अपने होंठों मे लेकर चुभलाता...कभी अपनी उंगली अंदर डालकर अंदर की लाली को बाहर उभारता और उसे चूसता ...ऐसे करते करते शबाना ख़ान दो बार झड़ गयी...

अब उससे सबर नही हो रहा था...वो जल्द से जल्द जग्गा के लिंग को अपनी योनी मे लेना चाहती थी...पर इतनी देर से उसकी सेवा करते करते जग्गा का लिंग थोड़ा ढीला सा होकर बैठ चुका था...शबाना को पता था की उसको कैसे तैयार करना है...उसने जग्गा को वॉटर बेड पर लिटाया और अपने थन लटका कर वो उसकी टाँगो के बीच बैठ गयी..और धीरे धीरे अपने चेहरे को नीचे करते हुए उसने एक ही झटके मे उसके लिंग को दबोचा और खाना शुरू कर दिया...पहले आगे का हिस्सा और फिर धीरे धीरे पूरा ही निगल गयी उसको...ऐसा ट्रीटमेंट

मिलते ही उसका लिंग दोबारा खड़ा होने लगा और देखते ही देखते वो अपने आकार मे वापिस आने लगा...और जैसे जैसे वो बड़ा हो रहा था, शबाना को उसे अपने मुँह मे रखना मुश्किल हो रहा था, जग्गा अपने हाथो को सिर के नीचे रखे देख रहा था की कैसे शबाना के मुँह से उसका लिंग किसी अजगर की तरह बाहर निकल रहा है...ऐसा लग रहा था की वो अपने मुँह से जग्गा के लिंग को उगल रही है..और जब जग्गा का लिंग पूरे आकार मे आ गया तो सिर्फ़ उसके आधे हिस्से को ही अपने मुँह मे रख पाई वो...

उसके बाद शबाना ने उसको अपनी थूक से भिगो भिगो कर ऐसा चिकना किया की एक ही बार मे वो किसी भी संकरी से संकरी योनी मे उतर जाए...और फिर उछलकर वो उसपर जा चढ़ी ...जैसे घोड़े पर चड़ते है, ठीक वैसे ही..और जैसे ही उसने जग्गा के लिंग को अपनी योनी पर रखा..जग्गा ने अपने हाथ से अपने लिंग को पकड़कर वही रोक दिया..और बोला : "तुम्हे मैने कहा था ना..मुझे कुछ जानकारी चाहिए.."

ऐसे मौके पर अगर कोई रोक ले तो क्या हाल होता है, ये तो वही जानता है जिसपर ये बीती है..और ये हाल अब शबाना का भी हो रहा था..वो तो पहले से ही कुछ भी बताने के लिए राज़ी थी..पर जग्गा जानता था की जो जानकारी वो चाहता है, वो शबाना बाद मे शायद ना दे पाए, इसलिए पूरी तस्सल्ली कर लेना चाहता था.

शबाना : "अहह .....साले .....ऐसे मौके पर क्यो बोल रहा है.....जल्दी कर .....अंदर डाल.....जो बोलेगा बता दूँगी.....अभी मत तड़पा मुझे.....जल्दी से इसको अंदर डाल और पेल मुझे ..... उम्म्म्मममममममममम..."

और जग्गा ने उसकी बात मानते हुए अपने हाथ को पीछे खींच लिया...और शबाना सीधा उसके उपर बैठती चली गयी....उसकी आँखे बंद थी..पर चेहरे पर आ रहे संतुष्टि के भाव बता रहे थे की अंदर जाता हुआ लंबा खंबा कितने मज़े दे रहा है उसको...वो नीचे झुक गयी और जग्गा के चेहरे पर किस्सेस की झड़ी लगा डाली...जग्गा ने भी अपने दोनो हाथ उसके स्तनों पर जमा दिए और नीचे से धक्के मारने लगा..

"अहह .....जग्गा .....क्या लिंग है तेरा.....साले .....ऐसा मज़ा तो आज तक किसी ने नही दिया.....अहह ....उम्म्म्मममममममम ..... ज़ोर से मार मेरी .....आज फाड़ डाल मेरी योनी को ..... ज़ोर से झटके मार.... ज़ोर से. ....मुझे जोर जोर से करना ही पसंद है..... कर ना साले . .....मार मेरी योनी .."

जग्गा ने अपने दोनो हाथ उसकी नितंब पर रखे और उसे अपनी तरफ भींचकर नीचे से उसकी योनी मे अपने लिंग को पिस्टन बनाकर लिंग पेलने लगा...

जग्गा का चेहरा उसके मादकता से भरे स्तनों के बीच फँसा हुआ था...और वो एक तरह से उसके फेस की मसाज कर रहे थे...वो कभी उनपर दाँत मारता, कभी उसका दूध पीने लग जाता..कभी जीभ से चाट्ता...और कभी दांतो से निशान बनाता...

और फिर एक जोरदार चीत्कार के साथ शबाना ख़ान झड़ने लगी...ऐसा झड़ना भी जग्गा ने पहली बार देखा था....ऐसा लगा की उसके लिंग पर किसी ने गर्म पानी की टंकी चला दी हो...उसकी योनी का रस पिघलकर बाहर आया और चादर को भिगो दिया..

अब बारी थी जग्गा की...उसने शबाना को घोड़ी बनाया और पीछे से उसकी योनी मे लिंग पेल दिया...शबाना का सिर हर झटके से नीचे की तरफ होता चला गया...और आख़िर मे जाकर उसका चेहरा नीचे की गीली चादर पर जा टिका , जहाँ उसकी योनी के रस ने कीचड़ मचा रखा था...

जग्गा ने उसकी नितंब को अपने दोनो हाथों मे थाम कर ऐसे झटके दिए की जब आख़िर मे जाकर वो झड़ने लगा तो उसके लिंग से ज़्यादा घर्षण की वजह से आग सी निकल रही थी...जिसकी वजह से उसका लिंग सुलग सा रहा था...

और आख़िर मे जग्गा के लिंग से जब प्रेशर के साथ रस बाहर निकालने लगा तो उसने वो शबाना की योनी के अंदर ही निकाल दिया...ये भी नहीं पूछा की वो प्रेगनेन्ट होना चाहती है या नही...अपनी तरफ से उसने अपना योगदान करते हुए उसकी योनी को अपने रस से भर दिया..

"अहहssssssssssssssssssssssssssssss ..... ले साली.....सारा माल अपनी योनी के अंदर ही ले आज.....अहह .....ओहsssssssssssssssssssssssssssssss ....."

और फिर वो भी हांफता हुआ सा उसके उपर गिर पड़ा..

कुछ देर मे दोनो सामान्य हुए...शबाना ने उसकी तरफ मुस्कुराते हुए देखा और बोली : "चिंता मत करो...मैने टेबलेट ले रखी है..."

जग्गा को क्या फ़र्क पड़ रहा था..वो तो बस उससे अपनी जानकारी निकलवाने के लिए उतावला हो रहा था..

जग्गा : "तुमने कहा था की मुझे कुछ भी बताओगी ..जो मैं जानना चाहता हू.."

शबाना : "हाँ ....बोलो....."

जग्गा : "मुझे अंसारी भाई के बारे मे सब कुछ बताओ...वो कहाँ रहता है...कहाँ जाता है, किससे मिलता है...क्या क्या धंदे है उसके...सब जानना है मुझे.."

उसकी बात सुनकर एक पल के लिए तो शबाना की आँखे फैल गयी...और फिर वो ज़ोर से ठहाका मारकर हँसती हुई बोली : "हा हा हा.....तुझे क्या लगता है...मैं तुझे ये सब बता

दूँगी..."

जग्गा ने साईड मे रखी अपनी पैंट मे से पिस्टल निकाल कर उसके सिर पर लगा दी..

शबाना को इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नही थी..

शबाना : "अरे....तू तो नाराज़ हो गया....इसको हटा...मुझे इससे बड़ा डर लगता है..."

जग्गा ने पिस्टल हटा दी...और फिर शबाना की तरफ सवालिया नज़रो से देखा

शबाना : "देख जग्गा...मुझे नही पता की तू ये सब क्यो जानना चाहता है...पर सच मान, मुझे उसके बारे मे कुछ नही पता...वो ज़्यादातर दुबई मे ही रहता है...और इंडिया जब भी आता है तो या तो मेरे पास या फिर ..."

जग्गा : "हा हाँ ....बोल "

शबाना :"या फिर वो शेट्टी भाई के वर्सोवा वाले बंगले पर ठहरता है...वो जगह समुंदर के किनारे पर है...और उसके बंगले के चारों तरफ इतने आदमियो का पहरा रहता है की कोई परिंदा भी पर नही मार सकता.."

जग्गा : "तुझे तो पता ही है अंसारी भाई आजकल एक लड़की के पीछे पड़े हैं...और उसे पागलों की तरह ढूँढ रहे हैं..."

शबाना : "हाँ ....ऐश्वर्या ..... उसे ढूँढने के लिए ही तो तुझे बुलवाया था अंसारी ने..."

जग्गा : "हाँ ....मुझे उस लड़की के बारे मे बता...उसके घर वालो के बारे मे..."

शबाना : "वैसे तो मैं ये बात तुझे कभी ना बताती..पर अंसारी जिस तरह से उसको तवज्जो दे रहा है,उसे देखकर मुझे बड़ी जलन सी हो रही है...इसलिए में उसके बारे में तुझे बताती हू.."

और फिर शबाना ने ऐश्वर्या के घर वालो के बारे मे सब कुछ जग्गा को बता दिया.

फिर कुछ देर रुक कर वो बोली : "पर तू ये सब क्यो पूछ रहा है....तू पुलिस का खबरी तो नहीं बन गया या कहीं तू अंसारी को जान से तो नही मारना चाहता ना.."

जग्गा : "तूने ज़्यादा सवाल किए तो तुझे ज़रूर मार डालूँगा....तू एक फिल्मी हेरोइन है...मीडीया वालो को तेरा सारा कच्चा चिट्ठा बोल दिया ना तो कही की नही रहेगी...इसलिए अपनी ज़बान बंद रखियो...और मुझे मेरा काम करने दे...समझी.."

और फिर शबाना को एक एक और धमकियाँ देकर और शेट्टी के बंगले का पूरा पता लेकर वो वहाँ से निकल आया..

अब उसे अपनी योजना सफल होती नज़र आ रही थी...और इसके लिए उसको एक भरोसेमंद आदमी की ज़रूरत थी...और वो जानता था की वो काम कौन कर सकता है.

जग्गा सीधा जावेद के पास पहुँचा..अपनी तरफ से तो जग्गा यही समझ रहा था की वो उसका दोस्त है..उसकी मदद ज़रूर करेगा...और अगर ज़रूरत पड़ी तो उसे पैसे भी देगा पर ये काम ज़रूर करवाएगा..

पर वो भला ये बात कैसे जानता की उसके मन मे तो खुद रूपा की ठुकाई का नशा सवार है..वो कब से रूपा की जवानी का मज़ा लेने के लिए तड़प रहा है.

जावेद के घर पहुँचकर जग्गा ने दरवाजा खड़काया और उसने दरवाजा खोला

जावेद : "अरे जग्गा तू...इस वक़्त....आ जा ..अंदर आ"

जग्गा ने अंदर जाकर देखा की उसका साथी कल्लन भी वहीं बैठा है और वो दोनो बैठकर शराब पी रहे हैं..

जग्गा : "यार...तुझसे कुछ अकेले मे बात करनी है...कुछ ज़रूरी काम है.."

जावेद भी जानना चाहता था की अंसारी भाई ने उसे कौन सा गुप्त काम दिया है , इसलिए उसने तुरंत कल्लन को वहाँ से जाने के लिए कहा..

उसके जाते ही जावेद बोला : "हाँ भाई...अब बोल..क्या काम है..."

जग्गा को समझ नही आ रहा था की वो कैसे बात की शुरूवात करे..वो बोला : "देख जावेद...तुझे मैं अब अपना दोस्त मानता हू..इसलिए यहा आया हू तेरे पास...पर मेरी एक बात सुन ले..जो भी मैने कहा..अगर तूने मेरा साथ दिया तो ठीक, वरना मेरे रास्ते मे मत आइयो.."

जावेद तो समझ ही नही पा रहा था की वो बोल क्या रहा है..पर फिर भी वो चुप होकर उसकी बाते सुनता रहा..

जग्गा : "तुझे तो पता भी नही की आज अंसारी ने मुझे क्यो बुलाया था..."

जावेद : "हां ....वही मैं पूछने वाला था तुझसे...बता ना, क्या काम था .."

जग्गा ने अपनी जेब से रूपा यानी ऐश्वर्या की फोटो निकाल कर रख दी उसके सामने..

जावेद : "अरे..ये तो रूपा भाभी की...यानी तेरी बीबी की फोटो है...इसका उनके काम से क्या लेना देना.."

जग्गा : "वो लोग इसी को ढूंड रहे हैं...और इसका नाम रूपा नही बल्कि ऐश्वर्या है...और ये दिल्ली के एक बहुत ही अमीर घराने की औलाद है..."

जावेद : "क्या ?????????????? रूपा भाभी...पर ये तो...तेरी बीबी है ना...तूने ही तो बताया था की..."

जग्गा बीच मे ही बोल पड़ा : "नही...ये मेरी बीबी नही है....ये तो मुझे ऐसे ही एक दिन सड़क पर एक्सीडेंट के दौरान मिल गयी थी..."

और इतना कहकर उसने उस दिन का किस्सा और बाद की भी कहानी की कैसे उसकी यादश्त चली गयी और वो उसे अपना पति समझने लगी..और साथ ही साथ उसने उस दिन अंसारी और शेट्टी भाई के साथ हुई डील के बारे मे भी बता दिया..

जावेद हैरान होता हुआ वो सब सुन रहा था...उसका सारा नशा उतर चुका था..

जावेद : "अब तू मुझसे क्या चाहता है..."

जग्गा : "ये सब जाने के बाद मेरे पास दो ही रास्ते थे...एक, या तो मैं रूपा को लेकर यहाँ से काफ़ी दूर निकल जाता..पर अगर ऐसा करता तो वो और उसके आदमी मुझे कहीं से भी ढूंड लेते और मुझे मारकर उस फूल सी लड़की को उस वहशी के हाथ सौंप देते..."

जावेद : "और दूसरा क्या है...जिसके बारे मे सोचकर तू मेरे पास आया है.."

वो भी शायद समझ रहा था की जग्गा के दिमाग़ मे क्या चल रहा है..पर वो खुद जग्गा के मुँह से सुनना चाहता था...

जग्गा : "दूसरा रास्ता ये है की मैं अंसारी और शेट्टी भाई को ही मार दू ..ताकि ये डर हमेशा के लिए ही ख़त्म हो जाए..."

उसकी बात सुनकर जावेद का दिल धक्क से रह गया...एक सड़क छाप भिखारी मे मुँह से ऐसी बात सुनने की उम्मीद उसे नही थी...वो शायद नही जानता था की जिन लोगो को वो मारने की सोच रहा है वो कितने खतरनाक अपराधी है..

जावेद : "तू पागल हो गया है क्या जग्गा...तुझे पता भी है की तू क्या बोल रहा है...शेट्टी भाई के साथ मैं बरसों से काम कर रहा हू...वो भाई है इस शहर का...और वो अंसारी भाई, वो तो उसका भी भाई है...यानी अंडरवर्ल्ड की दुनिया मे उसकी तूती बोलती है...और तू उन्हे मारने की बात कर रहा है...तू वहां पहुँच भी नही पाएगा और तेरी लाश पड़ी होगी किसी सड़क पर..."

जग्गा (गुस्से मे) : "वो तो फिर भी पड़ी होगी...जब उन्हे पता चलेगा की वो इतने टाइम से जिसे ढूंड रहे हैं वो मेरे पास है..या फिर मैं भाग कर कहीं और भी चला गया तो मुझे ढूंड कर वो मेरी आरती नही उतारेंगे ..मेरे भेजे मे गोली उतारेंगे ...उनकी डील को मैने इसलिए मना नही किया की कुछ टाइम तो मिल ही जाएगा और उनका विश्वास भी , ताकि वो मेरी बातों मे आकर फँस जाए और मैं उन्हे मार सकूँ..."

जग्गा की बात अभी तक जावेद के गले से नही उतर रही थी...वो जानता था उन लोगो की ताक़त को...और ये जग्गा अपने हाथ मे एक पिस्टल लेकर उन्हे मारने निकल पड़ा है..

पर वो जानता था की जग्गा को समझाना आसान नही है, उसने जो एक बार ठान ली, उसके बाद वो किसी की नही सुनता...

जावेद : "पर इससे मुझे क्या मिलेगा...मेरा क्या फायदा है तेरी हेल्प करने मे..."

उसके दिमाग में तो बस रूपा का नग्न बदन ही घूम रहा था...इसलिए जग्गा को नाराज़ करके वो रूपा से दूर नही होना चाहता था...

जग्गा ने अपनी जेब से वही तीन लाख रुपय निकाल कर उसके सामने रख दिए जो शेट्टी भाई ने दिए थे...और बोला : "इन दोनो के मरने के बाद तू अपनी गेंग अकेले चलाएगा..तेरा तो फायदा ही फायदा है..."

पैसे देखकर तो कुछ नही हुआ जावेद को..पर जग्गा की बात सुनकर एक दम से उसके अंदर डॉन वाली फीलिंग आ गयी...बात तो वो सही कह रहा था...पूरे शहर मे शेट्टी भाई के सारे धंधे वही देखता था...और उसके अलावा कोई और नही था जो उस धंधे को चला सके...अंसारी का धंदा तो काफ़ी बड़ा था, पूरी दुनिया मे फेला हुआ...पर कम से कम शेट्टी के धंधे को तो वो संभाल ही सकता है इस शहर मे रहकर...

जावेद : "और इसमे मैं तेरी मदद कैसे कर सकता हू...."

जग्गा के दिमाग़ मे एक योजना थी, जो उसने जावेद के सामने रख दी...उसने तो सोचा भी नही था की जग्गा जैसे भिखारी के दिमाग़ मे ऐसी ख़तरनाक योजना भी हो सकती है...और वो काफ़ी असरदार भी लग रही थी..जावेद तो उसकी योजना का कायल हो उठा..

फिर कुछ चीज़ो का इंतज़ाम करने की बात कहकर जग्गा वहाँ से वापिस आ गया...और जाते जाते जावेद ने वो पैसे भी जग्गा को वापिस कर दिए..और बोला की ये पैसे अपने पास रख,आगे तेरे ही काम आएँगे..

उसके जाते ही जावेद के दिमाग़ मे सतरंगी ख्वाब तैरने लगे...भाई बनने के..शेट्टी भाई के अंडर रहकर काफ़ी काम कर लिया...अब वो खुद का गेंग चलाएगा..

और फिर उसके दिमाग़ की सुई रूपा की तरफ चली गयी...इतने दिनों से जिसके उपर उसकी नज़र थी वो तो जग्गा की पत्नी थी ही नही...वो ऐसे ही जग्गा के डर से उसके पास नही जा रहा था...उसे वो सब बातें याद आ रही थी जब रूपा खुद उसके साथ वो सब करना चाहती थी जो करने के लिए वो मरा जा रहा था..यानी सहवास..पर किसी ना किसी कारण से कुछ हो ही नही पाया..

अब उसकी समझ मे आ रहा था की क्यों वो ऐसा कर रही थी...वरना किसी की बीबी कम से कम ऐसे खुलकर हर किसी के साथ नही शुरू हो जाती है...वो अपनी यादश्त खो चुकी है और इसलिए वो ये सब रीति रिवाज और मर्यादा नही जानती इस समाज के..

और जावेद को जैसे एक और मौका मिल गया अपनी दबी हुई इच्छा को पूरी करने का..और यही एक और वजह थी जिसके लिए जावेद भी इतना बड़ा रिस्क लेकर जग्गा की योजना मे शामिल हो गया था..

अब वो किसी भी हालत मे जग्गा की नज़र बचाकर रूपा के साथ मज़े लेना चाहता था..बाद मे तो जग्गा और रूपा पता नही कहाँ चले जाए..इसलिए वो ये काम पहले ही कर लेना चाहता था.

इधर जावेद ये सब ख्वाब बुन रहा था और उधर जग्गा ने अपनी योजना को अंजाम देना शुरू कर दिया..वो लतिका के घर गया ...और उसे सिर्फ़ ये कहकर की जैसा मैं कहूँ करती जा,फिर कुछ बातें समझाने के बाद और कुछ पैसे और एक फोन देने के बाद वो निकल आया..

वो अपने अगले काम के लिए जा ही रहा था की उसका फ़ोन बज उठा..वो अंसारी भाई का फोन था..

एक तरफ तो जग्गा उसे मारने की सोच रहा था..पर उसका फोन आते ही उसके पसीने निकल गये..क्योंकि इतनी जल्दी उसके फोन के आने की उम्मीद नहीं थी उसको..

जग्गा ने फोन उठाया : "जी भाई..."

अंसारी : "सुन जग्गा...मैने तुझे पहले ही बता दिया था की मेरे पास वक़्त कम है...अगर तूने ये काम ३ दिन मे नही किया तो तेरी खैर नही है...समझा..."

और इतना कहकर उसने फोन रख दिया..

उसके पास हथियार भी था और पैसा भी...पर वक़्त की कमी थी ..

अब उसे जो भी करना था,इन्ही ३ दिनों मे करना था.

# १६

रात को अपने झोपडे मे पहुँचकर जग्गा को नींद ही नही आई...वो हर एंगल से यही सोचने में लगा था की अगर ऐसा हो गया तो क्या होगा...वैसा हो गया तो क्या होगा..और सभी तरफ से सोचने के बाद जो कमी थी उसकी योजना में,वो उसको सुधारने मे लग गया..और ये सोचते सोचते कब उसको नींद आ गयी उसे भी पता नही चला..सुबह ९ बजे के आस पास रूपा ने उसको उठाया..वो नहा कर भी आ चुकी थी..

जग्गा ने जल्दी से नाश्ता किया और रूपा को घर पर ही रहने की हिदायत देकर वो बाहर निकल आया.

वो जावेद के घर गया और दोनो मिलकर वहां से निकल गये..अब समय था अपनी योजना को अंजाम देने का..

जग्गा ने सीधा अंसारी भाई को फोन मिलाया

जग्गा : "भाई...उस लड़की का पता चल गया है..."

इतना सुनते ही अंसारी खुशी से उछल पड़ा...उसे तो विश्वास ही नही हो पा रहा था की जिसे वो पिछले २ महीने से ढूंड रहा है, जग्गा ने उसे २ दिन मे ही ढूंड लिया..

अंसारी : "क्या बात कर रहा है जग्गा...तुझे पूरा विश्वास है ना की वो लड़की वही है...ऐश्वर्या..तूने सही से देखा है ना उसको.."

जग्गा : "हाँ भाई...मैने सही से देखा भी है...और आस पास वालो से पता भी करा लिया है..मेरी किस्मत अच्छी थी की आज मैने जिस मोहल्ले से छान बिन करनी शुरू करी, वहीं पर पहली बार मे ही वो दिख गयी..मैने उसका पीछा किया तो वो एक घर मे चली गयी..लोगों से पूछा तो उन्होने बताया की एक औरत रहती है उस घर मे और उसके सिर पर समाज सेवा का भूत सवार है..उसे ये लड़की एक दिन एक्सीडेंट की हालत मे मिली थी ..और वो उसे घर ले आई थी..."

अंसारी : "हाँ ...हाँ ...उस दिन आक्सिडेंट ही तो हुआ था..मैंने बताया था न तुझे , जब वो मेरे चुंगल से निकल भागी थी...यही है जग्गा....यही है वो लड़की....जल्दी बता कौनसा मोहल्ला है...पता बता मुझे...मैं अभी के अभी अपने आदमी भेजता हूँ .."

अंसारी का इतना उतावलापन देखकर जग्गा को अपनी योजना सफल होती नज़र आ रही थी..

उसने एकदम से ये कहते हुए फोन रख दिया : "भाई...पुलिस वाले है यहाँ ...मैं बाद मे फोन करता हू..."

और जग्गा ने जल्दी से फोन काट दिया और उसे स्विच ऑफ भी कर दिया..क्योंकि वो जानता था की अंसारी अब हर थोड़ी देर मे उसे फोन करता रहेगा..

उसके बाद जग्गा और जावेद शहर से थोड़ी दूर बने एक खंडहर की तरफ चल दिए...क्योंकि असली काम तो उन्हे वहीं करना था..

एक पुराना सा किला था ये...दिन के समय तो यहा युगल जोड़े घूमते रहते थे...चूमा चाटी , ठुकाई के लिए...पर रात को कोई नही आता था...बिल्कुल सुनसान सा हो जाता था वो किला रात के समय..

अभी तो दिन के १२ ही बजे थे ..इसलिए वहां कई जोड़े हर कोने मे दुबक कर एक दूसरे से मज़े लेने मे लगे थे.

वो पूरे किले मे घूमते रहे और आख़िर मे जाकर उन्होने एक शांत सी जगह देखी जो काफ़ी अंदर जाकर थी..और जो काम वो वहाँ करने वाले थे उसके लिए वो जगह बिल्कुल उपयुक्त भी थी..

सही जगह का चुनाव करने के बाद वो वहां से निकल आए.

अभी काफ़ी समय था उनके पास...किसी भी तरह उन्हे अंधेरा होने तक का वेट करना था..पर इससे पहले जग्गा को ठीक वैसी ही एक औरत का घर ढूँढना था जैसी औरत के बारे मे उसने अंसारी को जानकारी दी थी..

वो जावेद को समझा कर अपने काम के लिए निकल पड़ा..दो घंटे की मेहनत के बाद उसे पूछने पर एक औरत के बारे मे पता चल ही गया..जो समाज सेवा का काम करती थी..और बेसहारा लड़कियो की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थी.

वो उसके घर पहुँचा और दरवाजा खड़काया , वो करीब ४५ साल की सीधी साधी सी औरत थी, उसका नाम शकुंतला देवी था. जग्गा ने मनघड़ंत कहानी बनाकर बताई की वो एक भिखारी है और उसने एक घर मे कई लड़कियो को बंदी बने हुए देखा है..और वहां रहने वाला एक गुंडे किस्म का आदमी उनसे जिस्म्फरोशी का धंधा करवाता है...पूछने पर जग्गा ने बता दिया की किसी ने बताया था की आप ऐसी लड़कियो की मदद करती है इसलिए उसे ये सूचना देने के लिए चला आया..पुलिस भी उनके साथ मिली हुई है,इसलिए वो किसी समाजसेवक को ढूंढ रहा था,इसलिए उसके पास आया है

शकुंतला देवी को उसकी बातों पर विश्वास हो गया , और जग्गा से उसे वहां का पता माँगा

और जग्गा ने जो पता उसे बताया वो था शबाना खान का, क्योंकि जग्गा चाहता था की ऐसे समाज सेवको के डर से सही,शबाना को इस दलदल से निकालना जरुरी है, वरना अंसारी के बाद वो किसी और की रखैल बनकर अपनी जिंदगी गुजार देगी, और उसकी अदाकारी उसके साथ ही दम तोड़ देगी.

शबाना का घर काफी दूर था वहां से ...वहां जाकर आने मे ही रात हो जानी थी...जग्गा की बात सुनते ही उसने फॉरन अपने घर पर ताला लगाया और अपनी संस्था के लोगो को लेकर वहां से निकल पड़ी..

अब जग्गा ने फोन ऑन किया...और फोन चालू करते ही अंसारी भाई का फोन आ गया

अंसारी : "साले ...इतनी देर से फोन कर रहा हू...फोन क्यो बंद था तेरा..."

जग्गा : "भाई..वो पुलिस वाले थे...उनके सामने एक भिखारी फोन पर बात करता तो कैसा लगता...वो तो मुझे उठा कर ही ले जाते ना.."

अंसारी को उसकी बेवकूफी और नासमझी पर गुस्सा भी आ रहा था पर फिर ये सोचकर वो ज़्यादा बोला नही की एक भिखारी की अक्ल मे जो आया वही किया ना उसने...

अंसारी : "चल छोड़ ये सब...अब जल्दी से पता बता..मेरे सभी आदमी तैयार बैठे है.."

जग्गा ने उसे उसी समाजसेविका शकुंतला देवी का पता बता दिया, जहां वो थोड़ी देर पहले गया था ..

अब अगर अंसारी के आदमी वहां पहुँच भी जाते तो उन्हें वहाँ ताला ही मिलता.

जग्गा ने जावेद को फोन करके बोला की अभी तक सब कुछ उनके अनुसार ही चल रहा है....और फिर अगली बात जो जग्गा ने जावेद को कही वो सुनकर तो जावेद खुशी से उछल पड़ा

जग्गा : "अब ध्यान से सुन जावेद...कुछ भी गड़बड़ हुई तो वो लोग सबसे पहले मेरे घर पर ही जाएँगे..मुझे ढूँढने..तू एक काम कर, मेरे घर जा और रूपा को भी अपने साथ लेकर उसी किले मे पहुंच जहाँ हमने रात को मिलना है...समझा.."

जावेद ने कोई सवाल नही किया...ये भी नही बोला की रूपा को ले जाने मे तो काफ़ी ख़तरा है वहां ...उसे तो बस एक मौका चाहिए था उसके साथ अकेले मे...जो खुद जग्गा ने उसे दे दिया था.

अभी ५ बजे थे...और जग्गा की योजना के अनुसार वो खुद वहां ८ बजे पहुँचने वाला था..तीन घण्टे थे बीच में .. .जो जावेद के लिए बहुत थे..वो उसी वक़्त रूपा को लेने के लिए निकल पड़ा.

उधर १ घंटे मे ही अंसारी के आदमी उस एड्रेस पर पहुँच गये..और उन्हे वहां ताला मिला..आस पास पूछा पर किसी को भी कुछ पता नही था..उन्होने फ़ौरन अंसारी को फोन किया..और फिर अंसारी ने जग्गा को..और इस बार अंसारी का पारा पूरी तरह से चढ़ा हुआ था..

अंसारी (गुस्से मे) : "जग्गा....वहां तो ताला लगा है साले ...तूने तो कहा था की वो औरत वहीं पर है..."

जग्गा : "भाई...वो वहीं थी...मेरी उसके साथ बात भी हुई है...और उसका नंबर भी लिया है मैने...आप चाहो तो उससे बात करके पूछ लो...वो लड़की ऐश्वर्या उसके पास ही है...पर शायद उसे शक हो गया है..मैने शायद जिस तरीके से पूछा था उस लड़की के बारे मे, वो समझ चुकी है की हमारा इरादा क्या है..और शायद इसलिए वो घर छोड़कर निकल गयी है..."

अंसारी : "साले ...तुझे सिर्फ पता करने के लिए कहा था,अंदर जाकर जासूसी करने को नही ...तूने इतनी पूछताछ करी ही क्यों वहां जाकर...उसे बेकार का शक़ भी हो गया...अब पता नही कहां गयी होगी वो...चल तू मुझे उसका नंबर भेज जल्दी से...मैं बात करके देखता हू.."

जग्गा ने उसे लतिका का नंबर भेज दिया...और वो पहले से ही लतिका को समझा कर आ चुका था कल की कोई भी फोन आए तो उसे क्या बोलना है..

अंसारी ने फ़ौरन लतिका को फोन मिलाया

लतिका : "कौन बोल रहा है..."

अंसारी : "ये तुझे जानने की कोई ज़रूरत नही है...तेरे पास जो वो लड़की है...मुझे वो चाहिए...ऐश्वर्या .."

लतिका : "ओहो....तो वो तुम हो जो उसके पीछे पड़े हो....मुझे तो पहले से ही शक़ हो गया था ,इसलिए मैं वहां से निकल आई..."

अंसारी : "इतना दिमाग़ चलता है तो ये भी बता तो की कितनी रकम सोचकर तू वहां से निकली है...बोल , कितना चाहिए तुझे.."

लतिका : "अब आए ना रास्ते पर....ठीक है....तुम बीस लाख रुपय तैयार रखो...मैं उस भिखारी को फोन करके बता दूँगी की कहाँ आना है..."

और इतना कहकर लतिका ने फोन रख दिया..

अंसारी के लिए २० लाख कोई बड़ी रकम नही थी...इसलिए वो खुशी से झूम उठा..क्योंकि उसकी इच्छा जो पूरी होने वाली थी...उसने उसी वक़्त जग्गा को फोन मिलाया..

लतिका :"जग्गा..तूने जैसा कहा ,मैने कह दिया...पर ये मामला क्या है...किस लड़की की बात कर रहे है वो..कौन था वो आदमी..जो इतने पैसे देने के लिए तैयार हो गया..."

जग्गा : "तू अपना दिमाग़ ज़्यादा मत चला...बस अब तेरा काम ख़त्म...अगर मुझे पैसे मिल गये तो तेरे भी २ लाख पक्के...और अब इस फोन मे से सिम को निकाल कर फेंक दे...मैं तुझे जल्दी ही मिलूँगा.."

२ लाख की बात सुनकर लतिका भी खुश हो गयी...सिर्फ़ इतने से काम के अगर इतने पैसे मिल रहे हैं तो उसे क्या प्राब्लम हो सकती है...उसने जल्दी से वो सिम निकाल कर फेंक दिया..

फिर जग्गा ने देखा की उसके फोन पर ४ मिस कॉल्स थी,अंसारी की...उसने अंसारी को फोन किया

अंसारी : "जग्गा...तूने सही कहा था...ये वही लड़की है...और वो औरत भी बड़ी चालाक निकली, २० लाख माँग रही है...मैने भी बोल दिया की दे दूँगा...वो अब तुझे कॉन्टेक्ट करेगी...समझा.."

जग्गा उसकी बात सुनता रहा...योजना तो उसके अनुसार ही चल रही थी...और अंसारी बेवजह ही खुश होकर उसे वो सब बता रहा था...

जग्गा : "ठीक है भाई...मैं उससे बात करके अभी आपको बताता हूँ .."

और उसने फोन रख दिया...

और फिर १० मिनट के बाद दोबारा अंसारी को फोन किया

जग्गा : "भाई...मेरी बात हो गयी है उस औरत से...हमे आज रात को ८ बजे बुलाया है...पैसो के साथ...बिना किसी सुरक्षा के...सिर्फ़ हम दोनों को..."

अंसारी : "ओके , पर...कहाँ पर..."

जग्गा : "वो उसने अभी बताया नही...बड़ी शातिर औरत लग रही है...थोड़ी देर मे फोन करके

बताएगी..."

अंसारी : "तो तू एक काम कर...मेरे अड्डे पर आ जा..यहीं से दोनो निकल चलेंगे एक साथ...वैसे भी मेरे सारे आदमी उस औरत के घर की तरफ ही गये है...उन्हे मैं वहीं रुके रहने को बोल देता हू...अगर वो वापिस वहीँ आई तो उसे पकड़ कर ले आएँगे...वरना हमारे पास तो आ ही रही है वो .."

जग्गा के लिए इतना बहुत था...यही तो वो चाहता था...वो उसी वक़्त अंसारी भाई के घर की तरफ निकल पड़ा...

अब तक अंधेरा होने लगा था...और जावेद भी रूपा को अपनी जीप मे लेकर उस किले मे पहुँच चुका था...

रूपा : "तुम बता क्यो नही रहे की बात क्या है.....और ये कहां ले आए तुम मुझे...यहां तो काफ़ी अंधेरा है ...और कोई है भी नही..."

जावेद : "अरे भाभी जी...अप चिंता क्यो कर रही हो...मैने कहा ना,जग्गा ने ही कहा है आपको यहां लाने के लिए...आप चलिए,उसने आपके लिए एक सर्प्राइज़ रखा है यहां पर..."

और इतना कहकर उसने रूपा की कमर मे हाथ रखा और उसे अंदर की तरफ ले गया...उसने साड़ी पहनी हुई थी...और जावेद के कड़क हाथ अपनी नग्न कमर पर लगते ही उसका शरीर काँप उठा...जावेद ने पहले भी कई बार उसके करीब आने की कोशिश की थी...और रूपा ने उसके लिंग को भी पकड़ा था एक बार...और वही सब एकदम से उसे याद आने लगा...मौसम भी नशीला सा हो रहा था...अंधेरा भी था...और उसकी योनी तो वैसे भी हर वक़्त कसकती रहती थी...इसलिए उसका हाथ लगते ही उसे अंदर से कुछ कुछ होने लगा...

जग्गा ने भी वो कंपन महसूस किया, जो रूपा के जिस्म से निकला था...अभी सिर्फ़ ६ बजे थे...पूरे २ घंटे थे उसके पास....इस कंपन को एक भूचाल बनाने के लिए...

जावेद ने रूपा की कमर पर रखे हाथ को इधर उधर फिराना शुरू कर दिया...उसकी इस हरकत से रूपा गर्म होती जा रही थी..और ये बात जावेद को भी पता थी...क्योंकि अब तक जावेद भी समझ चुका था की रूपा सहवास के लिए पागल है और वैसे भी जग्गा के मुँह से ये बात जानकार की वो अपनी यादश्त खो चुकी है और वो किसके साथ क्या करती है ये उसे भी नही पता..

अंधेरा तो हो ही चुका था इसलिए कुछ दिखाई नही दे रहा था..रूपा ने अपना हाथ बढ़ाकर जावेद का हाथ पकड़ना चाहा पर बीच मे उसके लिंग वाले हिस्से का उभार टकरा गया ...और उसे ऐसा लगा की उसका हाथ जल उठा है..

रूपा ने तड़पति हुई निगाहों से जावेद की तरफ देखा...पर वो सीधा चलता रहा ... वो अच्छी तरह जानता था की अभी उसके पास २ घंटे हैं...और इन २ घंटो मे वो रूपा को तड़पा तड़पा कर गर्म कर देना चाहता था...और बाद मे जमकर उसे पेलना चाहता था..ताकि इतने दिनों से उसके अंदर जो भड़ास है वो निकल जाए..

वो रूपा को अनदेखा सा करता हुआ आगे चलता रहा...आख़िर मे थोड़ी सी सीडियां चढ़कर जावेद और रूपा उस जगह पर पहुँच गये जो दिन के समय जग्गा और जावेद ने निर्धारित की थी..वो बिल्कुल किले की एंट्री के उपर वाला हिस्सा था...जहाँ खड़े होकर पूरा शहर दिखाई दे रहा था...हल्की ठंडक में पूरे शहर की लाइट्स जल रही थी...दीवाली जो थी कुछ दिनों बाद...इसलिए पूरा शहर जगमगा रहा था.

एक पल के लिए तो रूपा भी शहर की जगमगाहट देखकर सब कुछ भूल सी गयी..वो एक बड़ा सा झरोखा था..जहाँ खड़े होकर वो बाहर का नज़ारा देख रहे थे..आगे की दीवार ४ फुट उँची थी..इसलिए रूपा के मोटे स्तन पथरीली दीवार से चिपक गये थे..और पीछे से जग्गा अपना खड़ा हुआ लिंग उसकी नितंब पर रगड़ कर उसे उत्तेजित कर रहा था..जैसे ही रूपा को पीछे से 'कुछ' महसूस हुआ, वो एकदम से सहम सी गयी...उसके रौंये खड़े हो गये और उसके स्तनाग्र बड़े होकर पथरीली दीवार से रगड़ खाने लगे..उसकी साडी का सिल्की आँचल फिसल कर नीचे गिर गया और अब उसके बूब्स और दीवार के बीच सिर्फ़ एक ब्लाउस था..क्योंकि ब्रा तो उसने आज पहनी ही नही थी..

जावेद ने उसके कान के पास गरम साँसे छोड़ते हुए कहा : "भाभी...आप बहुत सुंदर हो...सच मे..."

और उसने उसके पेट पर हाथ रखकर उसकी नाभि के अंदर अपनी उंगली डाल दी...

"अहह ..... सस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स ..... उम्म्म्मममममममम .."

अब रूपा की बर्दाश्त से बाहर था सब...वो पलटकर जावेद से लिपटना चाहती थी और उसके होंठों को चूसना चाहती थी..पर जावेद ने उसे दीवार से दबा कर रखा हुआ था, उसने रूपा को पलटने ही नही दिया...पीछे से मिल रहे दबाव की वजह से रूपा के दोनो स्तन ब्लाउस से निकल कर उपर की तरफ आ चुके थे...और सिर्फ़ स्तनाग्र को छोड़कर उसके दोनो स्तन पूरी तरह से बाहर थे..और पीछे खड़े हुए जावेद को वो साफ दिख रहे थे...जावेद ने अपने हाथ उपर किए और नीचे की तरफ से थोड़ा और ज़ोर लगाकर उसके स्तनों को उपर की तरफ धक्का दिया...और अगले ही पल, रूपा के ब्लाउस के उपर के दोनो हुक खुल गये और किसी ज्वालामुखी की तरह उसके दोनो स्तन बाहर की तरफ उबल कर निकल आए...

उसके लंबे और कठोर स्तनाग्र पथरीली दीवार से घिसकर बुरी तरह से पिस गये...और ठंडे पत्थर से मिल रही थरथराहट को महसूस करते हुए रूपा ने का शरीर झनझना उठा..और उसने खुद ही अपने हाथ उपर करते हुए अपने दोनो स्तन पकड़े और उन्हे पूरी तरह से अपने ब्लाउस

से बाहर निकाल कर जावेद की नग्न आँखो के सामने परोस दिया..

पर जावेद तो उसे पूरी तरह से गर्म कर देना चाहता था...वो अभी भी उसके स्तनों को हाथ नही लगा रा था...और रूपा की हालत ये थी की वो बार बार पलटने के लिए ज़ोर लगती ताकि वो जावेद से लिपट सके...उससे अपने स्तन चुसवा सके...पर जब वो नही हो सका तो उसके हाथों को पकड़ कर वो उपर की तरफ ले जाने लगी...ताकि उसके कठोर स्तनों में जो मीठा दर्द हो रहा है , जावेद उन्हे दबाकर वो दर्द मिटा सके..पर जावेद ने अपने हाथ वहीं उसके पेट पर जाम से कर दिए थे...फिर रूपा ने कोशिश की उसके हाथों को नीचे अपनी योनी की तरफ ले जाने की..पर इस बार भी जावेद ने अपने हाथों को नही हिलने दिया...अब भला एक ताकतवर मर्द के सामने उसकी क्या चलती...

फिर रूपा ने अपनी गोल मटोल नितंब को उसके लिंग के उपर घुमाना शुरू कर दिया...उसकी नितंब में से जैसे आग के भभके निकल रहे थे...शायद उसकी योनी की गर्मी ही थी जो पीछे तक जावेद को महसूस हो रही थी...और उसी गर्मी की आँच मे तपकर उसके लिंग का सोना पिघलने सा लग गया...और उसके हाथों की पकड़ ढीली पड़ गयी...और रूपा ने बिना कोई देरी किए उसके हाथों को पकड़ा और अपने कठोर हो चुके स्तनों पर रखकर उपर से ज़ोर से दबाव डालकर उन्हे दबा दिया...

"अहह ..... उम्म्म्मममममममम.... दबाआआाआ इन्हे ..... ज़ोर से..... अहह...."

औरत मर्द के सामने कितनी भी कमजोर हो, पर अपनी काम वासना से वो अच्छे - अच्छो को पछाड़ सकती है

जावेद भी उसके सामने टिका नहीं रह सका और वो समझ गया की ये पूरी तरह से गर्म हो चुकी है...

औरत को पूरी तरह से गर्म करके ठुकाई करने के दो फायदे होते है ... एक तो वो पागलों की तरह ठुकाई करवाती है...वाइल्ड तरीके से...और दूसरा की वो लगातार कई बार झड़ सकती है...एक तो बिल्कुल शुरूवात मे ही, क्योंकि वो पूरी तरह से गर्म होगी ...और बाद में अंत तक ,जब तक उसका पार्टनर उसे पेलता रहेगा ..और एक ही बार मे अनेक ठुकाई का मज़ा किसे नही पसंद आएगा...

और ये काम जावेद ने कई बार किया था...इसलिए वो औरतों की ये कमज़ोरी अच्छी तरह से जानता था...

अब तो सिर्फ़ देरी थी उसे खुला छोड़ने की...ताकि वो आराम से उसकी ठुकाई कर सके..और उसने अगले ही पल रूपा को अपने चुंगल से आज़ाद कर दिया...और वो किसी बावली कुतिया की तरह से पलटी और उछल कर उसकी गोद मे चड गयी..उसके गले मे अपनी बाहें डाली...अपनी छातियों को जावेद के सीने से लगाया और अपने होंठों से जावेद के होंठ दबोच

कर जोर जोर से सक्क करने लगी...ऐसे जैसे कोई शैतान अपने शिकार का खून चूसता है..

जावेद तो उसके शरीर की गर्मी देखकर मस्त ही हो गया..उसने अपने हाथ नीचे करते हुए उसके ब्लाउस के बचे हुए बटन खोले और जैसे ही उसके दोनो कबूतर आज़ाद हुए उसने नीचे मुँह करके उन्हे अपने दांतो मे दबोच लिया और जोर जोर से चूसने लगा..

रूपा की चीख पूरे सुनसान किले मे गूँज गयी..

"अहह ..आआआआआआआआआआआआअहह ..... ओह.... ज़ोर से काटो इन्हे.....चूसो मत.....दाँत से काट ओ..... अहह ....उम्म्म्मममममम"

और रूपा ने जावेद के सिर को अपनी छाती मे दबोच कर उसके कानों को अपने मुँह मे भरा और चूसना शुरू कर दिया..

रूपा की इस हरकत से जावेद का लिंग पैंट फाड़कर बाहर निकलने को अमादा हो गया...उसने रूपा को नीचे उतारा और अपनी जींस की चैन खोलने लगा...रूपा ने झपटकर उसके हाथ पीछे किए और खुद उसकी जीप खोली...उसकी पैंट को नीचे खिसकाया और एक ही झटके मे उसके लंबे लिंग को बाहर निकाल कर अपने मुँह मे डाल लिया....और जोर जोर से चूसने लगी..

जावेद ने उसके सिर पर हाथ रखकर अपनी आँखे बंद कर ली....उसके दाँतो से बचने के लिए वो उसे धीरे चूसने को कह रहा था..पर रूपा पर तो जैसे आज कोई प्यासी चुड़ैल सवार थी....वो उसके हर अंग को चूसकर सारा रस निकाल लेना चाहती थी.

"ओह .....नहाआआआ .....थोड़ा धीरे .....अहह..... अह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह ....."

५ मिनट तक वो उसका लिंग चूसती रही....और अपने हाथ से अपनी योनी के उपर भी मालिश करती रही...

जावेद भी उसकी रसीली योनी को चूसना चाहता था....उसने रूपा को रोका और उसे उपर उठाया...और उसकी कमर मे हाथ रखकर उसे उसी झरोखे मे बिठा दिया, जहाँ से वो बाहर का नज़ारा देख रहे थे...रूपा एकदम से डर गयी...क्योंकि झरोखे के पीछे की तरफ काफ़ी गहराई थी...अगर वो नीचे गिरती तो सीधा गेट की एंट्री के पास जाकर गिरती...

पर जावेद ने उसकी टाँगो को अपनी कमर से लपेट लिया और उसकी साड़ी को धीरे धीरे उपर करना शुरू किया...रूपा ने भी अपनी नितंब उचका कर साड़ी और पेटीकोट को अपनी नितंब के नीचे दबा लिया...और अब जावेद के सामने थी एक दम सफाचट योनी ...जिसमें से पानी

रिस-रिसकर बाहर निकल रहा था...और नीचे के पत्थर को भी भिगो रहा था.

जावेद ने अपना मुँह सीधा उसकी योनी पर लगाया और अपनी जीभ निकाल कर उसे लंबा करके चाटा ...

"अहह ..... ओह ...मार गाइईईईईईईईईईईईईईई ..... उम्म्म्मममम"

रूपा ने जावेद के सिर को अपनी योनी पर ज़ोर से दबा कर और चाटने के लिए कहा...रूपा को तो ऐसा लग रहा था मानो वो हवा मे उड़ रही है...ऐसा एहसास उसने आज तक नही किया था.

और उसी एहसास मे उड़ते उड़ते कब वो झड़ गयी उसे भी पता नही चला...

और झड़ने के बाद वो निढाल सी होकर जावेद के कंधे पर झूल गयी...जावेद ने भी अपने होंठों पर जमी उसकी योनी की मलाई को साफ किया और उसे नीचे उतारा...झड़ने के बाद उसका शरीर नम सा हो चुका था...उसे दोबारा गर्म करने की ज़रूरत थी...उसने रूपा को नीचे मिट्टी पर ही लिटा दिया...और उसके उपर लेटकर अपने लिंग को सीधा उसकी योनी में पेल दिया..

"अहह. ..... उम्म्म्मममममममममममम।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।
मममममममम"

ये दूसरी चीख थी...जो उसके मुँह से निकली थी.....अपनी टाँगो को रूपा ने जावेद की कमर मे लपेट दिया...और उसके गले मे बाहें डालकर उसे अपनी तरफ खींचा और ज़ोर से स्मूच करती हुई अपनी कमर हिलाने लगी..

रूपा की नर्म योनी में जाकर जावेद के लिंग में जैसे आग सी लग गयी...वो जोर जोर से धक्के देते हुए उसकी योनी मारने लगा....अपने मुँह में उसने उसके स्तनाग्र को भरा और उसका दूध भी पिया...ऐसे ठुकाई करते हुए स्तनाग्र को मुँह मे लेने से उसके लिंग की स्पीड थोड़ी कम हुई तो रूपा ने खुद ही उसके सिर को पीछे करते हुए अपने स्तनाग्र निकलवाए ताकि वो खुलकर ठुकाई कर सके ...

अब जावेद ने उसकी दोनो टाँगो को हवा मे पकड़ा और जोर जोर से धक्के लगाने लगा...और वो लगभग २० मिनट तक ऐसे ही धक्के मारता रहा...जैसे ही उसका निकलने वाला होता तो वो रुक जाता और फिर से धक्के मारता....

ऐसा करके वो अपना झड़ना तो रोक लेता,पर रूपा हर बार झड़ जाती , उसे भी पता नही चला की वो कितनी बार झड़ी

और अंत मे जब जावेद से और रोका नही गया तो वो नीचे झुक गया और रूपा के होंठों को

अपने मुँह मे दबोच कर अपना सारा का सारा रस उसकी योनी में ही निकाल दिया...

"अहह ,.,.,.....ये ले साली.....इतने दिनों तक जो तूने तड़पाया है...उसका इनाम है ये....."

और उसके उपर से लुढ़क कर वो नीचे उसकी बगल में ही गिर गया..

और गहरी साँसे लेने लगा.

तभी उसका मोबाइल बज उठा...वो जावेद का फोन था.

उसने टाइम देखा... ७:३० हो रहे थे.... यानी पिछले डेढ़ घंटे से वो रूपा की ठुकाई कर रहा था.

उसने फोन उठाया

जग्गा : "हम निकल रहे हैं.....बस अंसारी भाई आ ही रहे हैं बाहर...तू तैयार रहना.."

इतना कहकर ही उसने फोन रख दिया.

जावेद ने रूपा को जल्दी से अपने कपड़े ठीक करने के लिए कहा...क्योंकि अब उनके पास ज़्यादा वक़्त नही था..

पर वो तो अपनी ही मस्ती मे डूबी पड़ी थी....जैसे कोई सुहाना सपना देख रही हो..उसकी आँखो की खुमारी अभी तक नही उतरी थी...

जावेद ने उसे उपर से नीचे तक देखा...काम की मूरत लग रही थी वो ....आधी नग्न ज़मीन पर लेटी हुई ... उसके दोनों स्तन उपर की तरफ मुँह करके जैसे अभी भी उसे बुला रहे थे..

मन तो जावेद का भी नही भरा था..पर अभी कुछ और करने का टाइम नही था..

उसने जल्दी से रूपा को अपनी बाहों मे उठाया..और उसे लेकर एक कोने मे चला गया..जहाँ से नीचे का मैन गेट भी दिख रहा था..और वो छुपकर भी बैठे हुए थे..

जावेद ने रूपा को एक चट्टान पर बिठा दिया..और उसके कपड़े झाड़कर साफ़ करने लगा..उसके ब्लाउस के बटन सही से लगाए..उसके स्तनों को बड़ी मुश्किल से वापिस अंदर ठूसा ...और फिर उसकी साड़ी को सही ढंग से उसके शरीर पर लपेटा..

रूपा बस बुत सी बनकर उसे निहार रही थी...और फिर अचानक वो किसी बिल्ली की तरह जावेद पर झपट पड़ी और उसे जोर जोर से स्मूच करने लगी.

जावेद भी सोचने लगा की कितनी गरम औरत है ये....अभी अभी कई बार झड़ी है पर फिर भी ठुकाई का ख़याल आ रहा है...वो तो नही जानती थी की आगे क्या होने वाला है...पर जावेद आने वाले ख़तरे को अच्छी तरह से जानता था.

जैसा की उसने और जग्गा ने प्लान बनाया था की वो किसी भी तरह अंसारी को अकेले उस जगह पर लाएँगे..और फिर दोनों मिलकर उसे वहीं गोली मार देंगे...और अभी तक सब कुछ प्लान के हिसाब से ही चल रहा था.

जावेद ने बड़ी मुश्किल से रूपा को शांत करवाया...क्योंकि उसे दूर से अंसारी की गाड़ी आती हुई दिख गयी थी...जग्गा और अंसारी नीचे उतरे और अंदर की तरफ आ गये...थोड़ी सी सीडियां चड़ने के बाद वो उपर के हिस्से में आ गये जहाँ जावेद पहले से छुप कर बैठा था...उसने अपनी जेब से अपनी गन निकाल ली..एक गन तो पहले से ही जग्गा के पास थी...बस अब अंसारी को ठोकने की देर थी.

उपर आते ही अंसारी बोला : "ये कैसी जगह है जग्गा...और कहाँ है वो औरत...जो ऐश्वर्या को लाने वाली थी.."

अंसारी के हाथ मे एक ब्रीफ़कसे भी था...शायद वो उसमे २० लाख रूपए लेकर आया था.

जग्गा थोड़ी देर तक चुप रहा और बोला : "अभी बुलाता हूँ .."

और उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई : "बाहर आ जाओ...मेहमान आ गया है..."

जावेद ने रूपा को वहीं छिपे रहने के लिए कहा....और अपनी गन लोड करता हुआ बाहर निकल आया.

जावेद को देखते ही अंसारी चोंक गया : "जावेद.....तू .....तू यहाँ क्या कर रहा है.... ??"

जावेद ने अपनी गन उसकी तरफ तान दी...और बोला : "तेरा इंतजार...."

और उसी पल जग्गा ने भी अपनी गन निकाल ली और अंसारी के हाथ से उसका ब्रीफ़सेस छीनकर और गन को उसकी तरफ तानता हुआ वो भी जावेद के साथ आकर खड़ा हो गया..

अंसारी ने दोनों के हाथ मे चमक रही गन को देखा और घबरा गया....पर अगले ही पल वो जोर जोर से ठहाका लगाकर हँसने लगा...

जग्गा और जावेद एक दूसरे को प्रश्न भरी नज़रों से देखने लगे..

अंसारी : "सालों ....मेरी ही आस्तीन मे रहकर मुझे ही काटने चले हो...अंसारी नाम है मेरा...अंसारी...मुझे मारना तुम जैसे चूहों का काम नहीं है..."

और अगले ही पल पता नही कहाँ से दो फायर हुए और दोनो की गन उनके हाथ से छिटककर दूर जा गिरी...

जग्गा तो ठीक था पर जावेद का हाथ बुरी तरह से ज़ख्मी हो गया और उसके हाथ से काफ़ी खून भी निकल रहा था.

उन्होने गोली चलने वाली दिशा की तरफ देखा तो वहाँ से शेट्टी अपने ५ आदमियो के साथ आता हुआ दिखाई दिया..

शेट्टी : "हरामजादो ..... जिसका नमक खाया उसके साथ गद्दारी कर रहे हो..."

और इतना कहकर उसने फिर से वो गन उनकी तरफ तान दी...उन्हे जान से मारने के लिए..

अंसारी चीखा : "नही शेट्टी .... ऐसे नही मारना इन कुत्तों को .... ऐसे नही ... इन्होने तुझे ही नही अंसारी को भी धोखा दिया है.... मुझे तो आज सुबह ही इनपर शक हो गया था, इसलिए तुझे मेरे पहुँचने के दस मिनट बाद आने को कहा था, मुझे आज तक पूरी दुनिया की पुलिस छू भी नही सकी और तुम दोनो मुझे मारने चले थे... बोल ...ऐसा क्यों किया ....बोल, नही तो तेरी खाल खींचकर बाहर निकाल दूँगा...और दोनो को तड़पा तड़पा कर माऱूँगा...मेरा काम तो किया नही, उपर से मुझे ही मारने चले हो ..."

पर दोनों में से कोई नही बोला....शेट्टी ने अपने साथ आए आदमियों को इशारा किया और वो सब एक साथ जग्गा और जावेद पर टूट पड़े...लाते-घूँसे खा-खाकर दोनो लहू लुहान से हो गये..

तभी रूपा चीखती हुई बाहर आई : "छोड़ दो इन्हे ..... मैं कहती हूँ छोड़ दो ...."

और वो भागती हुई आई और जग्गा से लिपट गयी..

उसे देखते ही अंसारी और शेट्टी की आँखे फटी रह गयी

अंसारी : "ऐश्वर्या ..... ये यहाँ कैसे ....यानी इस कुत्ते को ये सच में मिल गयी थी....पर ये इसके लिए मुझसे क्यो दुश्मनी ले रहा था...."

तब तक रूपा यानी ऐश्वर्या ने लहू लुहान जग्गा को उपर उठाया और शेट्टी के गुण्डो के सामने हाथ जोड़कर बोली : "भगवान के लिए इन्हे छोड़ दो ...मेरे पति को मत मारो ..."

अंसारी और शेट्टी उसकी बात सुनकर एक बार फिर से चोंक गये...और उपर से ये देखकर भी की ऐश्वर्या उन्हे क्यो नही पहचान पा रही है ...

नेहल : "क्या बोली तू ...तेरा पति ....ये जग्गा ... ये साला भिखारी ...साली हमें भूल गयी और इसे अपना पति बोल रही है ..."

रूपा सुबकति हुई सी बोली : "हाँ ....ये मेरे पति है ..... इन्हे छोड़ दो प्लीज़ ....मुझे नही पता की आप लोग कौन है ...पर ये मेरे पति है...इन्हे छोड़ दो...."

दोनो अपना सिर खुजलाने लगे...उनकी समझ मे नही आ रहा था की जिस लड़की को ढूँढने के लिए उन्होने २ दिन पहले ही जग्गा को बोला है, वो कैसे उसे अपना पति बोल रही है...

अंसारी ने अपने आदमी के हाथ से गन ली और सीधा लेजाकर जग्गा के सिर पर लगा दी : "बोल साले .... ये क्या कह रही है .....तुझे अपना पति क्यों बोल रही है ये....बोल ...नही तो मैं तेरा भेजा उड़ा दूँगा ..."

जग्गा कुछ नही बोला

अंसारी ने एकदम से वो गन रूपा की कनपटी पर लगा दी तो जग्गा एकदम से चिल्ला उठा : "नही ....इसे कुछ मत कहो.....इसे कुछ नही पता ...."

और फिर जग्गा ने उस दिन से लेकर अभी तक की सारी कहानी उनके सामने रख दी...

अंसारी का तो खून खोल उठा सब कुछ सुनकर

अंसारी : "भेन के टके.....तो उस दिन तू था वहाँ रोड पर...जिसने मुझे मारा था...और तेरी ही वजह से ये मेरे हाथों से निकल गयी थी..."

और इतना कहते ही उसने एक जोरदार लात जग्गा के पेट मे मारी...और वो दर्द से दोहरा होकर ज़मीन पर लेट गया..

जावेद तो पहले से ज़मीन पर पड़ा हुआ अपने घाव गिन रहा था.

अंसारी : "साले ...तूने मुझे कितना बड़ा जख्म दिया है...तुझे तो पता भी नही है...तेरी वजह

से मेरा बदला उस दिन अधूरा रह गया था...पर आज वो तेरे सामने ही पूरा करूँगा मैं ..."

जावेद बीच मे बोला : "बदला .....किस बात का बदला ...."

उसकी भी समझ मे कुछ नही आ रहा था की अंसारी किस बदले के बारे मे बात कर रहे हैं..

वो कुछ बोल पाता , इससे पहले ही जग्गा बोल पड़ा : "बदला ....अंसारी की बेइज्ज्ती का....जो इसे लेना था , इसके बाप हेमराज पुजारी से....वही हेमराज पुजारी, जो कुछ साल पहले तक अंडरवर्ल्ड का राजा था...और जिसके तलवे चाटकार ये अंसारी बड़ा हुआ था ....पर वो अंसारी को एक नौकर की तरह रखता था, इसलिए वो अपने आपको बेइज्जत महसूस करता था,वही हेमराज पुजारी, जिसने अपने परिवार के कहने पर सारे बुरे काम छोड़ दिए थे...सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी बेटी की खातिर...और यही बात इस अंसारी को चुभ गयी...हेमराज पुजारीने अपनी कुर्सी तो इसे दे दी...पर अंसारी को हमेशा यही डर लगा रहता था की कहीं हेमराज पुजारी पुलिस को अंसारी और अपने सारे नेटवर्क के बारे में ना बता दे...इसलिए इसने और शेट्टी ने एक चाल चली...एक इंटरनेशनल गैंग की मदद से हेमराज पुजारी की लड़की ऐश्वर्या को किडनॅप करवाकर दुबई पहुँचा दिया...और वहाँ से अंसारी ने इसे मुँह माँगी कीमत पर खरीद लिया..ताकि हेमराज पुजारी की बेटी को वो पूरी जिंदगी अपनी रखेल बनकर अपने पास रखे, अपनी नौकर वाली जिंदगी का बदला ले सके और वक़्त आने पर इसका इस्तेमाल करके हेमराज पुजारी को डरा सके...ताकि वो इन काले धंधो के बारे मे पुलिस को या किसी और को ना बताए..."

जग्गा ने एक ही साँस मे वो सब ऐसे बोल दिया जैसे वो सब उसके सामने हुआ हो...

और उसकी ये सब बाते सुनकर अंसारी और शेट्टी भी आश्चर्यचकित रह गये..

अंसारी ने गन फिर से उसके सिर पर लगा दी : "बोल कौन है तू .... पोलीस वाला है क्या... जासूस है कोई .... या फिर हेमराज पुजारी का आदमी है तू ...बोल साले ...तुझे ये सारी बातें कैसे पता ....किसने बताया तुझे ....."

धांए ....

एक फायर हुआ....और इस बार अंसारी का हाथ लहू लुहान हुआ ...और उसके हाथ से गन निकल कर नीचे गिर गयी..

और एक भारी भरकम आवाज़ आई : "मैने ..... मैने बताया इसे ये सब ...."

और अंधेरे मे से निकल कर एक लंबा चोडा आदमी सफेद लिबास मे सबके सामने आ गया...

शेट्टी ने उस तरफ देखा और चिल्लाया : "हेमराज पुजारी साहब ..... आप ..... "

हेमराज पुजारी: "हाँ ....मैं ....तुम्हारा बाप ...."

शेट्टी के एक आदमी ने अपनी पिस्टल उसकी तरफ घुमाई ही थी की उसका सिर उड़ा दिया हेमराज पुजारीने..और अगली चार गोलियाँ भी उसके बचे हुए आदमियों के सीने मे उतार दी...और वो भी पलक झपके ही..

हेमराज पुजारी: "तुम्हारी वजह से मैने आज एक बार फिर अपने हाथो मे ये हथियार उठाया है....मैने इन्हे छोड़ दिया था...पर इन्हे चलाना नही भूला था...आज तुम्हारे नापाक इरादो की वजह से एक बार फिर मेरे हाथ खून से रंग गये..."

उसके चेहरे पर इतना गुस्सा था की उसका चेहरा लाल सुर्ख हो चुका था.

अब बोलने की बारी जग्गा की थी : "मैने तो शबाना से पहले से ही ऐश्वर्या के परिवार के बारे मे पता चला लिया था...उसने ही इनका फोन नंबर भी दिया था मुझे ...और जब इन्हे फोन करके मैने वो सब बताया तो मुझे ये पूरी कहानी पता चली..."

फिर हेमराज पुजारीकी तरफ इशारा करके जग्गा बोला : "इन्होने तो अपने परिवार की खातिर ये सब छोड़ दिया था...अपना सब कुछ तुम लोगो को सौंप कर शांति भरी जिंदगी जी रहे थे...पर तुमने इनकी ही बेटी को अगवा करवाकर इन्हे फिर से जगा दिया...अपनी बेटी को पाने के लिए बुरी तरह से तड़प रहे थे ये...फिर मैने इन्हे सब बताया की इनकी बेटी मेरे पास सुरक्षित है...और तुम्हारे बारे में भी...इसलिए ये फ़ौरन चले आए..."

जग्गा ने ऐश्वर्या की तरफ इशारा करते हुए कहा : "हेमराज पुजारी साहब...ये रही आपकी बेटी..."

अपनी बेटी को देखकर एक पल के लिए तो हेमराज पुजारीकी आँखे ही भर आई...पर ऐश्वर्या तो अपने बाप को पहचान भी नही रही थी..

जग्गा : "पर , एक हादसे मे इसकी यादश्त चली गयी है..."

वो आगे कुछ बोलने ही वाला था की शेट्टी ने हेमराज पुजारीका ध्यान दूसरी तरफ भटकते देखकर पास ही पड़ा एक बड़ा सा पत्थर उसकी तरफ उछाल दिया, जो सीधा जाकर हेमराज पुजारीकी आँख मे लगा..और वो भी बिलबिलाता हुआ सा नीचे गिर गया..

और ये मौका पाकर अपने ज़ख्मी हाथ से अंसारी ने पास ही पड़ा एक पेड़ का मोटा सा तना उठाया और हेमराज पुजारीके सिर पर दे मारा...

अंधेरा था, इसलिए नीचे गिरी गन किसी को भी नज़र नही आ रही थी...

दो चार बार मारने के बाद हेमराज पुजारी वहीं ढेर हो गया...और फिर अंसारी जग्गा की तरफ पलटा : "साले .....अब तेरी बारी है...."

और इतना कहकर उसने ज़ख्मी जग्गा के सिर पर उतनी ही ताक़त से प्रहार किया...पर एकदम से रूपा बीच में आ गयी

"नहियीईईईईईईईईईईईई..... मत मारो मेरे पति को ..."

और इतना कहते हुए वो जग्गा के उपर गिर गयी...और अंसारी का वो वार सीधा रूपा यानी ऐश्वर्या के सिर पर पड़ा...और वो भी लहू लुहान सी होकर एक तरफ लुडक गयी..

रूपा के सिर से खून निकलता देखकर जग्गा तो जैसे पागल ही हो गया :
"रूपाआआआआआआअ ....."

और उसने अपनी सारी शक्ति समेट कर एक जोरदार मुक्का अंसारी के पेट मे जड़ दिया...वो वहीँ गिर पड़ा, शेट्टी भागता हुआ आया और उसने वो पेड़ का तना उठाने की कोशिश की तो जग्गा ने उसके चेहरे पर भी एक घूंसा मारकर उसे नीचे गिरा दिया..

और फिर उसने पास ही पड़ी एक बड़ी सी चट्टान उठाई और अपने दोनो हाथों मे उठा कर दोनो के सिर कुचलने के लिए आगे बड़ा ....दोनो चिल्ला उठे ...बचने के लिए अपनी जिंदगी की भीख माँगने लगे..पर जग्गा का दिल नही पसीजा...

वो उन दोनो के सिर कुचलने ही वाला था की हेमराज पुजारीकी आवाज़ आई : "नहियीईईईईई .....जग्गा ...."

एक पल के लिए जग्गा रुक गया

हेमराज पुजारी: "जग्गा...इन्हे मारकर अपने हाथ खून से मत रंगो..."

और इससे पहले की जग्गा कुछ बोल पाता ...हेमराज पुजारीकी दो गोलियों ने दोनो के सिर मे १-१ छेद कर दिया...

दोनों एक ही पल मे मौत की गोद मे पहुँच गये..

हेमराज पुजारीकी हालत भी काफ़ी खराब थी...रूपा के सिर से भी काफ़ी खून निकल रहा था...जावेद  एक तरफ पड़ा हुआ उठने की कोशिश कर रहा था...

सभी बुरी तरहा से ज़ख्मी थे...

जावेद ने अपना फोन निकाला और कल्लन और दूसरे साथियो को एम्बुलैंस के साथ किले मे जल्द से जल्द पहुँचने को कहा..

आधे घंटे मे ही सभी हॉस्पिटल मे थे...

# १७

अगली सुबह जग्गा , पट्टियों से बँधा हुआ सा...लंगड़ाता हुआ, रूपा के कमरे मे पहुँचा...जहाँ पहले से ही हेमराज पुजारी उसके सिरहाने बैठा हुआ उससे बातें कर रहा था.

रूपा को सही सलामत और बातें करता देखकर जग्गा की खुशी का ठिकाना नही रहा..

जग्गा उसके पास पहुँचा और बोला : "कैसी हो रूपा...?"

रूपा ने उसकी तरफ देखा और बोली : "पापा ..... ये कौन है ....?"

एक ही पल मे जग्गा का दिल चूर चूर हो गया.

पीछे से डॉक्टर की आवाज़ आई : "जग्गा ....."

जग्गा ने पलटकर देखा तो ये वही डॉक्टर था, जिसने रूपा का पहले भी इलाज किया था...और जिसने कहा था की उसकी यादश्त चली गयी है..."

डॉक्टर : "जग्गा....अब इस लड़की की यादश्त आ गयी है.....शायद इसके सिर पर जो गहरी चोट लगी है कल , उसकी वजह से वो एक नस जो पिछली बार दब गयी थी, वो फिर से खुल गयी है....अब इसे पहले का सब कुछ याद है...."

जग्गा : "पर ....पर ये मुझे क्यों नही पहचान रही ..."

इस बार हेमराज पुजारी बोला : "वो शायद इसलिए की बीच मे जो कुछ भी इसके साथ हुआ, वो अब ये भूल गयी है...ये अपनी पिछली जिंदगी मे वापिस आ चुकी है जग्गा...पर इस बीच तुमने जो मेरी बेटी के लिए किया, उसका एहसान मैं जिंदगी भर नही चुका सकता....पर अपनी लाइफ मे तुम्हे कभी भी मेरी कोई भी ज़रूरत हो तो मेरे पास बेझिझक चले आना..."

अब जग्गा उसे क्या समझता की उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी ज़रूरत तो अब रूपा ही है...और इन ६ महीनो के बीच रूपा उसके लिए क्या बन चुकी है...

जिंदगी ने उसे जीने के लिए एक सहारा दिया था...पर एक बार फिर से वो उसी ख़ालीपन मे खड़ा था, जहाँ वो आज से ६ महीने पहले था...

उसकी आँखो मे आँसू आ गये...उसने एक आख़िरी बार रूपा के भोले से चेहरे को देखा...और लंगड़ाता हुआ बाहर निकल गया...

अपनी जिंदगी एक बार फिर से अकेले जीने के लिए.

जग्गा ने वो शहर हमेशा के लिए छोड़ दिया...जावेद ने शेट्टी भाई की जगह लेकर उस शहर में अपना गैंग चलाना शुरू कर दिया..

हेमराज पुजारी अपनी बेटी को लेकर वापिस अपने शहर निकल गया..और रूपा यानी ऐश्वर्या कभी ये भी नही जान सकी की उन ६ महीनो मे उसने कैसी जिंदगी जी ली थी..शायद जान जाती तो वो भी जग्गा का साथ कभी नही छोड़ती .

●◆■★ समाप्त ★■◆●